कुमारी तन्त्रम्

प्रदीप कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी

तन्त्र ग्रन्थमाला नं0 26

कुमारीतन्त्रम्

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक एवं अनुवादक

प्रदीप कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन

वाराणसी-221002

संस्करण-2011

प्रकाशक :

कुश राय

प्राच्य प्रकाशन

C 21/3-C (होटल हिन्दुस्तान इण्टरनेशनल कम्पाउण्ड)

मलदहिया, वाराणसी-221002 (भारत)

© प्रेमचन्द महताब राय शोध संस्थान

लमही, (पोस्ट-वाया सारनाथ)

वाराणसी-221007 (भारत)

मूल्य : 100/- रुपये

मुद्रक :

गौतम प्रिण्टर्स, जगतगंज, वाराणसी-2

सूचीपत्र

प्रथम पटल	1-4
मन्त्र-माहात्म्य-कथन, दक्षिणाकालिका का मन्त्र एवं उसके माहात्म्य का कथन	
द्वितीय पटल	5-12
कालिका-साधना में अङ्गन्यासादि, भूमिशोधन, मण्डल-रचना, आसनशुद्धि, पुष्पशुद्धि एवं कुमारी की मानस-पूजा-विधि	
तृतीय पटल	13-16
कालिका-यन्त्र एवं बाह्यपूजा-कथन	
चतुर्थ पटल	17-18
कालिका-पूजा के नैवेद्यादि उपचार एवं बलि-कथन	
पंचम पटल	19-22
पुरश्चरण-पद्धति एवं जप-विधि	
षष्ठ पटल	23-27
कुलाचार-कथन	
सप्तम पटल	28-31
कालिकादेवी के मन्त्र का माहात्म्य एवं पूजा-स्थान का निर्णय	
अष्टम पटल	32-36
आचार-निर्णय, कालिकादेवी की पूजा, ध्यान एवं साधनाविधि	
नवम पटल	37-40
कालीकल्प, श्मशान-कालिका के मन्त्रादि, साधन-प्रणाली एवं ग्रन्थ-समाप्ति	
परिशिष्ट	41-81
वर्ष भेदेन कुमारी भेद, कुमारी दानक्रम फल, कुमारी पूजा प्रयोग एवं ध्यान, कुमारी कवच, कुमारी स्तोत्र, कुमारी सहस्रनाम, कुमारी तर्पणात्मक स्तोत्र	

विष्णुर्वरिष्ठो देवानां ह्रदानामुदधिर्यथा ।
नदीनाञ्च यथा गङ्गा पर्वतानां हिमालयः ॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां राज्ञामिन्द्रो यथा वरः ।
देवीनाञ्च यथा दुर्गा वर्णानां ब्राह्मणो यथा ।
तथा समस्तशास्त्राणां तन्त्रशास्त्रमनुत्तमम् ॥

— मत्स्यसूक्ते

यद्गृहे निवसेत्तन्त्रं तत्र लक्ष्मीः स्थिरायते ।
राजद्वारे श्मशाने च सभायां रणमध्यतः ॥
निर्जने च जले घोरे श्वापदैः परिभूषिते ।
माहात्म्यात्तस्य देवेशि चमत्कारी भवेत् प्रिये ॥

— बृहन्नीलतन्त्रे

अन्यान्यशास्त्रेषु विनोदमात्रं, न तेषु किञ्चिद्भुवि दृष्टमस्ति ।
चिकित्सितज्योतिषतन्त्रवादाः, पदे पदे प्रत्ययमावहन्ति ॥

पूज्यपाद

माता जी

के

श्रीचरणों

में

सादर समर्पित

कुमारीतन्त्रम्

प्रथमः पटलः

मन्त्रमाहात्म्य-कथनम्

ॐ नमः शिवाय !

कैलासशिखरासीनं चन्द्रखण्डविराजितम् ।
पप्रच्छ परया भक्त्या गौरी नत्वा वृषध्वजम् ॥1॥

श्रीदेव्युवाच —

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
केनोपायेन च कलौ साधकाः यान्ति सद्गतिम् ।
तन्मेवद महेशान यदि तेऽस्ति कृपा मयि ॥2॥

श्रीशिव उवाच —

अतिगुह्यतमं ह्येतत् ज्ञानानन्द-सनातनम् ॥3॥

मन्त्र-माहात्म्य का कथन कहा जा रहा है।

एक बार चन्द्रमौलि शङ्कर जब कैलास-शिखर पर समासीन थे, तब पार्वती ने परम-श्रद्धा के साथ वृषध्वज को नमस्कार कर उनसे जिज्ञासा की ।।1।।

पार्वती ने कहा — हे भगवन् ! आप सर्वधर्मज्ञ एवं सर्वशास्त्रविशारद हैं । हे महेश ! हे ईशान ! यदि मेरे प्रति आपकी कृपा है, तो कलियुग में किस उपाय के अवलम्बन से साधक सद्गति का लाभ कर सका है, उसे मेरे निकट व्यक्त करें ।।2।।

शङ्कर ने कहा — यह तत्त्व अति गुह्यतम है । यह ज्ञान एवं आनन्द-स्वरूप सनातन है ।।3।।

अतीव च सुगोप्यञ्च कथितुं नैव शक्यते ।
अतीव मे प्रियासीति कथयामि तथापि ते ॥4॥
सर्वं ब्रह्ममयं ह्येतत् संसार-स्थूल-सूक्ष्मकम् ।
प्रकृत्या तु विना नैव संसाराद्युपपद्यते ॥5॥
तस्मात्तु प्रकृतिमूलं कारणञ्चैव दृश्यते ।
रूपाणि बहुसंख्यानि प्रकृतेः सन्ति तारिणि ॥6॥
तेषां मध्ये प्रधानन्तु कालीरूपं मनोहरम् ।
विशेषतः कलियुगे नराणां भुक्तिमुक्तिदम् ॥7॥
अस्या उपासकाश्चैव ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
चन्द्रः सूर्यश्च वरुणो कुबेरोऽग्निस्तथा परा ॥8॥
दुर्वासाश्च वशिष्ठश्च दत्तात्रेयो बृहस्पतिः ।
बहुनात्र किमुक्तेन सर्वे देवाः उपासकाः ॥9॥
कालिकायाः प्रसादेन भुक्तिमुक्त्यादिभागिनः ।
तस्या मन्त्रं प्रवक्ष्यामि यतो वक्ष्येज्जगत्रये ॥10॥

यह तत्त्व अति गोपनीय होने के कारण मैं इसे व्यक्त करने में असमर्थ हूँ । किन्तु आप मेरी प्रियतमा, प्रिया हैं । इसलिए उस तत्त्व का वर्णन मैं आपके निकट कर रहा हूँ ।।4।।

यह स्थूल एवं सूक्ष्म तत्त्वात्मक संसार सम्पूर्ण ही ब्रह्ममय है । किन्तु प्रकृति से भिन्न संसार की सृष्टि नहीं होती है ।।5।।

अतः प्रकृति ही सृष्टि का मूल है एवं कारण रूप से परिदृश्यमान है । हे तारिणि ! इस प्रकृति का रूप अनन्त है ।।6।।

इस अनन्त रूपों के मध्य में प्रकृति का कालीरूप ही सर्वापेक्षा मनोहर है । विशेषतः कलियुग में काली ही मानवों के लिए भोग एवं मोक्ष-दायिनी हैं ।।7।।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, चन्द्र, सूर्य, वरुण, कुबेर, अग्नि प्रभृति देवतागण एवं दुर्वासा, वशिष्ठ, दत्तात्रेय प्रभृति ऋषि एवं सुरगुरु बृहस्पति प्रभृति सभी उनके उपासक हैं । अधिक वाक्य-व्यय न कर, यह कहना ही पर्याप्त होगा कि समस्त देवतागण ही उनके उपासक हैं ।।8-9।।

कालिकादेवी के प्रसाद से ही देवतादि सभी भोग एवं मोक्ष के अधिकारी बनते हैं । जगत्-त्रय में कथित उस कालिका-मन्त्र को बता रहा हूँ ।।10।।

क-कारं वह्निसंयुक्तं रति-बिन्दु-समन्वितम् ।
त्रिगुणञ्च ततः कूर्च्चयुग्मं लज्जायुगं ततः ॥11॥
दक्षिणे कालिके चेति पूर्वबीजानि चोच्चरेत् ।
वह्निजायावधि प्रोक्तः कालिकाया मनुर्म्मतः ॥12॥
न च ध्यानाद्यपेक्षास्ति नारिमित्रादि-चिन्तनम् ।
न वा प्रयासबाहुल्यं न कायक्लेश एव च ॥13॥
भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्तः उष्णिक् छन्द उदाहृतम् ।
श्मशानकालिका देवी देवता परिकीर्त्तिता ॥14॥
लज्जाबीजन्तु बीजः स्यात् शक्तिः स्यात् कूर्चबीजकम् ।
पाण्डित्ये च कवित्वे च विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥15॥
विद्याराज्ञीयमुदिता अनिरुद्ध-सरस्वती ।
किं पुनर्दुर्लभं तस्य त्रैलोक्य विद्यतेऽनघे ॥16॥
अस्याः स्मरणमात्रेण सिद्धयोऽष्टौ भवन्ति हि ।
सकृदुच्चारणे देवि सद्यः खेचरतां व्रजेत् ॥17॥

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके, ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा । यह दक्षिणाकालिका का मन्त्र है ।।11-12।।

इस मन्त्र के साधन में किसी ध्यानादिं की अपेक्षा नहीं करनी पड़ती है या इस मन्त्र के ग्रहण में नारिमित्राद का विचार भी नहीं करना पड़ता है । इस मन्त्र के साधन में कोई प्रयास बाहुल्य नहीं है या किसी प्रकार दैहिक क्लेश को सहन भी नहीं करना पड़ता है ।।13।।

भैरव इस मन्त्र के ऋषि हैं, इसका छन्द है उष्णिक् एवं देवी श्मशानकालिका इस मन्त्र की देवता हैं ।।14।।

'ह्रीं' इस मन्त्र का बीज है एवं 'हूं' इसकी शक्ति है । पाण्डित्य एवं कवित्व की सिद्धि के निमित्त यह मन्त्र प्रयुक्त होता है ।।15।।

इस मन्त्र को 'विद्याराज्ञी' कहते हैं । 'अनिरुद्ध' इसकी सरस्वती है । अतः हे अनघे ! त्रिजगत् में इस मन्त्र के प्रभाव से दुष्प्राप्य ही क्या हो सकता है ? ।।16।।

दक्षिण कालिका-मन्त्र के स्मरण-मात्र से ही अष्टसिद्धि का लाभ होता है एवं एकबार मात्र इसका उच्चारण करने पर साधक आकाश-मार्ग से गमनागमन की क्षमता का लाभ करता है ।।17।।

अस्याः स्मरणमात्रेण पलायन्ते महापदः ।
अस्यास्तु ज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तः प्रजायते ॥18॥
बृहस्पतिसमो वाग्मी धरणीसदृशः क्षमी ।
श्रीरामसदृशो वीर्ये रूपे कामसमः स्मृतः ॥19॥
समुद्र इव गाम्भीर्ये तेजसा भास्करोपमः ।
दुर्वासा इव शापादौ क्रोधे चैव यमोपमः ॥20॥
स्रष्टा प्रजापतिरिव स्थितौ विष्णुसमस्तथा ।
प्रलयेऽस्मत्समतो ह्येष एनां यो वेत्ति तत्त्वतः ॥21॥
बहुनात्र किमुक्तेन तत्समो नास्ति भूतले ॥22॥

इति कुमारीतन्त्रे पार्वती-भैरव-संवादे मन्त्र-माहात्म्य-कथनं नाम प्रथमः पटलः ॥1॥

इस मन्त्र के स्मरण मात्र से ही महा विपत्ति भी पलायन करती है । इस मन्त्र के सम्यक् ज्ञान-लाभ-मात्र से ही साधक जीवन्मुक्ति का लाभ करता है ।।18।।

इस मन्त्र से सिद्ध साधक बृहस्पति के समान वाग्मी, धरणी के समान क्षमाशील, श्रीराम-तुल्य वीर्यवान् एवं कामदेव-तुल्य रूपवान् बन जाता है ।।19।।

वह व्यक्ति गाम्भीर्य में समुद्र-सदृश, तेज में सूर्य, शापादि प्रदान में दुर्वासा एवं क्रोध में यमतुल्य बन जाता है ।।20।।

दक्षिणकालिका-तत्त्वज्ञ सिद्ध साधक सृष्टिकार्य में ब्रह्मा, पालन में विष्णु एवं प्रलयकार्य में रुद्र के समतुल्य बन जाता है । इस सम्बन्ध में बहुलोक्ति न कर इतना कहना ही पर्याप्त है कि पृथिवी में उसके समान द्वितीय व्यक्ति रहता ही नहीं ।।21-22।।

कुमारीतन्त्र में पार्वती-भैरव-संवाद में मन्त्र-माहात्म्य नामक प्रथम पटल समाप्त ॥1॥

द्वितीयः पटलः

साधनाङ्गन्यासः, कालिकाध्यानं, मानसपूजाविधि-कथनम्

श्रीदेव्युवाच —

येयं त्वया महाविद्या प्रोक्ता देव सुदुर्लभा।
अस्यास्तु ज्ञानमात्रेण कृतार्थस्तु न संशयः ॥1॥
किं तस्या यन्त्रमन्त्राणि न ज्ञातानि मयानघ।
तदैव कथयस्वाद्य यदि तेऽस्ति कृपा मयि ॥2॥

श्री भैरव उवाच —

साधकः सुमना ज्ञानी स्नात्वा नद्यां यथाविधि।
ॐ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा-मन्त्रेण मन्त्रवित् ॥3॥
जलमानीय सव्येन आसनं शोधयेत्ततः।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य लज्जाबीजं तथैव च ॥4॥
ततो विशुद्धान्ते सर्वाणि पापानि शमयेति च।
अशेषान्ते विकल्पं सदापनयेति ततः परम् ॥5॥
हूँ स्वाहान्त भवेन्मन्त्रः पादप्रक्षालने प्रिये।
वेदाद्यञ्च तथा मायां स्वाहेत्याचमनं ततः ॥6॥

सम्प्रति कालिका-साधना के न्यास प्रभृति अङ्गादि एवं कालिका का ध्यान तथा मानसपूजा का कथन कहा जा रहा है।

देवी ने कहा — हे महादेव ! आपने जिस सुदुर्लभ महाविद्या के विषय में मुझे बताया है, उस विषय में ज्ञान-लाभ करने मात्र से मैं कृतार्थ हो गयी हूँ, इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ।।1।।

हे अनघ ! उस महाविद्या के साधनार्थ यन्त्र-मन्त्र क्या है, उसे मैं नहीं जानती । यदि मेरे प्रति आपकी कृपा है, तो उन सभी विषयों को मेरे निकट विवृत करें ।।2।।

शङ्कर ने कहा — सुमना ज्ञानी साधक पहले यथाविधि नदी में स्नान करें । उसके बाद 'ॐ वज्रोदके हूं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र के द्वारा जलग्रहण करके उसके द्वारा आसन का शोधन करें । उसके बाद 'ॐ ह्रीं विशुद्ध सर्वाणि पापानि शमय अशेष-विकल्पं सदापनय हूं स्वाहा' – इस मन्त्र के द्वारा पाद-प्रक्षालन करें । 'ॐ ह्रीं स्वाहा' – इस मन्त्र से आचमन करें ।।3-6।।

ततोऽर्घ्यपात्रं विन्यस्य द्वारपालान् प्रपूजयेत् ।
गां बीजाद्यं गणेशञ्च वामाद्यं वटुकं तथा ॥7॥
क्षामाद्यं क्षेत्रपालञ्च यामाद्यं योगिनीं तथा ।
ऊर्ध्वं वामे दक्षिणे च अधश्चैव प्रपूजयेत् ॥8॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य सर्वविघ्नानतः परम् ।
उत्सारय ततो हुं फट् स्वाहा च तदनन्तरम् ॥9॥
अनेनैव च मन्त्रेण विघ्नानुत्सारयेत् सुधीः ।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य मन्यन्ते धरिणीति च ॥10॥
वज्रिणीति पदं चोकत्वा महाप्रतिसरे तथा ।
रक्षद्वयं ततो हुं फट् स्वाहा च तदनन्तरम् ॥11॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य रक्ष रक्ष तदनन्तरम् ॥12॥
हूं फट् स्वाहेति मन्त्रेण भूमिं च परिशोधयेत् ।
ततः पवित्र वज्रभूमे प्रणवं पूर्वमुद्धरेत् ॥13॥
वर्मद्वयं ततश्चैव फट् स्वाहा तदनन्तरम् ।
अनेनैव विधानेन कुर्याद् भूम्यभिमन्त्रणम् ॥14॥
मृतासनं विना देवि यो जपेत् कालिकामनुम् ।
तावत्कालं वसेत् घोरे यावदाहुः यमं पुरम् ॥15॥

उसके बाद अर्घ्यपात्र का स्थापन कर, पहले द्वारपालगणों की पूजा करें । यथा – गां गणेशाय नमः, वां वटुकाय नमः, क्षां क्षेत्रपालाय नमः, यां योगिन्यै नमः – इनकी यथा-क्रम से ऊर्ध्व में, वाम में, दक्षिण में एवं अधो-दिशा में पूजा करें ।।7-8।।

इसके अनन्तर, 'ॐ सर्व-विघ्नान् उत्सारय, हुं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र के द्वारा साधक विघ्नोत्सारण (विघ्न-अपसारण) करें । 'ॐ मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा' इस मन्त्र के द्वारा विचक्षण साधक आत्मरक्षा करें ।।9-10।।

उसके बाद 'ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र के द्वारा भूमि-संशोधन करें ।।11-12।।

उसके बाद 'ॐ पवित्र वज्रभूमे हूं हूं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र के द्वारा भूमि को अभिमन्त्रित करें ।।13-14।।

हे देवि ! जो व्यक्ति मृतासन-भिन्न (होकर) कालिका-मन्त्र का जप करता है, वह व्यक्ति अनन्तकाल पर्यन्त घोर नरक में वास करता है ।।15।।

ॐ-कारान्तं सुरेखे च वज्ररेखे ततः परम् ।
हुं फट् स्वाहा ! ततः कुर्यात् मण्डलं च शवासने ॥16॥
वीरासनेनोपविशेत् संपूज्यासनमेव च ।
अधिष्ठाने च पुष्पस्य प्रणवं पूर्वमुद्धरेत् ॥17॥
शताभिषेकेति पदं हूं फट् स्वाहा ततः परम् ।
अभिषेकेति च प्रोक्तं हूं फट् स्वाहा ततः परम् ॥18॥
अनेन मनुना देवि पुष्पाधिष्ठानमेव च ।
प्रणवं पुष्पकेतुश्च तथा राज्ञार्हतेति च ॥19॥
शताय सम्यगित्युक्त्वा सम्बन्धाय च ततः परम् ।
ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे ॥20॥
पुष्पचयावकीर्णे हूं फट् स्वाहा ततः परम् ।
विशुद्धपुष्पमेतेन जलं पूर्ववदाहरेत् ॥21॥
भूतशुद्धिं विधायेत्थं देवीरूपं विचिन्तयेत् ।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य शेषसन्धिनमेव च ॥22॥
हूं फट् स्वाहेति मन्त्रेण कायवाक्-चित्तशोधनम् ।
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य चात्मानि रक्ष एव च ॥23॥
वज्रिणीति पदं प्रोक्त्वा महाप्रतिसरे तथा ।
रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा मन्त्रः स्यादात्मरक्षणे ॥24॥

'ॐ सुरेखे वज्ररेखे हूं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र से मण्डल की रचना कर, उसके मध्य में शवासन के निमित्त शव-स्थापन करें ।।16।।

उसके बाद आसन की पूजा कर, वीरासन में साधक उस आसन के ऊपर अर्थात् शव के ऊपर उपवेशन करें ।।17।।

उसके बाद 'ॐ शताभिषेक हूं फट् स्वाहा' –इस मन्त्र से पुष्पाधिष्ठान करें ।।18।।

'ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे । पुष्पचयावकीर्णे हूं फट् स्वहा' – इस मन्त्र से पुष्प का शोधन कर, पूर्ववत् जल का आहरण करें ।।19-21।।

उसके बाद भूतशुद्धि को सम्पन्न कर साधक अपने को देवी-रूप में चिन्तन करें । उसके बाद 'ॐ शेषसन्धिन हूं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र से काय, वाक् एवं चित्त का शोधन करें ।

'ॐ आत्मानि रक्ष वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा' – इस मन्त्र से आत्मरक्षा करें ।।22-24।।

अनेनैव च मन्त्रेण रक्षामात्मनि कारयेत्।
ततः षोडशवर्षीयां नारीमानीय यत्नतः ॥25॥
युवतीं मदनोन्मत्तां सुवेशां चारुहासिनीम्।
सदा रतौ साभिलाषां सिन्दूराङ्कितभालकाम् ॥26॥
साधकप्रेमशीलां तु वामे संस्थापयेद्बुधः।
तस्याञ्च भूतशुद्ध्यादीन् कृत्वा च मातृकां न्यसेत् ॥27॥
प्राणायामं ततः कृत्वा कारयित्वा यथाविधि।
बीजेनैव ततो मन्त्री ऋष्यादिन्यासमाचरेत् ॥28॥
अङ्गन्यासं ततः कुर्यात् बीजेन प्रणवेन तु।
ब्रह्म-रन्ध्रे भ्रूवोर्मध्ये ललाटे नाभिदेशके ॥29॥
गुह्ये वक्त्रे च सर्वाङ्गे सर्वबीजं न्यसेत् ततः।
वर्णन्यासं ततः कुर्यात् येन देवीमयो भवेत् ॥30॥
हूं-कारान्ता मातृकावर्णं हृदये संप्रविन्यसेत्।
ऋ-कारान्तां ततः पश्चात् दक्षिणे भुजे च न्यसेत् ॥31॥

इस प्रकार आत्म-रक्षा कर, उसके बाद षोडशवर्षीया नारी को उस स्थल पर आनयन करें ।।25।।

ललाट देश सिन्दूर-राग से रञ्जित, मदोन्मत्ता, सुवेशा, चारुहासिनी, सदा रति में साभिलाषिणी, साधक प्रेमाकाङ्क्षी युवती को साधक स्वीय वामभाग में स्थापित करें। उसके बाद, उस युवती की भूतशुद्ध्यादि को करके, उसके बाद मातृकान्यास करें ।।26-27।।

उसके बाद साधक प्राणायाम करें। उसके उपरान्त, बीजमन्त्र के द्वारा ऋष्यादि-न्यास को सम्पन्न करें ।।28।।

तदनन्तर बीज एवं प्रणव के द्वारा अङ्गन्यास करें। उसके बाद ब्रह्मरन्ध्र में, भ्रू-मध्य में, ललाट में, नाभिदेश में, गुह्य में, वक्त्र में एवं सर्वाङ्ग में सर्वबीज (ॐ) के द्वारा न्यास करें। तदनन्तर मातृकावर्ण का न्यास करें। इस न्यास के द्वारा साधक स्वयं देवीमय बन जाता है ।।29-30।।

उसके बाद हृदय में, हूं-कारान्त मातृकावर्ण एवं दक्षिण भुजा में ऋ-कारान्त (पाठान्तर के मतानुसार – ध-कार, घ-कार या य-कारान्त) मातृका वर्णों का न्यास करें ।।31।।

टकारान्तां महादेवि ततो वामभुजे न्यसेत् ।
भ-कारान्तां ततो मन्त्री न्यसेत् दक्षिणपादके ॥32॥
क्ष-कारान्तं ततः पश्चात् न्यसेद्वै वामपादके ।
व्यापकन्तु ततः पश्चात् मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ॥33॥
सप्तधा व्यापकं कुर्यात् मूलमन्त्रेण साधकः ।
ततः स्त्रीवेशधारी स्यात् सिन्दूराङ्कितभालकः ॥34॥
शृङ्गारोज्ज्वलवेशाढ्य-स्ताम्बूल पूरिताननः ।
एवं वेशादिकं कृत्वा वनितामपि कारयेत् ॥35॥
पीठन्यासं ततः पश्चात् आधारशक्ति पूर्वकम् ।
प्रकृतिं कमठञ्चैव शेषं पृथ्वीं तथैव च ॥36॥
सुधासिन्धुमणिद्वीपं चिन्तामणिगृहं तथा ।
श्मशानं पारिजातञ्च तन्मूले रत्नवेदिकाम् ॥37॥
तस्योपरि मणेः पीठं न्यसेत् साधकसत्तमः ।
चतुर्दिक्षु मुनीन् देवान् शिवांश्च शवमुण्डकान् ॥38॥

उसके बाद वामभुजा में ट-कारान्त (पाठान्तर के मतानुसार ढ-कार दु-कार या च-कारान्त) मातृकावर्णों का न्यास करें। उसके बाद दक्षिण पाद में भ-कारान्त मातृकावर्णों का एवं वाम पाद में क्ष-कारान्त मातृकावर्णों का न्यास करें। उसके बाद मूल मन्त्र के द्वारा सर्वाङ्ग में व्यापक न्यास करें ।।32-33।।

मूलमन्त्र के द्वारा सात बार व्यापक न्यास करें। उसके बाद स्त्रीवेश धारण कर, ललाट देश को सिन्दूराङ्कित कर, ताम्बूलपूरित मुख में, शृङ्गारोज्वल वेश का परिधान कर, वनिता-कर्म का सम्पादन करें ।।34-35।।

उसके बाद पीठन्यास करें। उसके बाद यथाक्रम से आधारशक्ति, प्रकृति, कमठ, शेष, पृथ्वी, सुधा-सिन्धु, मणिद्वीप, चिन्तामणिगृह, श्मशान, पारिजात, उसके मूल में स्थित रत्नवेदिका एवं उस वेदिका के ऊपरि-स्थित मणिपीठ में साधकसत्तम न्यास करें। उसके बाद चारों ओर मुनिगणों, देवगणों, शिवासमूह एवं शवमुण्डसमूह का न्यास करें ।।36-38।।

धर्मश्चैव अधश्चैव पादगात्र चतुष्टये ।
हृदि शेषं तथा पद्मं सूर्यं सोमं महेश्वरि ॥39॥

वैश्वानरं तथा सत्त्वं रजश्चैव तमस्तथा ।
आत्मानं चैव विन्यस्य शक्ति-कृत् पद्मकेशरे ॥40॥

इच्छाज्ञानक्रियाश्चैव कामिनी कामदायिनी ।
रतिरतिप्रियानन्दा कर्णिकायां मनोन्मयी ॥41॥

वाग्भवं प्रथमं चोक्त्वा परायै तदनन्तरम् ।
अपरायै विरूपायै हेसौः वाच्यमतःपरम् ॥42॥

सदाशिव महाप्रेत ङेन्तं पद्मासनं तथा ।
नम इत्यन्त-मन्त्रोऽयं पीठन्यासमुदाहृतः ॥43॥

एवं देहमये पीठे चिन्तयेदिष्टदेवताम् ।
घोरदंष्ट्रां करालास्यां ललजिह्वां चतुर्भुजाम् ॥44॥

उसके बाद पादद्वय में एवं सर्वाङ्ग में यथाक्रम से अधर्म का एवं धर्म का न्यास करें । हे महेश्वरि ! उसके बाद हृदय में शेष, पद्म, सूर्य एवं सोम का न्यास करें ।।39।।

उसके बाद यथाक्रम से वैश्वानर, सत्त्व, रज, तम एवं आत्मा का न्यास करें, पद्म-केशर में उन्हें शक्ति-पूर्ण करें ।।40।।

उसके बाद यथाक्रम से इच्छा, ज्ञान, क्रिया, कामिनी, कामदायिनी, रति, रतिप्रिया, नन्दा एवं मनोन्मयी – इनका, कर्णिका में न्यास करें ।।41।

'ऐं परायै अपरायै विरूपायै हेसौः सदाशिवाय महाप्रेताय पद्मासनाय नमः' – यह पीठन्यास मन्त्र है ।।42।।

इस प्रकार पीठन्यास को सम्पन्न कर, साधक स्वीय देहमय-पीठ पर निम्नोक्त रूप से इष्ट देवता का ध्यान करें ।।43।।

देवी घोरदंष्ट्रा, करालवदना, लोलजिह्वा एवं चतुर्भुजा हैं । देवी, वाम दिशा के ऊर्ध्व एवं अधः हस्त में यथाक्रम से खड्ग एवं सद्यश्छिन्न नरमुण्ड धारण की हुई हैं एवं दक्षिण दिशा के ऊर्ध्व-हस्त में अभय मुद्रा (मतान्तर

सद्यश्छिन्न-शिरः-खड्ग-वामाधः ऊर्ध्व-कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोद्ध्वाधः-पाणिकाम् ॥45॥
नीलमेघप्रभां तन्वीं घोररूपां दिगम्बरीम् ।
कुण्ठावसक्तमुण्डानी गलद्रुधिरचर्चिताम् ॥46॥
कर्णावतंसतानीतशवयुग्म-भयानकाम् ।
बालार्कमण्डलाकार-लोचनत्रितयान्विताम् ॥47॥
सृक्कद्वय-गलद्रक्तधारा विस्फुरिताननाम् ।
मुक्तकेशीं स्मितमुखीं श्मशानालयवासिनीम् ॥48॥
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् ।
शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥49॥
महाकालेन रत्यर्थमुपविष्टां स्मरातुराम् ।
शिवाभिर्घोररावाभिः चतुर्दिक्षु समन्विताम् ॥50॥
अतिप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ।
एनान्तु मानसैर्भोगै-र्गन्धपुष्पैः सदीपकैः ॥51॥

से अभय) एवं निम्न-हस्त में वरमुद्रा (मतान्तर से वर) धारण की हुई हैं ।।44-45।।

देवी नीलमेघ के समान प्रभासम्पन्न, तन्वी, घोर-रूपा एवं दिगम्बरी हैं । उनके कण्ठ में रुधिरस्रवणशील ग्रथित नरमुण्ड-माला दोदुल्यमान है ।।46।।

प्रातःकालीन सूर्य के समान मण्डलाकार उनकी तीन चक्षुएँ हैं । उनके उभय ओष्ठ-प्रान्तों से विस्फुरित रक्त, विगलित धारा से प्रवाहित होकर उनके मुखमण्डल को प्लावित कर रहा है । देवी मुक्तकेशी, स्मितकेशी एवं श्मशानालयवासिनी हैं ।।47-48।।

शव के हस्तों में ग्रथित काञ्ची के द्वारा उनका कटिदेश शोभित है । देवी हास्यमुखी होकर शव-रूप महादेव के हृदय के ऊपर अवस्थान कर रही हैं ।।49।।

महाकाल के साथ रति के निमित्त वह कामार्त्ता होकर शिव के हृदय के ऊपर उपविष्टा हैं । उनके चारों ओर घोर-रावा शिवाकुल विद्यमान हैं ।।50।।

उनका वदनकमल स्मितहास्य-मण्डित एवं अतिशय सुप्रसन्न हैं । इस प्रकार देवी को मानस-उपचारों से भोग, गन्ध-पुष्प एवं दीप प्रदान कर, मानस उपचारों

सुरया बलिरक्तैश्च पूजयेच्च यथाविधि।
ततो वै मानसं जापं कुर्याद्होमादिकं ततः ॥52॥
नमस्कृत्य तथा स्तुत्त्वा बहिर्यागमथाचरेत् ॥53॥

इति कुमारीतन्त्रे अन्तर्यागविधिर्नाम
द्वितीयः पटलः ॥2॥

से सुरा के द्वारा बलि एवं रक्त के द्वारा यथाविधि अर्चना करें। उसके बाद मानस जप एवं मानस होम करें ।।51-52।।

उसके बाद देवी को नमस्कार कर, उनके स्तव का पाठ करें। तदनन्तर बहिर्याग को सम्पन्न करें ।।53।।

कुमारीतन्त्र में अन्तर्याग-विधि नामक
द्वितीय पटल समाप्त ॥2॥

तृतीयः पटलः

कालिकायन्त्रः बाह्यपूजाकथनञ्च

भैरवोवाच —

अथ वक्ष्ये महायन्त्रं समस्तपुरुषार्थदम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण सद्यः खेचरतां व्रजेत् ॥1॥
आदौ त्रिकोणं विन्यस्य त्रिकोणं तद्बहिर्न्यसेत्।
बहिस्त्रिकोणमालिख्य षट्कोणन्तु लिखेद्बहिः ॥2॥
मध्ये तु वैन्दवं चक्रं मायाबीज विभूषितम्।
षट्कोणान्ते बहिर्वृत्तं ततोऽष्टदलमालिखेत् ॥3॥
बहिर्वृत्तेन संवेष्ट्य भूपुरेनैक-संयुक्तम्।
ज्ञात्वैवं मुक्तिमाप्नोति यन्त्रमेतन्न संशयः ॥4॥
एतत्तु विलिखेत् ताम्रे कुण्डगोल-विलेपिते।
स्वयम्भूकुसुमैर्युक्ते कुङ्कुमागुरुसेविते ॥5॥

कालिका-यन्त्र एवं बाह्य पूजा-विधि का कथन कहा जा रहा है।

भैरव ने कहा — मैं समस्त पुरुषार्थ-प्रदायक महायन्त्राङ्कन-विधि को बता रहा हूँ। इस यन्त्र-विधि के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान-लाभ होने मात्र से ही साधक आकाश-मार्ग से गमनागमन की क्षमता को प्राप्त कर लेता है ।।1।।

पहले एक अधोमुख त्रिकोण को अंकित कर, उसके बाद उसके बहिर्भाग में एक ऊर्ध्वमुख त्रिकोण का अंकन करें। उसके बाद प्रथमोक्त त्रिभुज के मध्य में बिन्दु-चक्र को अंकित कर, उस बिन्दुचक्र के मध्य में मायाबीज 'ह्रीं' लिखें।

षट्कोण के बहिर्भाग में वृत्त एवं वृत्त के बहिर्भाग में अष्टदल पद्म को लिखें ।।2-3।।

उस पद्म के बहिर्भाग में भूपुर (या भूपुरद्वय) को अंकित करें। इस प्रकार, इस यन्त्र के सम्बन्ध में ज्ञान-लाभ करने पर साधक निश्चय ही मुक्तिलाभ करता है ।।4।।

कुण्डगोलोद्भव द्रव्य, स्वयम्भूकुसुम, कुङ्कुम एवं अगुरु को मिश्रित कर, ताम्र-पात्र में इस यन्त्र की रचना करें ।।5।।

शुद्धासने च पशुभिरदृष्टे पुरतो न्यसेत् ।
ततोऽर्घ्यं कारयेन्मन्त्री तया नार्या सुवेशया ॥6॥
अर्घ्यद्रव्यं अर्घ्यपात्रे निःक्षिपेत् यत्नतः सुधीः ।
कुण्डगोलोद्भवद्रव्यं स्वयम्भूकुसुमं तथा ॥7॥
नाधर्मो विद्यते सुभ्रु महामन्त्रस्य साधने ।
ततः पीठक्रमेणैव यन्त्रपूजां समाचरेत् ॥8॥
ततो हृदयपद्मान्ते स्फुरन्तीं विद्युताकृतिम् ।
सुषुम्नावर्त्मना नीत्वा शिवस्थानं महेश्वरीम् ॥9॥
ततो वै हृदये पद्मे पुष्पराशौ समानयेत् ।
नासया दक्षया देवि वायुबीजेन मन्त्रवित् ॥10॥
देवेशि भक्तिसुलभे परिवार समन्विते ।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ॥11॥
इत्यनेन तु मन्त्रेण देवीमावाह्येत्ततः ।
आवाह्य च महादेवीं उपचारान् निवेदयेत् ॥12॥

साधक, पशुओं की दृष्टि से विरहित स्थान में, शुद्ध आसन पर उपवेशन कर, सर्वप्रथम न्यास करें । उसके बाद मन्त्रसाधक सुवेशा कुलशक्ति के द्वारा अर्घ्य को प्रस्तुत करावें ।।6।।

उसके बाद सुधी-साधक यत्नपूर्वक अर्घ्यपात्र में अर्घ्य का निक्षेप करें । कुण्डगोलोद्भव द्रव्य एवं स्वयम्भूकुसुम को भी उस अर्घ्यपात्र में निक्षेप करें ।।7।।

हे सुभ्रु ! कालिकादेवी के इस महामन्त्र (या महायन्त्र) के साधन में अधर्म कुछ भी नहीं है । उसके बाद पीठक्रम के अनुसार (द्वितीय पटलोक्त 36 से 38 पर्यन्त श्लोकों के पीठों के नाम-क्रम के अनुसार) यन्त्र में पीठों की पूजा करें ।।8।।

उसके बाद स्फुरणशील विद्युताकृति कुलकुण्डलिनी को हृदयपद्म में आनयन करें । तदनन्तर हृत्पद्म से सुषुम्नावर्त्म से कुलकुण्डलिनी को सहस्रार में उत्तोलित करें । तदनन्तर पुनः सहस्रार से दक्षिण नासिका में वायुबीज (यं) के संयोग से कुलकुण्डलिनी को पुनः हृत्पद्म में पुष्पराशि के मध्य में आनयन करें ।।9-10।।

मूल में लिखित एकादश संख्यक श्लोक के उच्चारण से देवी का आवाहन करें । आवाहन के अन्त में कालिकादेवी को उपचार-समूह निवेदित करें ।।11-12।।

कालीं कपालिनीं कुल्लां कुरुकुल्लां विरोधिनीम् ।
विप्रचिन्तां पूजयेच्च बहिः षट्कोणके बुधः ।।13।।
उग्रामुग्रप्रभां दीप्तां तन्मध्ये च त्रिकोणके ।
नीलां घनां वलाकाञ्च तस्य मध्ये त्रिकोणके ।।14।।
मात्रां मुद्रां मिताञ्चैव यजेदपरकोणके ।
सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः ।।15।।
तर्जनीं वामहस्तेन धारयन्त्यः दिगम्बराम् ।
देव्यास्तु दक्षिणे भागे महाकालं समर्चयेत् ।।16।।
ब्राह्म्याद्याः पूजयेत् पत्रे पत्रागे भैरवान् यजेत् ।
लोकपालांस्ततो बाह्ये तदस्त्राणि च तद्बहिः ।।17।।
ततो नीराजनं कुर्यात् दशधा भ्राम्य दीपकैः ।
अष्टोत्तरं सहस्रं वै जपं कुर्यात् समाहितः ।।18।।

काली, कपालिनी, कुल्ला, कुरुकुल्ला, विरोधिनी एवं विप्रचिन्ता इन षड्विध नामों के एक उच्चारणक्रम से यन्त्र के षटकोण में यथाक्रम से इन छः जनों की पूजा करें ।।13।।

उसके बाद बहिःस्थ त्रिकोण में, यथाक्रम से उग्रा, उग्रप्रभा एवं दीप्ता की पूजा करें । तदनन्तर मध्यस्थित त्रिकोण में यथाक्रम से नीला, घना एवं वलाका की पूजा करें ।।14।।

तदनन्तर पुनः बहिःस्थ त्रिकोण में मात्रा, मुद्रा एवं मिता की पूजा करें । वे सभी मुण्डमालाविभूषिता, श्यामा, असिकरा, वाम हस्त में तर्जनीमुद्रा-धारिणी एवं दिगम्बरी हैं । कालिका का ध्यान करके उनकी दक्षिण दिशा में (दाहिने पार्श्व में) महाकाल की पूजा करें ।।15-16।।

उसके बाद अष्टदलपत्र के अष्टपत्रों में यथाक्रम से ब्राह्मी, वैष्णवी प्रभृति अष्टशक्तियों की पूजा कर, उन सभी पत्रों के अग्रभाग में एक-एक के क्रम से अष्टपत्र के अग्र में यथाक्रम से अष्ट भैरवों की पूजा करें । उसके बाद पद्म के बहिर्भाग में लोकपालों की एवं उसके बहिर्भाग में अस्त्रों की पूजा करें ।।17।।

इसके बाद देवी के सम्मुख, दश बार दीप को भ्रामित कर (घुमाकर) अष्टोत्तर सहस्र देवीमन्त्र का जप करें ।।18।।

गुह्यातिगुह्यमन्त्रेण देव्या हस्ते समर्पयेत् ।
ततः स्तुत्त्वा नमस्कृत्य कुर्यात् सम्भोग-मैथुनम् ॥19॥
देवताग्रे तु सम्भोगे देवताप्रीणनं भवेत् ।
सम्भोगं तु पुरस्कृत्य देवीं हृदि विसर्जयेत् ॥20॥
कृतकृत्यो भवेन्मत्री नात्र कार्यविचारणा ॥21॥

इति कुमारीतन्त्रे बहिर्यागो नाम
तृतीयः पटलः ॥3॥

उसके बाद 'गुह्यातिगुह्य' – इत्यादि मन्त्रोच्चारण के साथ देवी के हस्त में जप समर्पण करें। उसके बाद देवी के स्तव का पाठ कर, देवी को नमस्कार करें। तदनन्तर कुलशक्ति के मैथुन में प्रवृत्त हो जावें ।।19।।

देवता के सम्मुख कुलशक्ति के साथ रतिसम्भोग करने पर, वह देवता के लिए प्रीतिदायक होता है। रतिसम्भोग समापन के अन्त में देवी को स्वीय हृदय में विसर्जित करें। इस प्रकार कार्य करने पर साधक कृतकृत्य हो जाता है। इस विषय में विचार अनावश्यक है ।।20-21।।

कुमारीतन्त्र में बहिर्याग नामक
तृतीय पटल समाप्त ॥3॥

चतुर्थः पटलः

कालिकापूजोपचारः, बलिकथनञ्च

श्रीदेव्युवाच —

देवदेव महादेव सर्वज्ञ परमेश्वर ।
कालिकायाः प्रीतिकरानुपचारान् वदस्व मे ॥1॥

श्री भैवर उवाच —

प्रथमे तु सुरा पूज्या गौड़ी माध्वी तथैव च ।
पैष्ठी देव्यै तदभावे अनुकल्पं भवेत् प्रिये ॥2॥
नारिकेलोदकं कांस्ये ताम्रपात्रे स्थितं मधु ।
गव्यञ्च ताम्रपात्रस्थं सुरातुल्यं घृतं विना ॥3॥
अन्यानि च नैवेद्यानि साधकानां श्रृणु प्रिये ।
ताम्बूलञ्च सकर्पूरं नारिकेलं सशर्करम् ॥4॥
पायसं सघृतञ्चैव आर्द्रकं सगुड़ं तथा ।
सतण्डुलं तिलञ्चैव दधि चैव ससैन्धवम् ॥5॥

कालिका-पूजा के लिए नैवेद्यादि उपचार एवं बलि-कथन ।

पार्वती ने कहा — हे देवदेव महादेव ! आप सर्वज्ञ एवं परमेश्वर हैं । कालिका देवी के लिए प्रीतिकर पूजोपचारों का वर्णन आप मेरे निकट करें ।।1।।

भैरव ने कहा — हे प्रिये ! पहले सुरा की अर्चना करें । देवी को गौड़ी (गौड़देश-जात) माध्वी, (मधु से उत्पन्न) एवं पौष्ठी (पिष्टद्रव्य से प्रस्तुत) सुरा के द्वारा अर्चना करें । इन सभी सुराओं के अभाव में अनुकल्प-द्रव्य को प्रदान करें । (पाठान्तर के विधान के अनुसार इन समस्त सुराओं के अभाव में प्रचलित देशजात सुरा के द्वारा देवी की अर्चना करें ।) ।।2।।

कांस्यपात्रस्थित नारिकेल-जल, ताम्रपात्रस्थित मधु, ताम्रपात्रस्थित गो-दुग्ध, घृतसंयुक्त न होने पर सुरातुल्य माना जाता है ।।3।।

हे प्रिये ! साधकानुकूल अन्यान्य नैवेद्य के विवरण का श्रवण करें । कर्पूरसंयुक्त ताम्बूल, शर्करासंयुक्त नारियल, घृतसंयुक्त पायस, आर्द्रकसंयुक्त गुड़,

जम्बीरं पनसञ्चैव आम्रं आम्रातकं तथा।
कदलीं तिन्तिड़ीञ्चैव श्रीफलं फलमुत्तमम् ॥6॥
करञ्ज-वकुलं चैव ताल-खर्जूर मेव च।
अन्यानि च सुगन्धानि स्वादुनि सुफलानि च ॥7॥
नरः श्लाघ्यतमो मेषो महिषः शशकस्तथा।
शल्वकः शूकरश्चैव वलयः परिकीर्त्तितः ॥8॥
कृष्णसारादयोऽप्यन्ये दातव्या मन्त्रवित्तमैः।
एतेषाञ्चैव रक्तानि देयानि परमेश्वरि ॥9॥
जलं सुवासितं देयं कुलक्षालन मेव च।
प्रधानानि नैवेद्यानि कथितानि मयानघे।
यस्मिन् सन्तुष्यते काली किमन्यत् श्रोतुमिच्छसि ॥10॥

इति कुमारीतन्त्रे नैवेद्यविधिकथने
चतुर्थः पटलः ॥4॥

तण्डुल संयुक्त तिल, सैन्धवसंयुक्त दधि, जम्बीर, कटहल, आम्र, आम्रातक, कदली, तिन्तिड़ी, श्रीफल, करञ्ज, वकुल, ताल, खर्जूर एवं अन्यान्य समस्त प्रकार के स्वादु एवं सुगन्धयुक्त फलों को ही देवी के नैवेद्य के लिए प्रदान करें ।।4-7।।

(पाठान्तर के अनुसार – नर, छाग) मेष, महिष, शशक, साही (=शल्वक), शूकर, वलय, कृष्णसार मृग प्रभृति पशु को मन्त्रसाधक बलिरूप में प्रदान करें। हे परमेश्वरि ! इन समस्त पशुओं के रक्त को भी नैवेद्य रूप में प्रदान करें ।।8-9।।

युवासित जल एवं कुलागार प्रक्षालित जल को भी नैवेद्यरूप में प्रदान करें। हे अनघे ! प्रधान नैवेद्य-द्रव्यों का वर्णन मैंने आपके निकट किया। इन समस्त नैवेद्यों के द्वारा कालिकादेवी परितृप्त होती हैं। अन्य किन विषयों को आप श्रवण करने की इच्छा करती हैं, उसे बतावें ।।10।।

कुमारीतन्त्र में नैवेद्य-विधि-कथन-रूप
चतुर्थ पटल समाप्त ॥4॥

पञ्चमः पटलः

पुरश्चरणपद्धतिः तत्रजपविधिश्च

श्रीदेव्युवाच —

इदानीं श्रोतुमिच्छामि पुरश्चरणपद्धतिम् ।
साधनञ्च तथा पूर्वमाचारञ्च विशेषतः ।।1।।

श्रीभैरव उवाच —

सर्वभूतहिते युक्तः समयाचारपालकः ।
अनित्यकर्मसंत्यागी नित्यानुष्ठानतत्परः ।।2।।
लक्षमेकं जपेद्विद्यां हविष्याशी दिवा शुचिः ।
रात्रौ ताम्बूलपूरास्यः शय्यायां लक्षमानतः ।।3।।
ततः सिद्धमनुर्मन्त्रप्रयोगार्हो न चान्यथा ।
एवं लक्षद्वयं जप्त्वा तद्दशांशेन मन्त्रवित् ।।4।।
लतां पुष्पान्वितां कृत्वा पर्णानां शतकः सुधीः ।
अद्वैतां होमयेत्तानि दिवारात्रि-विभेदतः ।।5।।

पुरश्चरण पद्धति एवं पुरश्चरण-जप-विधि

देवी ने कहा — अधुना मैं मन्त्रसाधन एवं मन्त्रसाधन के पूर्ववर्ती पुरश्चरण-पद्धति या पूर्वाचार को श्रवण करने की इच्छा करती हूँ ।।1।।

भैरव ने कहा — सर्वभूतों के हित में रत, समयाचार-पालक, अनित्य कर्मत्यागी एवं नित्यानुष्ठान में तत्पर साधक, दिवाभाग में शुचिशुद्ध अवस्था में हविष्याशी बनकर एकलाख मन्त्र का जप करें । रात्रि काल में भी मुख में ताम्बूल का चर्वण करते हुए शय्यासीन होकर एक लाख मन्त्र का जप करें ।।2-3।।

इस प्रकार कार्य करने पर, मन्त्र व्यावहारिक प्रयोग के लिए उपयुक्त (योग्य) बन जाता है, कदापि इसकी अन्यथा नहीं होती है । उक्त रूप से दो लाख मन्त्र-जप को सम्पन्न कर, उसके दशमांश-संख्यक एवं अष्टोत्तरशत-संख्यक मन्त्र पुष्पान्वित लता के ग्रहण से यथाक्रम से दिवाभाग में एवं रात्रिभाग में जप करें । उसके बाद, दिवारात्रि निर्विशेष-रूप से साधक कालिका-देवी का होम करें ।।4-5।।

नारीकुलक्षालनेन तद्दशांशेन तर्पयेत्।
तत्क्षालन-जलेनैव दशांशमभिसिचयेत् ॥6॥
विप्राणां तद्दशांशेन भोजनं समुदाहृतम्।
सर्वं नियमतः कुर्याद् दिवारात्रि-विभेदतः ॥7॥
अनेन क्रमयोगेन यश्च कुर्यात् पुरस्क्रियाम्।
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥8॥
बृहस्पतिसमो वाग्मी भृगुतुल्यो भवेत् कविः।
धनेन धननाथः स्यात् तेजसा भास्करोपमः ॥9॥
प्रियेऽथ साधनं वक्ष्ये यद् होमादरो भवेत्।
श्मशाने होमयेदाज्यं रक्तं मांसं नखं तिलम् ॥10॥
अयुतैक प्रमाणेन लभते सिद्धिमुत्तमाम्।
श्मशाने रक्तधाराभिर्मज्जाभिस्तर्पयेच्छिवाम् ॥11॥
मेषमहिषरक्तेन नररक्तेन चैव हि।
मूषा-मार्जाररक्तेन तर्पयेत् परदेवताम् ॥12॥

उसके बाद कुलस्त्री के कुलागार-प्रक्षालित-सलिल के द्वारा होम के दशांश संख्या में तर्पण करें। उसके बाद, उक्त कुलागार-प्रक्षालित सलिल के द्वारा तर्पण के दशांश संख्या में अभिषेक करें।।6।।

उसके बाद अभिषेक के दशांश संख्या में ब्राह्मण-भोजन करावें। दिवा-रात्रि-विभेद-क्रम से उक्त कार्यों को यथानियम से सम्पन्न करें।।7।।

उक्त प्रकार से जो व्यक्ति क्रमानुसार (यथारीति, नियमानुसार) उक्त कार्यों को सम्पन्न करता है, उसके लिए त्रिभुवन में कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता।।8।।

वह व्यक्ति बृहस्पति के समान वाग्मी, भृगु के समान कवि, कुबेर के समान धनी एवं सूर्य के समान तेजस्वी बन जाता है।।9।।

हे प्रिय ! जिस मन्त्र के द्वारा होम करने पर साधक अमरता का लाभ करता है, मैं उस साधन को बता रहा हूँ। घृत, रक्त, मांस, नख एवं तिल के द्वारा कालिका-मन्त्र से, श्मशान में दस सहस्र संख्यक होम करने पर उत्तम सिद्धि का लाभ होता है। श्मशान में रक्तधारा एवं मज्जा के द्वारा कालिका का तर्पण करें। मेष, महिष, मूषिक या मार्जार के रक्त के द्वारा कालिका का तर्पण करें।।10-12।।

कविर्भवति वाग्मीकः सर्वसिद्धि-नमस्कृतः।
अयुतैकप्रमाणेन तर्पणं परिकीर्त्तयेत् ॥13॥

पुष्पितायाः कुलागारं दृष्ट्वा जपति यो नरः।
अयुतैकप्रमाणेन साधकः स्थिरमानसः ॥14॥

केवलं गुप्तभावेन स तु विद्यानिधिर्भवेत्।
संस्कृताः प्राकृताः शब्दा वैदिका लौकिकास्तथा ॥15॥

वशमायान्ति ते सर्वे साधकस्य न चान्यथा।
मुक्तकेशो हविष्याशी प्रजप्यादयुतं नरः ॥16॥

नग्नां परस्त्रियं दृष्ट्वा प्रजपेत् स्थिरमानसः।
तस्यालोकनमात्रेण वादिनो निष्प्रभा मताः ॥17॥

राजनोऽपि च दासत्वं भजन्ते किं परे जनाः।
धनकामस्तु यो विद्वान् महदैश्वर्यकामुकः ॥18॥

इस प्रकार होम एवं तर्पण करने पर, साधक कवि एवं वाग्मी बनता है एवं सर्व प्रकार की सिद्धियों का लाभ करता है। दस सहस्र संख्यक तर्पण करें ॥13॥

साधक स्थिरचित्त से पुष्पिता कुलस्त्री के कुलागार का दर्शन कर, दस सहस्र संख्यक कालिका-मन्त्र का गुप्त-रूप से जप करने पर (वह व्यक्ति) विद्यानिधि बन जाता है। संस्कृत, प्राकृत, वैदिक एवं लौकिक – समस्त भाषा ही उस साधक के आयत्ताधीन बन जातीं हैं। इसकी कदापि अन्यथा नहीं होती है। हविष्याशी होकर मुक्तकेश बनकर, अयुत संख्या में मन्त्र जप करें ॥13-16॥

जप काल में नग्ना परकीया कुलस्त्री का दर्शन कर जप करें। जो साधक उक्तविधि के अनुसार मन्त्र-जप करता है, उसके दर्शन मात्र से ही उसके प्रतिपक्षगण तेजहीन बन जाता है ॥17॥

यहाँ तक कि राजा भी उस साधक की भजना दासभाव से करता है, अन्य साधारण लोगों के सम्बन्ध में और कहना ही क्या ? जो व्यक्ति धनकामी है, जो व्यक्ति विद्वान् होने की अथवा जो व्यक्ति महा-ऐश्वर्य की कामना करता है, सभी इस मन्त्र-साधना से तत्तत् काम्यवस्तु को प्राप्त होता है ॥18॥

बृहस्पतिसमो यस्तु भवितुं कामयेन्नरः ।
सर्वो बृहस्पतिसमो भवेच्चैव न संशयः ॥19॥
सुन्दरीं यौवनोन्मत्तां नारीमानीय नित्यशः ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा कुलमामन्त्र्य मन्त्रवित् ॥20॥
मैथुनं यः करोत्येव स तु सर्वं फलं लभेत् ।
तन्मुखे च मुखं च दत्त्वा सहस्त्रं मानसं जपेत् ॥21॥
स भवेत् सर्वसिद्धिदो नात्र कार्यविचारणा ।
सर्वेषां साधनानां मध्ये श्रेष्ठः स्यात् कुलसाधनम् ॥22॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन साधयेत् सुसमाहितः ॥23॥

इति कुमारीतन्त्रे जप-पुरश्चरणविधिर्नाम
पञ्चमः पटलः समाप्तः ॥5॥

जो व्यक्ति बृहस्पति-तुल्य ज्ञानवान् बनने की इच्छा करता है, वह व्यक्ति इस साधना के प्रभाव से बृहस्पतितुल्य ज्ञानवान् बन जाता है, इस विषय में कोई सन्देह नहीं है ।।19।।

प्रतिदिन सुन्दरी यौवनोन्मत्ता कुलयुवती की आनयन पूर्वक पहले कुलागार को अभिमन्त्रित करें, उसके बाद मन्त्रज्ञ साधक अष्टोत्तर शतबार कालिका मन्त्र का जप कर, उस कुलस्त्री के साथ मैथुन में प्रवृत्त हो जावें । इस प्रकार, कुलस्त्री के साथ रतिक्रिया सम्पन्न कर लेने पर, साधक पूर्ण फल का लाभ करता है ।

रतिकाल में कुलयुवती के मुख में मुख को प्रदान कर, एक सहस्त्र-संख्यक मानस जप करें ।।20-21।।

जो व्यक्ति इस प्रकार कार्य करता है, वह सर्वसिद्धिदाता बन जाता है । इस विषय में विचार या वितर्क करना अनावश्यक है । सर्वप्रकार साधन-पद्धतियों में कुलाचार-मत से साधन किया जाना ही सर्वश्रेष्ठ है । अतः सर्वप्रयत्न से अत्यन्त एकाग्रता के साथ कुलाचार-पद्धति से साधन करें ।।22-23।।

कुमारीतन्त्र में जप-पुरश्चरण-विधि नामक
पञ्चम पटल समाप्त ॥5॥

षष्ठः पटलः

कुलाचार - कथनम्

श्रीदेव्युवाच —

देवदेव महादेव जगत्प्रलयकारकः ।
कुलाचारे तु मद्याद्यैः कथं सिद्धिर्भवेत् प्रभो ।
अधर्मकारणं ह्येतत् संशयं छिन्दि मे प्रभो ॥1॥

श्रीभैरव उवाच —

साधु पृष्टो हि देवेशि कथयामि शृणुष्व मे ।
पुरा दारुवने रम्ये मुनयो रागमोहिताः ॥2॥
परस्त्रियं धर्षयन्ति मद्यं पिबन्ति नित्यशः ।
तद्दृष्ट्वानुचितं कर्म विष्णुर्मां समुपस्थितः ॥3॥
देवदेव महादेव सृष्टिस्थिति लयात्मकः ।
प्रभो दारुवने पापा मद्यपानरतास्तथा ॥4॥

कुलाचार-कथन; कालिका-गायत्री; मद्यशोधन मन्त्र; नव प्रकार की कुलकन्याएँ; कुलाचार-पद्धति में पूजा एवं मन्त्र

देवी ने कहा — हे देवदेव महादेव ! आप जगत् प्रलय-कारक हैं । हे प्रभु ! कुलाचारविधि में निर्दिष्ट मद्यादि पञ्चमकार अधर्म अर्थात् पाप-सृष्टि के कारण हैं । अतः वे समुदाय किस प्रकार मन्त्रसिद्धि-प्रदायक हो सकते हैं, उसे प्रकाशित कर, आप मेरे सन्देह को दूर करें ।।1।।

भैरव ने कहा — हे देवेशि ! आपने अति उत्तम प्रश्न किया है । मैं आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ, श्रवण करें । पुराकाल में मुनिगण काममोहित चित्त से रम्य दारुवन में नियत मद्यपान कार्य में एवं पर-स्त्री-धर्षण-कार्य में व्यापृत थे । मुनियों के इन समस्त अन्याय कार्यों का दर्शन कर, विष्णु मेरे निकट उपस्थित हुए ।।2-3।।

तब विष्णु मुझे कहने लगे, हे देवदेव महादेव ! आप सृष्टि, स्थिति एवं लय के कर्त्ता हैं । हे प्रभो ! दारुवन में काममोहित मद्यपायी, पापात्मा, दिगम्बर

परस्त्रियं धर्षयन्ति मुनयो रागमोहिताः ।
दिगम्बराश्च मत्ताश्च किं गतिश्च भविष्यति ।।5।।
इति विष्णुवचः श्रुत्वा तमवादमहं प्रिये ।
कालिकाया महाविद्या अनिरुद्धः सरस्वती ।।6।।
विद्याराज्ञीति सा प्रोक्ता एतन्मन्त्रप्रजपकाः ।
परं मुक्त भविष्यन्ति तद्गायत्रीं जपन्ति च ।।7।।
कालिकायाः प्रभावेन सर्वे देवा विमोहिताः ।
भ्रुणहत्या-मातृवधात् परशुरामो विमोचितः ।।8।।
दत्तात्रेयश्च त्रिपुरः सुरापानाद्विमोचितः ।
ब्रह्महत्या-शिरच्छेदादहं रुद्रोऽपि मोचितः ।।9।।
गौतमस्त्रीधर्षणाच्च देवेन्द्रोऽपि विमोचितः ।
कन्याया धर्षणाद्वापि ब्रह्मावाचं विमोचितः ।।10।।
चाण्डालीगमनाद्वापि वशिष्ठोऽपि विमोचितः ।
रावणस्य वधाच्चापि रामचन्द्रो विमोचितः ।।11।।

एवं पानमत्त मुनिगण पर-स्त्री-गणों का धर्षण कर रहे हैं। इनकी क्या गति होगी ? ।।4-5।।

हे प्रिये ! उस समय विष्णु के इस कथन को सुनकर मैंने कहा – कालिका नामक जो महामन्त्र है एवं अनिरुद्ध जिनकी सरस्वती हैं, जो मन्त्रों में श्रेष्ठ हैं – ये सभी मुनिगण उसी महामन्त्र का जप करते हैं। उस कालिकागायत्री का जप कर, ये सभी श्रेष्ठ मुक्ति का लाभ करेंगे ।।6-7।।

कालिका देवी के प्रभाव से देवगण भी विमोहित हो जाते हैं। कालिका देवी के प्रभाव से परशुराम भ्रूणहत्या एवं मातृवध के पाप से मुक्त हो गये थे ।।8।।

कालिकादेवी के प्रभाव से दत्तात्रेय एवं त्रिपुर, सुरापान के पाप से मुक्त हो गये थे। मैं रुद्र भी स्वयं ब्रह्महत्या या ब्रह्मा के शिरच्छेद-रूप पातक से कालिकादेवी के प्रभाव से ही मुक्तिलाभ किया हूँ ।।9।।

सुरपति इन्द्र भी कालिका देवी के प्रभाव से गुरुपत्नी गौतमी के धर्षण-जनित पाप से मुक्त हो गये थे एवं ब्रह्मा भी कन्या-धर्षण-हेतु उत्पन्न पाप से, वशिष्ठ चाण्डाली-गमन-रूप पाप से एवं रामचन्द्र रावण-वध-जनित पाप से विमुक्त हो गये थे ।।10-11।।

तामेव शृणु वक्ष्यामि श्रुत्वा गोप्या सदाबुधैः।
कालिकायै पदं चोक्त्वा विद्महे पदमेव च ॥12॥
तथा श्मशानवासिन्यै धीमहीति ततः परम्।
तन्नो घोरे पदञ्चोक्त्वा ततः परं प्रचोदयात् ॥13॥
एषा तु कालीगायत्री दशधा जप्तमानया।
ब्रह्महत्यादयः पापाः खण्डखण्डञ्च यान्ति हि ॥14॥
अनया सदृशी-विद्या अनया सदृशो जपः।
अनया सदृशं ज्ञानं न भूतं न भविष्यति ॥15॥
अन्यच्च शृणु देवेशि यथा पानादिकर्म्मणि।
दोषो न जायते देवि मन्त्रान् शृणु वरानने ॥16॥
एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां येन ते नाशयाम्यहम् ॥17॥
सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम् ॥18॥
वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यापोहति ॥19॥

ज्ञानियों के द्वारा यह कालिका-साधन सर्वदा गोपनीय होने पर भी मैं उसे आपको बता रहा हूँ। 'कालिकायै विद्महे, श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो घोरे (पाठान्तर के अनुसार – तन्नः काली) प्रचोदायात्।' यह कालीगायत्री है ।।12-13।।

इस मन्त्र का दस बार जप करने पर, ब्रह्महत्यादि पाप भी विनाश को प्राप्त होता है ।।14।।

कालिकामन्त्र के समान मन्त्र या जप अतीतकाल में भी नहीं था एवं भविष्यकाल में भी नहीं होगा ।।15।।

हे देवेशि ! मद्यपानादि कर्मों के विधानान्तर का श्रवण करें। जिस मन्त्र के सहयोग से मद्यपानादि करने पर किसी प्रकार प्रत्यवाय से ग्रस्त नहीं होते हैं, हे देवि ! हे वरानने ! उस मन्त्र का श्रवण करें ।।16।।

मूल में 17, 18 एवं 19 – इन तीन श्लोकों में तीन मन्त्र दिये गये हैं। उक्त श्लोकत्रय का उच्चारण करते हुए सुराको अभिमन्त्रित करें। उसके बाद,

एवं मन्त्रत्रयेणैव अभिमन्त्र्य सुरां शुभाम् ।
प्रदद्याच्च कालिकायै ततो नैवेद्यमुत्सृजेत् ॥20॥
ब्राह्मणस्ताम्रपात्रे च मधुमद्यं प्रकल्पयेत् ।
नटी कापालिका वेश्या रजकी-नापिताङ्गना ॥21॥
ब्राह्मणी शूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका ।
मालाकारस्य कन्या च नवकन्या प्रकीर्त्तिताः ॥22॥
एतासु काञ्चिदानीय ततस्तु योनिमण्डले ।
पूजयित्वा महादेवीं ततो मैथुन माचरेत् ॥23॥
धर्माधर्म-हविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्त्रुचा ।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहम् ॥24॥
स्वाहान्तोऽयं महामन्त्र आरम्भे परिकीर्त्तितः ।
ततो जपेन्महाविद्यां देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥25॥
योगकाले पठेद्देवि इमं मन्त्रं महेश्वरि ।
प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यामवलोक्योन्मनी श्रुचा ॥26॥

वह कालिका देवी को प्रदान करें । उसके बाद कालिकादेवी को नैवेद्य प्रदान करें ।।17-20।।

ब्राह्मण ताम्रपात्रस्थित मधु को ही मद्य-रूप में कल्पना करें ।

नटी, कापालिका, वेश्या, रजकी, नापिताङ्गना, ब्राह्मणी, शूद्रकन्या, गोपकन्या एवं मालाकार-कन्या – ये नव-कन्या या ग्रहणीया कुलयुवती के रूप में कहीं गयीं हैं ।।21-22।।

इन समस्त कुलयुवतियों के मध्य में अन्यतमा कुलयुवती को ग्रहण कर, उसके शक्ति-मण्डल में कालिका देवी की पूजा करें । उसके बाद उस कुलयुवती के साथ मैथुन में प्रवृत्त होवें ।।23।।

मैथुन में प्रवृत्त होने से पूर्व "ॐ धर्माधर्म हविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्त्रुचा । सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहं स्वाहा" – इस मन्त्र का पाठ करें । उसके बाद रति-संयोग के समय त्रिभुवनेश्वरी कालिका-देवी के मन्त्र का जप करें ।।24-25।।

हे महेश्वरि ! उसके बाद शुक्रत्याग के समय "ॐ प्रकाशाप्रकाश हस्ताभ्यामवलोक्यनीश्रुता । धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णमग्नौ जुहोम्यहं स्वाहा ।" इस मन्त्र

धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णमग्नौ जुहोम्यहम् ।
स्वाहान्तोऽयं भवेन्मन्त्रः शुक्रत्यागे प्रकीर्त्तितः ॥27॥
एतत् श्रुत्वा च वचनं विष्णुरीशमभाषत् ।
नमोऽस्तु ते महेशाय सर्वज्ञानस्वरूपिणे ॥28॥
तत्प्रसादान्महादेव संशयो मे महान् गतः ।
अनुजानीहि देवेश गच्छामि च यथागतम् ॥29॥
ततो मयानुज्ञातः स प्रणम्य च यथाविधि ।
ययौ स्वभवनं विष्णुरेतत्ते कथितं प्रिये ॥30॥

इति कुमारीतन्त्रे कुलाचार नाम
षष्ठः पटलः ॥6॥

का जप करते हुए शुक्रत्याग करें ।।26-27।।

भगवान् विष्णु मेरी इन समस्त उक्तियों का श्रवण करके बोले – हे सर्वज्ञानस्वरूप महेश, आपको नमस्कार । आपके अनुग्रह से मेरा महान् संशय दूरीभूत हो गया है । हे देवेश ! आप आज्ञा करें, मैं यथास्थान गमन करूँ ।।28-29।।

हे प्रिये ! उसके बाद विष्णु मेरी आज्ञा प्राप्त कर, मुझे यथाविधि नमस्कार कर, स्वीय भवन को प्रस्थान किये । आपके निकट इस विष्णुवृत्तान्त का कथन किया गया ।।30।।

कुमारीतन्त्र में कुलाचार नामक
षष्ठ पटल समाप्त ॥6॥

सप्तमः पटलः

पूजास्थाननिर्णयः

भैरव उवाच —

अथ श्रीमन्त्रराजस्य माहात्म्यं शृणु पार्वति ।
श्रुतमात्रेण देवेशि परामुक्तिमवाप्स्यसि ॥1॥

अश्वमेधैश्च गोमेधैर्नरमेधै स्तथा परैः ।
दानैश्च विविधैर्यागैर्होमै र्नानाविधैस्तथा ॥2॥

अनेकपुण्यसम्भारैर्यदि सा प्राप्यते परा ।
विद्याराज्ञी घोरकाली अनिरुद्धः सरस्वती ॥3॥

ज्ञात्वैव मुक्तिमाप्नोति किं पुनः कथ्यते परम् ।
अस्य ज्ञानप्रभावेन सिद्धयोऽष्टौ भवन्ति हि ॥4॥

मन्त्रस्य ज्ञानमात्रेण विजयी भुवि जायते ।
यस्यालोकनमात्रेण वादिनो निष्प्रभा मताः ॥5॥

कालिकादेवी के पूजा-स्थान का निर्णय

भैरव ने कहा — हे पार्वति ! कालिकादेवी के मन्त्रमाहात्म्य का श्रवण करें । इस मन्त्र के श्रवणमात्र से ही साधक परामुक्ति का लाभ करता है ।।1।।

अश्वमेध, गोमेध, नरमेध प्रभृति यज्ञ, विविध प्रकार याग, दान, होम एवं पुञ्जीभूत अनेक पुण्यों के प्रभाव से यदि कालिका देवी के इस परामन्त्र का लाभ होता है, तो मन्त्रश्रेष्ठ घोरकाली मन्त्र एवं अनिरुद्ध सरस्वती के ज्ञान (अर्थात् सिद्धि) लाभ-मात्र से ही मुक्ति-लाभ हो जाता है । अन्य प्रकार क्या बतावें ? इस मन्त्र के ज्ञान (अर्थात् मन्त्रसिद्धि) का लाभ होने पर साधक अष्टसिद्धि का लाभ करता है ।।2-4।।

इस मन्त्र के ज्ञान (अर्थात् मन्त्रसिद्धि) लाभ मात्र से ही साधक पृथिवी में सर्वत्र जय-लाभ करता है एवं उसके दर्शन मात्र से ही उसके विपक्षगण निष्प्रभ हो जाते हैं ।।5।।

राजानोऽपि च दासत्वं भवन्ति किं परे जनाः ।
अग्नेः शैत्यं जलस्तम्भं गतिस्तम्भं विवस्वतः ॥6॥

दिवारात्रिव्यत्ययञ्च स कर्त्तुं भवति क्षमः ।
बृहस्पतिसमो वाग्मी कवित्वे भार्गवोपमः ॥7॥

धनेन कुबेरः स स्यात् तेजसा भास्करोपमः ।
बले च वायुसदृशो विष्णुतुल्यपराक्रमः ॥8॥

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमाः ।
सद्यो निर्दोषमायान्ति मन्त्रस्यास्य प्रभावतः ॥9॥

एतत् संक्षेपतो वक्ष्ये नास्ति तस्य समोऽधुना ।
शैवे सौरे गाणपत्ये चाण्डाले वैष्णवे तथा ॥10॥

नान्यद्विस्तारतो वक्तुं शक्यते परमेश्वरि ।
वक्त्रकोटिसहस्रैश्च जिह्वाकोटिशतैरपि ॥11॥
वर्णितुं नैव शक्नोमि विद्येयं परमाशुभा ॥12॥

राजा भी उस मन्त्रसिद्ध साधक का दासत्व करता है, अन्य लोगों का तो कहना ही क्या ? वह व्यक्ति अग्नि, शैत्य, गति एवं सूर्य को भी स्तम्भित कर सकता है । वह व्यक्ति दिवा-रात्रि के व्यतिक्रम को भी करने में समर्थ होता है । वह व्यक्ति बृहस्पति के समान वाग्मी एवं शुक्र के समान कवित्वशक्ति-सम्पन्न, धन से कुबेर के तुल्य, तेज में सूर्य के तुल्य, बल में वायु के समान एवं विक्रम में विष्णु के समान बन जाता है ।।6-8।।

इस मन्त्र के प्रभाव से ब्रह्महत्या, सुरापान एवं गुरु-पत्नीगमन-जनित पाप तत्क्षण दूरीभूत हो जाता है ।।9।।

सम्प्रति संक्षेप में इस मन्त्र-माहात्म्य का वर्णन आपके निकट किया हूँ । क्या शैव, क्या सौर, क्या गाणपत्य, वैष्णव या चण्डाल – किसी के निकट इस मन्त्र के समतुल्य द्वितीय मन्त्र और नहीं है ।।10।।

हे परमेश्वरि ! शतकोटि मुखों में सहस्रकोटि जिह्वाओं के द्वारा वर्णन करने पर भी इस शुभ मन्त्र के माहात्म्य का वर्णन करने में मैं सक्षम नहीं हूँ ।।11-12।।

देव्युवाच —

पूजाविधिरयं प्रोक्तं कुत्र वा पूज्यते शिवः ।
कुत्र वा ध्यायते देवी देवदेव वदस्व मे ॥13॥

भैरव उवाच —

कामरूपे पूर्णशैले विन्ध्ये चैवोड्डीयानके ।
वाराणस्यान्तु लौहित्ये करतोया-नदीजले ॥14॥
आर्य्यावर्त्ते प्रयागे च ब्रह्मावर्त्ते तथैव च ।
अनन्तफलदा पूजा सर्वत्रैव जले स्थले ॥15॥
तदभावे लतागेहे सिन्दूरादि तिरस्कृते ।
खड्ग-शूल-धनु-कर्त्तृ-चामर-व्यञ्जनादिभिः ॥16॥
वितानध्वजसंकीर्णे दीपावली परिष्कृते ।
सुदन्तीनां सुकेशीनां वेश्यानां गणशोभिते ॥17॥
घण्टानाद-रवाकीर्णे दीपावली-परिष्कृते ।
एवंकृते गृहे पूजा कालिकायाः सुशोभने ॥18॥

देवी ने कहा — आपने पूजा-विधि को कहा है । किन्तु कालिकादेवी की पूजा किस स्थान में करना है या किस स्थान में ध्यान करना है, हे देवदेव महादेव ! आप उसे मेरे निकट वर्णित करें ।।13।।

भैरव ने कहा — कामरूप, पूर्णशैल, विन्ध्यपर्वत, उड्डीयान या वाराणसी में, लौहित्य या करतोया नदी के जल में, आर्य्यावर्त्त, प्रयाग या ब्रह्मावर्त्त में, जल में, स्थल में, सर्वत्र ही की गई पूजा अनन्तगुण फल का दान करता है ।।14-15।।

उन समस्त स्थानों के अभाव में सिन्दूरादि रागरंजित लतागृह में, खड्ग, शूल, धनु, कर्त्तृका, चँवर एवं व्यजन प्रभृति के द्वारा वितान (चन्द्रातप, मण्डप), ध्वज एवं दीपावली प्रभृति से शोभित स्थान में; सुदन्ती, सुकेशी, वेश्याओं से परिवेष्टित, घण्टाध्वनि से निनादित, दीपावली से समुज्ज्वल सुशोभन गृह में कालिका देवी की पूजा करें ।।16-18।।

श्मशाने च सदा पूज्या पीठादप्याधिका मता।
कालिकायाः श्मशानाद विनान्यस्थानं न प्रशस्यते।
तस्मात् श्मशाने पूजा च कर्त्तव्या भूतिमिच्छता ॥19॥

इति कुमारीतन्त्रे पूजास्थाननिर्णयः नाम
सप्तमः पटलः ॥7॥

पीठस्थान से भी श्मशान श्रेष्ठतर है। इसलिए श्मशान में सर्वदा कालिकादेवी की पूजा करें। कालिकादेवी की पूजा के लिए श्मशान की अपेक्षा उत्कृष्टतर स्थान और नहीं है। अतः सिद्धिलाभेच्छु साधक सर्वदा श्मशान में कालिका देवी की पूजा करें ।।19।।

कुमारीतन्त्र में पूजास्थान-निर्णय नामक
सप्तम पटल समाप्त ॥7॥

अष्टमः पटलः

आचार-निर्णयः

श्रीदेव्युवाच —

गायत्री या शुभा प्रोक्ता देवदेव जगत्पते ।
कालिकायाश्चैव पूजा ध्यानं तावत्तथैव च ॥
साधनञ्च महादेव यथावत् वद मे प्रभो ॥1॥

श्रीभैरव उवाच —

गायत्री या पुरा प्रोक्ता ब्रह्मज्ञान स्वरूपिणी ।
श्रीकृष्णस्तु ऋषिस्तस्या गायत्री छन्द एव च ॥2॥
शिवशक्ति स्वरूपा हि देवता परिकीर्त्तिता ।
ध्यानञ्चैव प्रवक्ष्यामि शृणुष्व प्राणवल्लभे ॥3॥
श्मशाने श्रीमहाकालीं देवीं ध्यायेद् दिगम्बरीम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां मुण्डमाला विभूषिताम् ॥4॥
दक्षिणोर्ध्वे धनुर्द्धत्ते वामे चैव तथा शरान् ।
अधः पाशञ्च खड्गञ्च तत् क्रमात् परिकीर्त्तितम् ॥5॥

आचार-निर्णय

देवी ने कहा — हे देवदेव, जगत्पते ! आपने कालिकादेवी की शुभ गायत्री को बताया है । हे महादेव ! हे प्रभो ! आप कालिकादेवी की पूजा, ध्यान एवं साधना-विधि का यथायथरूप में मेरे निकट वर्णन करें ।।1।।

भैरव ने कहा — इससे पूर्व मैंने जिस कालिकागायत्री को बताया है, वह ब्रह्मज्ञान-स्वरूपिणी है । श्रीकृष्ण उस गायत्री के ऋषि हैं एवं गायत्री उसका छन्द है ।।2।।

देवी कालिका ही एकाधार में शिव एवं शक्ति स्वरूपा हैं । हे प्राणबल्लभे ! कालिकादेवी के ध्यान को बता रहा हूँ, श्रवण करें ।।3।।

महाकाली श्मशान में अवस्थिता, दंष्ट्राकरालवदना, मुण्डमाला-विभूषिता, दिगम्बरी, चतुर्भुजा, दक्षिण के ऊर्ध्व बाहु में धनु एवं वाम के ऊर्ध्व बाहु में शरसमूह, दक्षिण-स्थित निम्न बाहु में पाश एवं वामदिकस्थित निम्नबाहु में खड्ग को धारण की हुई हैं – इस रूप में महाकाली का ध्यान करें ।।4-5।।

एवं ध्यात्वा महाकालीं जपेल्लक्षचतुष्टयम्।
रुधिराक्तैः विल्वपत्रै-स्तद्दशांशेन होमयेत् ॥6॥

साधनञ्च महादेवि पूर्ववेद् च समाचरेत्।
अतः परं प्रवक्ष्यामि येनाशु फलदा भवेत् ॥7॥

ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय ताम्बूलपूरितानन:।
प्रातः कृत्यं ततःकृत्वा स्नात्वा चैव यथाविधि ॥8॥

खड्गहस्तः सुराद्यन्तु दद्यान्मांसादिकं बलिम्।
पूजयित्वा यथान्यायं ततःआनीय सुन्दरीम्* ॥9॥

सुन्दरीं यौवनोन्मत्तां सुवेशां चारुहासिनीम्।
कुलजां युवतीं वीक्ष्य नमस्कुर्यात् समाहितः ॥10॥

इस रूप में महाकाली का ध्यान कर, चार लाख मन्त्र का जप करें। उसके बाद रुधिराक्त बिल्वपत्र के द्वारा चालीस हजार संख्यक होम करें ।।6।।

हे महादेवि ! पूर्वकथित नियम से महाकाली की साधना करें। (पूर्वोक्त षष्ठ पटल में कथित कुलाचार पद्धति से महाकाली की साधना करने के लिए, इस स्थल पर कहा जा रहा है)। इसके अनन्तर, जिस भाव से साधना करने पर महाकाली शीघ्र सिद्धिदायिनी बनती हैं, उसे बता रहा हूँ, श्रवण करें ।।7।।

ब्रह्ममुहूर्त्त में शय्या से गात्रोत्थान कर, यथारीति प्रातःकृत्य एवं स्नानादि सम्पन्न करें ।।8।।

साधक खड्गपाणि बनकर, पूजा के समय पहले सुरा एवं उसके बाद मांसादि के द्वारा महाकाली को बलि प्रदान करें। देवी की यथाविधि पूजा कर, पूजा के स्थान में सुन्दरी, यौवनोन्मत्ता, सुवेशा, चारुहासिनी कुलयुवती का आनयन करें। कुलयुवती का दर्शन करते ही पहले उसे मन-ही-मन श्रद्धा के साथ नमस्कार करें ।।9-10।।

---

* किसी-किसी पोथी में इस श्लोक के बाद निम्नोक्त पंक्तियाँ भी देखी जाती हैं –

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहु – (पातकाद्याहु)
स्तत् संसर्गी (संयोगी) च पञ्चमः।

यदि भाग्यवशेनैव कुलदृष्टिः प्रजायते ।
तत्रैव मानसीं पूजां तत्र तासां प्रकल्पये ॥11॥
स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रिय एव विभूषणम् ।
स्त्रीमेलनं सदा कार्यं सुन्दरी भिर्विशेषतः ॥12॥
तासां प्रहारो निन्दा च कौटिल्यमप्रियं तथा ।
सर्वथा च न कर्त्तव्यमन्यथा सिद्धिरोधकृत् ॥13॥
तयैव रचितं पुष्पं तयैव रचितं पयः ।
तद्हस्ताद् रचितं भोज्यं देवताभ्यो निवेदयेत् ॥14॥
पूर्वोक्तं देशमागत्य कपालान्तस्थले विशेत् ।
दिक्कालनियमो नास्ति स्थित्यादिनियमो न च ॥15॥
न जापकालनियमो नार्चादिषु बलिष्वपि ।
स्वेच्छानियमो उक्तोऽत्र महामन्त्रस्य साधने ॥16॥

यदि भाग्यवश साधक कुलदृष्टि प्राप्त करता है, तो पूजा-स्थान में उस कुलयुवती की मानसोपचार से पूजा करें ।।11।।

साधनकाल में कुलस्त्री ही देवीरूपिणी है, कुलस्त्री ही साधक का प्राण है एवं कुलस्त्री को ही साधक के भूषण-रूप में मानें । साधक विशेषरूप से सर्वदा सुन्दरी कुलस्त्रियों के साथ मिलित होवें ।।12।।

कदापि किसी भी कारण से कुलस्त्रियों पर प्रहार न करें या कुलस्त्रियों की निन्दा न करें। उनके साथ अप्रिय वाक्य एवं कुटिल व्यवहार का सर्वदा परित्याग करें । इसके अन्यथाचरण करने पर, सिद्धि-लाभ में प्रतिबन्धकता उत्पन्न होती है ।।13।।

कुलस्त्री के द्वारा आहरित पुष्प एवं जल तथा कुलस्त्री के द्वारा प्रस्तुत आहार्य, देवता को निवेदन करें ।।14।।

श्मशान में गमन कर, साधक नरकपाल-रचित आसन पर उपवेशन करें । इस साधना में दिक या कालाकाल या अवस्थान प्रभृति के विषय में किसी प्रकार के नियम का पालन नहीं करना पड़ता है ।।15।।

इस साधना में जप, अर्चना या बलि प्रभृति किसी विषय में ही कालाकाल-विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस महामन्त्र के साधन में स्वेच्छाचार ही एकमात्र नियम है ।।16।।

पूजयेत् विविधैः पुष्पै-स्तुलसीवर्जितैः शुभैः ।
एवं संपूज्य विधिवत् भोजने कालिकां जपेत् ॥17॥
शक्तिं निशायां संपूज्य विधिवत् साधकोत्तमः ।
सिन्दूरभूषणो नित्यं तथा चैव दिगम्बरः ॥18॥
नारीं दिगम्बरीं कृत्वा विपरीतो भवेत्तदा ।
आलिङ्गनं चुम्बनञ्च कुर्याच्चैव निरन्तरम् ॥19॥
निर्लज्जकामबाणेन सृष्टिसम्पादनोत्सुका ।
तस्मिन् काले साधकेन्द्रो जपेत् संक्षिप्तमानसः ॥20॥
सम्भोगञ्च स्वयं कुर्वन् जपेत् सारस्वतमनुम् ।
इत्याचारपरः श्रीमान् कुलाचारपरः सदा ॥21॥
इह स मानवश्रेष्ठः पश्चान्मुक्तो भवेद् ध्रुवम् ।
वाग्मीयं सर्वविद्यानां सर्वसारस्वत-प्रदः ॥22॥

पूजाकाल में विविध प्रकार के शुभ (मंगलसूचक) पुष्प के द्वारा महाकाली की पूजा करें । पूजा के लिए तुलसी का सर्वदा वर्जन करें । इस प्रकार यथाविधि कालिका की पूजा कर, भोजनकाल में भी कालिका-मन्त्र का जप करें ।।17।।

साधक श्रेष्ठ निशाकाल में कुलस्त्री को शक्तिरूप में ग्रहण कर यथाविधि उसकी पूजा करें । प्रतिदिन सिन्दूर (वर्ण) भूषणों से भूषित होकर साधक दिगम्बर होकर एवं कुलस्त्री को दिगम्वरी-रूप में ग्रहण कर, विपरीत-रति में प्रवृत्त होवें । साधक निरवच्छिन्नरूप में कुलस्त्री को आलिङ्गन एवं चुम्बन करें ।।18-19।।

निर्लज्जरूप से कामबाण से पीड़िता होकर जब कुल-स्त्री सृष्टि-सम्पादन में समुत्सुका बन जाय, तब साधकश्रेष्ठ संक्षिप्त मानसिक जप में प्रवृत्त होवें ।।20।।

अथवा साधक स्वयं कुलस्त्री-संभोग में प्रवृत्त होने पर भी रतिकाल में कालिका-मन्त्र का जप करता रहे । इस प्रकार श्रीमान् (भाग्यवान्) साधक सर्वदा कुलाचार-परायण होकर, कालिका-साधना में प्रवृत्त होवें ।।21।।

इस प्रकार जो व्यक्ति महाकाली की साधना करता है, वह व्यक्ति इहकाल में मानवश्रेष्ठ बनता है एवं देहान्त के बाद मुक्ति-लाभ करता है । यह ध्रुव सत्य है । इस मन्त्र के प्रभाव से साधक वाग्मी बनता है एवं सर्वविद्या तथा ज्ञान का अधीश्वर बनता है ।।22।।

तस्मात् भाव्या महाविद्या कुलाचारः सुदुर्लभः ।
अस्य शास्त्रप्रयुक्तश्चेदाचारं न करोति यः ॥23॥
संशयात् स पापिष्ठो न विद्याफलमश्नुते ।
राजराजेश्वरी विद्या कथिता भुवि दुर्लभा ॥24॥
यस्य ज्ञानप्रभावेन कलयामि जगत् त्रयम् ।
शिवशक्तिपरा देवी नित्यानन्दस्वरूपिणी ॥25॥
सारस्वतप्रदा देवी नित्यानित्यस्वरूपिणी ।
यां ज्ञात्वा मुक्तिमाप्नोति किमन्यत् कथयामि ते ॥26॥

इति कुमारीतन्त्रे आचार-निर्णयो नाम
अष्टमः पटलः ॥8॥

अतः सर्वदा सुदुर्लभ कुलाचार-क्रम-पद्धति से इस महाविद्या की साधना करें । तन्त्रशास्त्रोक्त शक्तिसाधना में प्रवृत्त होकर जो व्यक्ति कुलाचार में रत नहीं होता है या कुलाचार के सम्बन्ध में संशय का पोषण करता है, वह व्यक्ति महापापिष्ठ (महापापी) है एवं उसकी साधना भी फलवती नहीं होती है । महाकाली मन्त्र सर्वमन्त्रों में श्रेष्ठ है एवं पृथिवी पर यह मन्त्र अति दुर्लभ है ।।23-24।।

इस मन्त्र के प्रभाव से मैं त्रिजगत् का पालन कर रहा हूँ । देवी महाकाली स्वयं शिव तथा शक्ति-स्वरूपा हैं एवं नित्यानन्द-स्वरूपिणी हैं । देवी महाकाली ज्ञानदायिनी हैं एवं नित्यानित्य समस्त ही उनका रूप है । कालिका देवी का स्वरूप ज्ञात होने पर, साधक मुक्तिलाभ करता है । सम्प्रति अन्य किस विषय पर बताऊँगा, उसे बतायें ।।25-26।।

कुमारीतन्त्र में आचारनिर्णय नामक
अष्टम पटल समाप्त ॥8॥

नवमः पटलः

श्रीदेव्युवाच —

या विद्या कालिकायाश्च देवदेव जगत्पते ।
कलिनाम्नी युगे घोरे प्रधानां कथयस्व मे ॥1॥

श्रीभैरव उवाच —

श्मशानकालिकायास्तु नान्या काली प्रशस्यते ।
सर्वसिद्धिकारणं स्यात् अनिरुद्ध-सरस्वती ॥2॥
तस्या मन्त्रेण मन्त्री स्यात् कथयामि वरानने ।
पूर्वबीजं महाविद्यां पूर्वबीजत्रयं तथा ॥3॥
कूर्चयुग्मं महाविद्यां कूर्च्यैश्चैकं महेश्वरि ।
लज्जाद्वयं महाविद्या लज्जैकञ्च तथा भवेत् ॥4॥
दक्षिणे कालिके स्वाहा विद्यास्यात् परिकीर्त्तिता ।
एषा विद्या राजविद्या पूजने जपने तथा ॥5॥
ध्याने चैव कुलाचारे विद्याराज्ञी समाश्रिता ।
पूर्वबीजत्रयं चैव वाग्भवं परिकीर्त्तितम् ॥6॥

देवी ने कहा — हे देवदेव, जगत्पते ! कालिकामन्त्रों में, घोर कलियुग में कौन-सा कालिका-मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है, उसे मेरे निकट व्यक्त करें ।।1।।

भैरव ने कहा — श्मशानकालिका मन्त्र की अपेक्षा अन्य कालिका मन्त्र श्रेष्ठतर नहीं है । अर्थात् कालिकामन्त्रों में श्मशानकालिका मन्त्र ही श्रेष्ठ मन्त्र है । यह मन्त्र सर्वसिद्धिप्रदायक है, अनिरुद्ध इस मन्त्र के द्वारा ही मन्त्र सरस्वती बना है । हे वरानने ! मैं श्मशानकालिका के मन्त्र को बता रहा हूँ ।।2-3।।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके, ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा । यह विद्या पूजा एवं जप के विषय में राजविद्या है ।।4-5।।

कुलाचार का अवलम्बन करते हुए ध्यान, पूजा एवं जप के लिए यह मन्त्र सर्वमन्त्रों में श्रेष्ठ है । इसीलिए इसे 'विद्याराज्ञी'कहा जाता है । 'पूर्वबीजत्रय' के अनुसार 'वाग्भवबीज' (ऐं) को समझा जाता है ।।6।।

कूर्चद्वयं महेशानि मोहनं परिकीर्त्तितम् ।
लज्जायुग्मं तथा विद्या मुक्तिदं परिकीर्त्तितम् ।।7।।
दक्षिणे कालिके स्वाहा स्तम्भने परिकीर्त्तितम् ।
उच्चाटने वाग्भवञ्च मोहने वश्यके तथा ।।8।।
मुक्तिदं मारणं चैव फलमेतदुदाहृतम् ।
षट्कर्मणि ततो वक्ष्ये शृणु देवि समाहितः ।।9।।
वज्रपुष्पैः पूजयित्वा सहस्रं होमयेदथ ।
ततः कामकला विद्या निर्लज्जाः काममोहिताः ।।10।।
स्वं स्वं भर्त्तारं संत्यज्य यान्ति लोकत्रयाङ्गनाः ।
अयुतञ्च सदा जप्त्वा ध्यायेद्देवीं दिगम्बरीम् ।।11।।
स्थावरजङ्गमे वापि पातालतलगे तथा ।
आकर्षयति मन्त्रज्ञः किमन्या भूमियोषितः ।।12।।

हे महेशानि ! कूर्चबीजद्वय (हूं हूं) को 'मोहन' शब्द से ('मोहनं' नाम से) अभिहित किया जाता है । लज्जा-युग्म (ह्रीं ह्रीं) एवं कालिका-मन्त्र को 'मुक्तिदाता' नाम से अभिहित किया जाता है ।।7।।

'दक्षिणे कालिके स्वाहा' – यह मन्त्रांश स्तम्भन के लिए प्रयोग किये जाने योग्य है । उच्चाटन, मोहन एवं वशीकरण के कार्य में वाग्भवबीज (ऐं) प्रयोग किये जाने योग्य है ।।8।।

मुक्तिदाता मारणकार्य में फलप्रसू होती है । हे देवि ! इसके अनन्तर मैं षट्कर्मों में कालिका-मन्त्र के प्रयोग को बता रहा हूँ, समाहित चित्त से श्रवण करें ।।9।।

वज्रपुष्प (पाठान्तर के अनुसार, रक्तपुष्प) के द्वारा कालिका की पूजा कर, सहस्र संख्या में होम करें । उसके बाद कामकला (कुण्डलिनी) के सहयोग से मन्त्र जप करने पर स्वर्ग, मर्त्य एवं पातालस्थित अङ्गनाएँ स्व-स्व भर्त्ताओं का परित्याग कर निर्लज्जा एवं काममोहिता होकर साधक के समीप आगमन करती हैं । सर्वदा षट्कर्मों में देवी को दिगम्बरी-रूप में ध्यान कर, अयुत संख्या में मन्त्र जप करें ।।10-11।।

इस मन्त्र के प्रभाव से स्थावर-जंगम एवं पाताल-तल-स्थित युवतीगण भी आकर्षित हो जाती हैं, भूमण्डलवासिनी योषितों के सम्बन्ध में और क्या कहना ? ।।12।।

हुत्वायुतं श्मशाने तु ध्यात्वा देवीं दिगम्बरीम्।
त्तद्भस्म तिलकं कृत्वा ततोऽसौ मोहयेज्जगत्॥13॥

श्वेतपुष्पैः पूजयित्वा ध्यात्वा चैव दिगम्बरीम्।
हुत्वायुतं श्मशाने च किमन्योच्चाटने ध्रुवम्॥14॥

नारीं नीत्वा श्मशाने च दृष्ट्वा च योनिमण्डलम्।
हुत्वायुतं श्मशाने च स च सिद्धिर्भवेत् ध्रुवम्॥15॥

नारीं नीत्वा श्मशाने तु दृष्ट्वा तद्योनिमण्डलम्।
जपित्वा तु वशीकुर्याद् यदि सा न पलायते॥16॥

कृष्णपुष्पैः पूजयित्वा ध्यात्वा चैव दिगम्बरीम्।
जप्त्वायुतं श्मशाने च शत्रूणां मरणं भवेत्॥17॥

श्मशान में अयुत संख्यक होम कर, देवी को दिगम्बरीरूप में ध्यान कर, मन्त्र जप करें। उसके बाद उस होम-भस्म के द्वारा कपाल में तिलक करने पर त्रिजगत् मोहित हो जाता है ।।13।।

श्वेत पुष्प के द्वारा पूजा कर, देवी को दिगम्बरी रूप में ध्यान कर, श्मशान में अयुत संख्या में होम करने पर निश्चय ही अभीष्ट व्यक्ति का उच्चाटन हो जाता है ।।14।।

कुलयुवती को श्मशान में आनयन कर, तदीय कुलागार का दर्शन कर, श्मशान में अयुत संख्या में होम करने पर, साधक अभीष्ट कार्य में निश्चय ही सिद्धि लाभ करता है ।।15।।

कुलयुवती को श्मशान में आनयन कर, तदीय कुलागार का दर्शन कर, जप करने पर, वशीकरणकार्य में सिद्धिलाभ होता है। किन्तु यदि जपकाल में कुलस्त्री श्मशान से पलायन करती है, तो सिद्धिलाभ नहीं होता है ।।16।।

कृष्णपुष्प के द्वारा कालिकादेवी की पूजा कर, देवी को दिगम्बरी रूप में ध्यान कर,श्मशान में अयुतसंख्यक मन्त्र-जप करने पर, शत्रुओं की मृत्यु हो जाती है ।।17।।

कालीकल्पमिदं प्रोक्तं गोपयेत् मातृजारवत्।
गोपने सर्वसिद्धिः स्यात् प्रकाशे मरणं ध्रुवम्॥18॥

इति कुमारीतन्त्रे कलियुगवर्णने कालीकल्पं नाम
नवमः पटलः॥9॥

हे देवी ! आपके निकट यह जो 'कालीकल्प' बताया हूँ, उसे मातृजार के समान सर्वदा गोपन करें। गोपन करने पर ही साधना में सर्वसिद्धियों का लाभ होता है। इसे प्रकाशित करने पर साधक की मृत्यु निश्चित है॥18॥

कुमारीतन्त्र में कलियुगवर्णन में कालीकल्प नामक
नवम पटल समाप्त॥9॥

परिशिष्ट

[1]रुद्रयामलोत्तरखण्डीयषष्ठपटले
अथ वर्षभेदेन कुमारीभेदः

एकवर्षा भवेत्सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती ।
त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा च कालिका ॥1॥
सुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च भवेदुमा ।
सप्तभिर्भिल्लिनी साक्षादष्टवर्षा तु कुब्जिका ॥2॥
नवभिः कालसन्दर्भा दशभिश्चापराजिता ।
एकादशे तु रुद्राणी द्वादशाब्दे तु भैरवी ॥3॥
त्रयोदशे महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका ।
क्षेत्रज्ञा पञ्चदशभिः षोडशे चाम्बिका मता ॥4॥
एवं क्रमेण संगृह्य यावत्पुष्पं न जायते ।
प्रतिपदादिपूर्णान्तं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥5॥

रुद्रयामल के उत्तर खण्ड के षष्ट पटल में वर्षभेद से कुमारीभेद का इस प्रकार वर्णन है : एक वर्ष की कुमारी सन्ध्या और दो वर्ष की सरस्वती कहलाती हैं । तीन वर्ष की त्रिधामूर्ति और चार वर्ष की कालिका कहलाती है । पाँच वर्ष की सुभगा और छः वर्ष की उमा कहलाती है । सात वर्ष की भिल्लिनी और आठ वर्ष की साक्षात् कुब्जिका कहलाती है । नव वर्ष की कालसन्दर्भा तथा दश वर्ष की अपराजिता कहलाती हैं । ग्यारह वर्ष की रुद्राणी तथा बारह वर्ष की भैरवी कहलाती है । तेरह वर्ष की महालक्ष्मी और चौदह वर्ष की पीठनायिका कहलाती है । पन्द्रह वर्ष की क्षेत्रज्ञा और सोलह वर्ष की अम्बिका कहलाती है । इस प्रकार क्रम से संग्रह करके, जब तक उनमें पुष्प न उत्पन्न हो, तब तक प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमापर्यन्त वृद्धिभेद से पूजा करें ।

---

1. बृहन्नीलतन्त्रेपि : एक वर्षेत्यादि सर्वं एवमेव केवलं द्विसप्त नायिका स्मृता इति भेदः ।

विश्वसारे तु –

अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने ।
नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका ॥6॥
अत ऊर्ध्वं महामाया भवेत्सैव रजस्वला ।
आरभ्य द्वादशाब्दाच्च यावद्विंशतिसंख्यकम् ॥7॥
सुकुमारी च सा प्रोक्ता सर्वतन्त्रसमन्विता ।
या पाषाणधातूनां तेजोरूपेण संस्थिता ॥8॥
जीवजन्तुषु देवेशि किं वक्तव्यमतः परम् ।
यत्र नास्ति महामाया तत्र किञ्चिन्न विद्यते ॥9॥

विश्वसार तन्त्र के अनुसार – हे वरानने ! वह कुमारी आठ वर्ष में गौरी हो जाती है । वही नव वर्ष में रोहिणी तथा दश वर्ष में कन्यका कहलाती है । इसके बाद वह महामाया हो जाती है और वही रजस्वला कहलाती है । बारह वर्ष से बीस वर्ष तक उसे सब तन्त्रों में सुकुमारी कहा गया हैं जो पाषाण धातुओं के तेजोरूप में स्थित है । हे देवि ! समस्त जीव-जन्तुओं में यही स्थिति है । इससे अधिक क्या कहा जा सकता है । जहाँ पर महामाया नहीं है, वहाँ कुछ भी नहीं है ।

कुब्जिकातन्त्रे सप्तमपटले तु विशेष –

पञ्चमाब्दात्समारभ्य यावद्द्वादशवार्षिकी ।
कुमारी सा भवेर्द्देवी निजरूपप्रकाशिनी ॥10॥
षड्वर्षा च समारभ्य यावच्च नवावार्षिकी ।
तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये ॥11॥
अष्टवर्षां समारभ्य यावत्त्रयोदशब्दिकी ।
कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समाचरेत् ॥12॥
दशवर्षां समारभ्य यावत्षोडशवार्षिकी ।
युवतीं तां विजानीयाद्देवतान्तां विचिन्तयेत् ॥13॥

कुब्जिका तन्त्र के सप्तम पटल में यह विशेष है – पाँच वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की कन्या, हे देवि ! अपने रूप को प्रकाशित करने वाली कुमारी कहलाती है । छह वर्ष से लेकर नव वर्ष तक की कन्या, हे महेशानि ! साधक की अभीष्टसिद्धि के लिए उपयुक्त होती है । आठ वर्ष से लेकर तेरह वर्ष की अवस्था तक की कन्या कुलजा कहलाती है और उसमें पूजा करनी चाहिए ।

दर्श वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक अवस्था वाली युवती कहलाती है । उसे देवता के समान समझना चाहिए ।

यामले तु विशेषः –

द्वितीयवत्तरादूर्ध्वं यावत्स्यादष्टमाब्दकम् ।
तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुन्दरमोहिनीम् ॥14॥

यामल में इस प्रकार कुछ विशेष कहा गया है – दूसरे वर्ष से ऊपर जबतक आठ वर्ष तक की हो तब तक सुन्दर मोहिनी कन्या की जप और पूजा करनी चाहिये ।

अथ कुमारीणां वर्णभेदो यथा

रुद्रयामले उत्तरखण्डे सप्तमपटले –

नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम् ।
रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम् ॥15॥
गोपालकन्यकाञ्चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम् ।
शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् ॥16॥
चाण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् ।
सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः ॥17॥

रुद्रयामल के उत्तर खण्ड के सातवें पटल में कुमारियों का वर्णभेद इस प्रकार वर्णित है — नटी की कन्या, हीन जाति की कन्या, कापालिक की कन्या, धोबी की कन्या, नाई की कन्या, गोपालक की कन्या, ब्राह्मण की कन्या, शूद्र की कन्या, वैश्य की कन्या, वैद्य की कन्या और चाण्डाल की कन्या, चाहे जिस किसी आश्रम में स्थित हो, और सुहृद्वर्ग की कन्या : इसमें से किसी भी कन्या को प्रयत्न पूर्वक लायें ।

योगिनीतन्त्रे –

तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम् ।
जातिभेदो न कर्त्तव्यः कुमारीपूजने शिवे ॥18॥
जातिभेदान्महेशानि नरकान्तर्निवर्तते ।
विचिकित्सापरो मन्त्री ध्रुवं स पातकी भवेत् ॥19॥
देवीबुद्ध्या महाभक्तस्तस्मात्तां परिपूजयेत् ।
सर्वविद्यास्वरूपा हि कुमारी नात्र संशयः ॥20॥

यदि भाग्यवशाद्देवि वेश्याकुलसमुद्भवाम् ।
कुमारीं लभते कान्ते सर्वस्वेनापि साधकः ॥21॥
यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णरौप्यादिभिर्मुदा ।
तदा तस्य महासिद्धिर्जायते नात्र संशयः ॥22॥

योगिनी तन्त्र के अनुसार – इसलिये सब जातियों में उत्पन्न कन्याओं की पूजा करनी चाहिए । हे शिवे, कुमारीपूजन में जातिभेद नहीं करना चाहिये । हे महेशानि ! जातिभेद करने से साधक नरक में जाता है । शङ्का में पड़ा हुआ मन्त्रसाधक निश्चित रूप से पातकी होता है । इसलिए देवीबुद्धि से कुमारी का पूजन करना चाहिए । कुमारी समस्त विद्यास्वरूपा है । इसमें कोई संशय नहीं है । हे देवि ! यदि भाग्य से वेश्या-कुलोत्पन्न कोई कुमारी सर्वस्व देकर भी मिल जाय तो साधक को यत्नपूर्वक स्वर्ण, रौप्य आदि देकर प्रसन्न होकर उसकी पूजा करनी चाहिये । तब साधक को महासिद्धि की प्राप्ति होती है । इसमें कोई संशय नहीं है ।

अथ कुमारीदानक्रमफलम्

विवाहयेत्स्वयं कन्यां ब्रह्महत्या विनश्यति ।
यो यश्च पुण्यकाले तु कन्यादानं समापयेत् ॥23॥
भुक्तिमुक्तिफलं तस्य सौभाग्यं सर्वसम्पदः ।
रुद्रलोके वसेन्नित्यं त्रिनेत्रो भगवान्हरः ॥24॥
तीर्थकोटिसहस्राणि अश्वमेधशतानि च ।
तत्फलं लभते मर्त्यो यस्तु कन्यां विवाहयेत् ॥25॥
वालुकाः सागरे ज्ञेयास्तावदब्दसहस्रकम् ।
एकैकं कुलमुद्धृत्य रुद्रलोके महीयते ॥26॥
तत्तदिष्टदेवतायाः प्रीतये तुष्टये सुधीः ।
कन्यादानं समाहृतय मुक्तिमाप्नोति भैरव ॥27॥
तत्तज्जातीयकन्यायास्तत्तद्बुद्ध्या च साधकः ।
विभाव्य शिवरूपत्वं सम्प्रदानीयकन्यके ॥28॥
पूर्णरूपं शिवं ध्यात्वा वरं सर्वाङ्गसुन्दरम् ।
तेजोमयं यशः कान्तं कालभैरवरूपिणम् ॥29॥
बटुकेशं महादेवं वरयेत्साधकाग्रणीः ।

कन्या का स्वयं विवाह कराना चाहिए । जो पुण्यकाल में कन्यादान करता है उसका ब्रह्महत्या का पाप नष्ट हो जाता है । उसको भोग, मोक्ष सब प्राप्त होता

है। उसे सौभाग्य और सारी सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं। वह रुद्र लोक में त्रिनेत्र शिव के रूप में नित्य निवास करता है। जो कन्या का विवाह कराता है, वह करोड़ों तीर्थों और हजारों अश्वमेधों को फल प्राप्त करता है। बालू के सागर में जितने बालू के कण हैं, उतने वर्षों तक अपने प्रत्येक कुल का उद्धार करके रुद्र-लोक में शोभा पाता हे। तत्तदिष्ट देवता की प्रसन्नता के लिए बुद्धिमान् साधक, हे भैरव, कन्यादान करके मुक्ति प्राप्त करता है। तत्तज्जाति की कन्याओं को उस बुद्धि से कन्या में शिवरूपत्व की भावना करके साधक विवाहनीय कन्या में सर्वाङ्गसुन्दर, तेजोमय यशस्वी, काल भैरवरूपी, पूर्ण शिव का ध्यान करके वटुकेश महादेव से वर माँगे।

बालारूपाञ्च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् ॥30॥
नानालंकारनम्राङ्गी भद्रविद्याप्रकाशिनीम्।
चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥31॥
ध्यात्वा द्वादशपत्राब्जे पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।
सम्प्रदानं समानीय तत्तन्मन्त्रेण दापयेत् ॥32॥

बारह पंखड़ियों वाले कमल पर बैठी बालारूप, त्रैलोक्यसुन्दरी, वरवर्णिनी, नाना अलंकारों से सुशोभित, भद्र विद्याओं को प्रकाशित करने वाली, चारुहासिनी, महानन्दहृदया, शुभदा, शुभा, पूर्ण चन्द्रमुखी देवी का ध्यान करके जिस कुलकुमारी को देना हो, उसे लाकर मन्त्र से प्रदान करें।

अथ कुमारीपूजाप्रयोगः –

पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्र्य प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कुर्यात्। केशान् परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे चन्दनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफलप्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्य न्यासान् कुर्यात्।

अथ कुमारीपूजाप्रयोग – पूजादिन से पूर्व दिन गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा मूलमन्त्र से 'भगवति कुमारी पूजार्थ त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थय' इस प्रकार निमन्त्रण देकर प्रातः बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उद्वर्तन आदि से

स्नान कराकर तेल से शरीर का संस्कार करे। केशों को परिष्कृत करके, ललाट में सिंदूर, आँखों में काजल तथा सर्वाङ्ग में चन्दन लगाकर वस्त्रालङ्कारों से आभूषित कर पादप्रक्षालन करके अष्टदल पीठ पर उसे बैठाकर ताम्बूल से मुख शुद्ध करके देशकाल का स्मरण करके "अमुक फल प्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके इस प्रकार न्यास करे।

हृदयादिषडङ्गन्यास – ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय नमः ।।1।। ॐ क्लीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा ।।2।। ॐ क्लूं कुलकुमारिके शिखायै वषट् ।।3।। ॐ क्लैं कुलकुमारिके कवचाय हुम् ।।4।। ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ।।5।। ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ।।6।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार करन्यास भी करें। तदनन्तर ध्यान करें।

अथ धनाम्

ॐ शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम्। चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभावविराजिताम् ॥1॥ बालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम्। नानालंकारनम्राङ्गीम्भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥2॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥3॥

एवं ध्यात्वाऽत्मशिरसि करं दत्त्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य गन्धादिपूजनं कुर्यात्। तथा च : ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्सौः सन्ध्यायै कुयार्यै नमः। एवं पूर्वबीजान्युच्चार्य्य सरस्वत्यै कुमार्य्यै नम इत्यादिवत्सरानुक्रमेण चतुर्थ्यन्तेन नाम्ना आसनादिभिः षोडशभिरुपचारैः सम्पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके अपने शिर पर हाथ रखकर मानसोपचार से पूजा करके गन्धादि से इस प्रकार पूजा करें — "ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्सौः सन्ध्यायै कुमार्य्यै नमः।" इस प्रकार पूर्व वीजमन्त्रों का उच्चारण करके 'सरस्वत्यै कुमार्य्यै नमः' इत्यादि वर्ष के क्रम से चतुर्थ्यन्त नाम से आसन आदि षोडशोपचारों से इस प्रकार पूजा करें :

ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्सौः कुलकुमारिकायै नमः। जलं समर्पयामि ॥1॥ इदं पाद्यमेवमिदमर्ध्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति पूजयित्वा षडङ्गन्यासविधिना षडङ्गानि पूजयेत्।

"ऐं ह्रीं श्रीं हूँ ह्सौः कुलकुमारिकायै नमः जलं समर्पयामि ।।1।। इसी मन्त्र से 'जलं' के स्थान पर पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, अनुलेपनं, अक्षतं, पुष्पं, धूपं,

दीपं, नैवेद्यं ताम्बूलं आदि को भी रख कर समर्पित करें। (यथा : "ऐं ह्रीं श्रीं हूँ ह्सौः कुलमारिकायै नमः। पाद्यं समर्पयामि" इत्यादि। इसके बाद षडङ्गन्यासविधि से इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करें।

तत्र क्रमस्तु कुमार्या हृदयं दक्षिणहस्तेन धृत्वा महातेजोमयं शुक्लवर्णं विभाव्य।

इसमें क्रम यह है – दाहिने हाथ से कुमारी के हृदय को स्पर्श करके 'यह महातेजोमय और शुक्लवर्ण है' ऐसी भावना करके।

ऐं ह्रीं श्रीं हूं ह्सौः कुलकुमारिके हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि। इति सर्वत्र।

शिरः शुक्लवर्णं सर्वमयं विभाव्य।

'शिर शुक्लवर्ण और सर्वमय है' ऐसी भावना करके — हैं ह्रीं श्रीं ऐं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपा० 2।

शिखां नीलाञ्जनप्रभां विभाव्य।

'शित्वा नीलाञ्जन के समान है' ऐसी भावना करके — श्रीं कुलकुमारिके शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० 3।

कवचं प्रथमारुणसंकाशं सुतेजस्कं विभाव्य।

'कवच प्रथम अरुण के समान तेज युक्त है' ऐसी भावना करके — ऐं कुलकुमारिके कवचाय हुं। कवचश्रीपा० 4।

ततो नेत्रत्रयं सर्वबीजमयं महाप्रभं रक्तवर्णं कोटिपूजापुष्पोज्ज्वलं विभाव्य।

इसके बाद, 'नेत्रत्रय सर्ववीजमय, महाप्रभ, रक्तवर्ण कोटि जपापुष्पों के समान उज्ज्वल है' ऐसी भावना करके — ऐं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० 5। ह्रीं कुलकुमारीके अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० 6।

इति षडङ्गानि पूजयित्वा षोडशनामभिः षोडशवारं पूजयेत्।

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके षोडश नामों से षोडश बार इस प्रकार पूजा करें — ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः 1। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः 2। ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः 3। ॐ ऐं कालिकायै नमः 4। ॐ ऐं सुभगायै नमः 5। ॐ ऐं उमायै नमः 6। ॐ ऐं मालिन्यै नमः 7। ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः 8। ॐ ऐं कालसङ्कर्षिण्यै नमः 9। ॐ ऐं अपराजितायै नमः 10। ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः 11। ॐ ऐं भैरव्यै नमः 12। ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः 13। ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः 14। ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः 15। ॐ ऐं चर्चिकायै नमः 16।

इति सम्पूज्य नवनामभिः पूजयेत्।

इस प्रकार पूजा करके नव नामों से इस प्रकार पूजा करें —

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः 1। ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः 2। ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः 3। ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः 4। ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः 5। ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः 6। ॐ ह्रीं शाङ्कर्यै नमः 7। ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः 8। ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः 9।

इति नामभिः सम्पूज्य "ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञ्जलिं समपर्यामि।" इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा तत्राङ्गे स्वेष्टदेवीमावाह्य सम्पूज्य प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत्।

इस प्रकार नामों से पूजा करके 'ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि' इससे तीन पुष्पाञ्जलि देकर उसके अंग में अपनी इष्टदेवी का आवाहन करके पूजा तथा प्रदक्षिणा करने के बाद इस प्रकार प्रणाम करें :

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥1॥
त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥2॥
कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥3॥
अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्।
शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥4॥
कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥5॥
चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्।
प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥6॥
सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं पूजयाम्यहम् ॥7॥
दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥8॥
सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥9॥

इति प्रणम्य ततस्तस्याः कुण्डबिले सपरिवारं बालभैरवं ध्यात्वा "ॐ कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः ।" एवं गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूजयेत् ।

इस प्रकार प्रणाम करके उसके कुण्डविल में सपरिवार बालभैरव का 'ॐ कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः' इस मन्त्र से गन्ध-पुष्पों द्वारा पूजा करें ।

ततः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं ह्सौः कुलकुमारिके नमः स्वाहा ।

इति कुमारीमूलमन्त्रं स्वीयमन्त्रं वा यथाशक्ति जपित्वा प्राणायामं कृत्वा जपं समर्प्य स्तवकवचादिकं पठित्वा अष्टाङ्गं पञ्चाङ्गं वा प्रणम्य दक्षिणां दद्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जन-ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ।

इसके बाद "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं ह्सौः कुलमारिके नमः स्वाहा" इस कुमारी मूलमन्त्र का या स्वीय मन्त्र का यथाशक्ति जप करके प्राणायाम के पश्चात् जप समर्पित करें । तदुपरान्त स्तोत्र, कवचादि का पाठ करके अष्टाङ्ग या पञ्चाङ्ग प्रणाम करके दक्षिणा देवें । इसका पुरश्चरण एक लाप जप है । जप से तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करें ।

अथ वक्ष्ये महादेव कुमार्या जपहोमकम् ।
लक्षसंख्याजपं कृत्वा मायां वा वाग्भवं रमाम् ॥1॥
कालीवीजं वापि नाथ मायां वा कामबीजकम् ।
सदाशिवेन पुटितं बिन्दुचन्द्रविभूषितम् ॥2॥
अथवा प्रणवेनापि पुटितं त्रिदशेश्वरं ।
जपित्वा मूलमन्त्रञ्च लक्षसंख्या विधानतः ॥3॥
तद्दशांशेन महाहोमं घृताक्तैर्बिल्वपत्रकैः ।
अथवा श्वेतपुष्पैश्च कुंदपुष्पैर्महाफलम् ॥4॥
एवं क्रमेण जुहुयात्करवीरप्रसूनकैः ।
घृताक्तैः केवलैर्वापि चन्दनागुरुमिश्रितैः ॥5॥

हे महादेव ! अब मैं कुमारी के जप और होम का वर्णन करूँगी । हे नाथ ! माया (ह्रीं) या वाग्भव (ऐं) या रमा (श्रीं) या काली (क्रीं) अथवा कामबीज (क्लीं) को विन्दुचन्द्र-विभूषित सदाशिव (हौं) से सम्पुटित कर एक लाख जप करें । अथवा हे त्रिदशेश्वर ! प्रणव (ॐ) से सम्पुटित मूलमन्त्र का विधानपूर्वक एक लाख जप करके उसका दशांश घृताक्त बिल्वपत्रों से, अथवा श्वेत पुष्पों से या

कुन्द के पुष्पों से होम करने से महाफल प्राप्त होता है । इसी प्रकार क्रम से घृताक्त कनेर के पुष्पों से या केवल कनेर के पुष्पों अथवा चन्दन-अगर मिश्रित कनेर के पुष्पों से होम करना चाहिये ।

हविष्याशी दिवा भागे रात्रौ पुजापरो भवेत् ।
निजपूजावशेषैस्तु कुलद्रव्यैः प्रपूजयेत् ॥6॥
रविसंख्यं जपेत्तत्र परमानन्दरूपधृक् ।
जपान्ते जुहुयान्मन्त्री मदुक्तद्रव्यसंयुतैः ॥7॥
ततः प्राणात्मकं वायुं शोधयित्वा पुनः पुनः ।
प्राणायामत्रयं कृत्वा चाष्टाङ्गैः प्रणमेन्मुदा ॥8॥
प्रणामसमये नाथ इदं स्तोत्रं पठेद्यतिः ।
कवचं च तथा पाठ्यं कुमारीणामथापि वा ॥9॥
निजदेव्या महास्तोत्रं पठेद्धि कवचं ततः ।
कुमारीणां महादेव सहस्त्रं नाम साष्टकम् ॥10॥
पठित्वा सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।
तदशक्तौ स्वदेव्यास्तु सहस्त्रनाम मंगलम् ।
अष्टोत्तरं पठेन्नाथ सिद्ध्याकांक्षी न संशयः ॥11॥
तासां स्तोत्रं शुभं नाथ श्रृणु सर्वत्र मंगलम् ।
अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति पठित्वा साधकोत्तमः ॥12॥

दिन में हविष्याशी होते हुए पूजा तत्पर होना चाहिये । शिवपूजन से अवशिष्ट कुल द्रव्यों से पूजा करनी चाहिए । इसके बाद परमानन्दरूप धारण करके बारह जप करें और जप के अन्त में मेरे द्वारा उक्त द्रव्यों से साधक होम करें । इसके बाद प्राणवायु का पुनः पुनः शोधन करके तीन प्राणायाम करके मुदित मन से साष्टाङ्ग प्रणाम करें । हे नाथ ! प्राणायाम के समय यति इस स्तोत्र का और कवच का पाठ करें, अथवा कुमारियों या निजदेवी के महास्तोत्र का और कवच का पाठ करें । हे महादेवि ! कुमारियों के अष्टोत्तरसहस्रनाम का पाठ करके साधक सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है । इसमें अशक्त होने पर स्वदेवी का अष्टोत्तर सहस्रनाम मङ्गलकारी होता है । हे नाथ ! सिद्धि के आकांक्षी को निःसंशय इसे पढ़ना चाहिये । हे नाथ सुनिये ! उन देवियों के शुभ स्तोत्र सर्वत्र मङ्गलकारी होते हैं और उत्तम साधक उनके पढ़ने से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त करता है ।

अग्रे संस्थाप्य तास्सर्वा रत्नकोटिसुशीतलाः ।
ततः स्तोत्रं पठेद्धीमान् समाहितमना वशी ॥13॥
महादिव्याचाररतो वीरभावोल्बणोऽपि वा ।
एवं क्रमेण प्रपठेद्भक्तिभावपरायणः ॥14॥
महाविद्यामहासेवाभक्तिश्रद्धाप्लुतार्पितः ।
महाज्ञानी भवेत्क्षिप्रं वाञ्छासिद्धिमवाप्नुयात् ॥15॥

अपने आगे करोड़ों रत्नों से भी अतिशीतल उन सभी कुमारी देवियों को स्थापित करके समाहित चित्त होकर बुद्धिमान जितेन्द्रिय साधक स्तोत्र का पाठ करे । वह चाहे दिव्याचाररत हो या वीरभावोल्बण, उसे भक्तिभावपरायण होकर क्रम से स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । साधक महाविद्या, महासेवा, महाभक्ति तथा महाश्रद्धा से युक्त होकर यदि पाठ करे तो शीघ्र ही महाज्ञानी होकर इच्छानुसार सिद्धि प्राप्त करता है ।

कुब्जिकातन्त्रे –

अन्नं वस्त्रं तथा नीरं कुमार्य्यै यो ददाति हि ।
अन्नं मेरुसमं देवी जलं च सागरोपमम् ॥16॥
वस्त्रैः कोटिसहस्राब्दशिवलोके महीयते ।
पूजोपकरणानीह कुमार्य्यै यो ददाति हि ।
सन्तुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वे सानुकल्पते ॥17॥

कुब्जिका तन्त्र में कहा गया है कि जो मनुष्य कुमारी को अन्न, वस्त्र तथा जल देता है, उसका अन्न पर्वत के समान तथा जल समुद्र के समान असीम हो जाता है । वस्त्र देने से वह खरबों वर्षों तक शिवलोक में निवास करता है । जो कुमारी को पूजोपकरण देता है उससे संतुष्ट होकर देवता उसके पुत्र रूप में उत्पन्न होते हैं ।

योगिनीतन्त्रे पूर्वखण्डे सप्तदशपटले –

कुमारीपूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुन्दरि ।
जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि ॥18॥

योगिनी तन्त्र के पूर्वखण्ड के सत्रहवें पटल में कहा गया है कि, हे सुन्दरि, मैं कुमारीपूजन का फल सहस्रकोटि जिह्वाओं और शतकोटि मुखों से भी कहने में असमर्थ हूँ ।

यामलेपि –

कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः ।
महापुण्यतमो भूयात्सम्मन्तात्क्राशपञ्चकम् ॥19॥

यामल में भी कहा गया है कि जिस देश में कुमारी-पूजन होता है वह देश समस्त पृथिवी पर पवित्र स्थान हो जाता है । उस स्थान के चारों ओर पाँच कोश तक समस्त भू-भाग पुण्यतम हो जाता है ।

महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके ।
महानवम्यां देवेशि कुमारीं च प्रपूजयेत् ॥20॥

हे पवित्र देवेशि ! महापर्वों पर विशेष रूप से महानवमी में कुमारी की पूजा करनी चाहिये ।

तस्मात्षोडशपर्यन्तं युवतीति प्रचक्षते ।
तत्र भावप्रकाशस्स्यात्स भावः परमो मतः ॥21॥
रक्षितव्याः प्रयत्नेन अक्षतास्ताः प्रकारयेत् ।
महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालङ्कारभोजनैः ॥22॥
पूजयेन्मन्दभाग्योपि लभते जयमङ्गलम् ।
अन्येषां कथने नाथ प्रयोजनमहाफलम् ॥23॥

इसलिये कुमारी षोडश वर्ष पर्यन्त युवती कही जाती है । उसमें भावप्रकाश हो जाता है । भाव ही श्रेष्ठ माना गया है । उसकी प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये । उसे अक्षतयोनि के रूप में यत्नपूर्वक रखना चाहिये । वस्त्र, अलङ्कार और आभूषणादि से कुमारी की महापूजा आदि यदि मन्द भाग्यवाला भी करता है तो वह जय और मङ्गल को प्राप्त करता है । हे नाथ ! दूसरे को जो कन्या पूजन की बात बताता है, उसे महाफल प्राप्त होता है ।

विधिना पूजयेद्यस्तु दिव्यवीरपशुस्थितः ।
भावत्रये महासौख्यं दिव्यकर्मणि सत्फलम् ॥24॥
दिव्यभावस्थितस्साक्षात्तन्त्रमन्त्रफलं लभेत् ।
कुमारीपूजनादेव कुमारीभोजनादिभिः ॥25॥

जो व्यक्ति दिव्य भाव में, वीर भाव में या पशु भाव में स्थित होकर विधि पूर्वक कुमारीपूजन करता है, उसे महासुख प्राप्त होता है । तीनों भावों में कुमारी पूजन रूप दिव्य कर्म करने पर उत्तम फल प्राप्त होता है । दिव्य भाव में स्थित

होकर जो मनुष्य कुमारी पूजन करता है या कुमारियों को भोजन कराता है उसे तन्त्र-मन्त्र का साक्षात् फल मिलता है ।

एकद्वित्र्यादिबीजानां फलदा नात्र संशयः ।
ताभ्यः पुष्पं फलं दत्त्वा अनुलेपादिकं तथा ॥26॥
वालप्रियं च नैवेद्यं दत्त्वा तद्भावभावितः ।
मृदा तदङ्गमात्मानं बालभावविचेष्टितम् ॥27॥
अतिप्रियकथालापक्रीडाकौतूहलान्वितः ।
यथार्थं तत्प्रियं तन्त्रं कृत्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥28॥
कन्या सर्वसमृद्धिस्स्यात्कन्या सर्वं परं तपः ।
होमो मन्त्रार्चनं नित्यक्रिया कौलिकसत्क्रिया ॥29॥
नानाफलमहाधर्मः कुमारीपूजनं विना ।
तत्तत्कर्मफलं नाथ प्राप्नोति साधकोत्तमः ॥30॥

कुमारीपूजन के द्वारा एक, दो या तीन वीजों की पूजा फलदायक होती है । इसमें कोई संशय नहीं है । कुमारियों को फूल, फल, अनुलेपन, बालप्रिय नैवेद्य (मिष्ठान्न) आदि देकर और तद्भावभावित होकर, अङ्गों को मिट्टी से लिप्त कर बालभावोचित चेष्टाओं से अत्यन्त प्रिय कथालाप तथा क्रीड़ा करते हुये उन्हें (कुमारियों को) जो प्रिय हो वह कर्म करनेवाला मनुष्य सिद्धियों का स्वामी बन जाता है । कन्या समस्त सिद्धियों का रूप है । कन्या सम्पूर्ण और परम तप है । होम, मन्त्र, पूजा, नित्यक्रिया, कौलिकों का सत्कार तथा नाना फलों को देने वाले बड़े-बड़े धर्म कुमारी पूजन के विना व्यर्थ हैं । हे नाथ ! कुमारी पूजन से साधक इन सभी कर्मों का फल साधक प्राप्त कर लेता है ।

फलं कोटिगुणं वीरः कुमारीपूजया लभेत् ।
कुसुमाञ्जलिपूर्णञ्च कन्यायै कुलपण्डितः ॥31॥
ददाति यदि तत्पुष्पं कोटिमेरुहिरण्यवत् ।
तद्दानजं महापुण्यं क्षणादेव समालभेत् ॥32॥
कुमारी भोजिता येन त्रैलोक्यं तेन भोजितम् ।
कुमारीपूजनं कुर्यात्सर्वकर्मफलप्तये ॥33॥
पूजयेत्परमानन्दैरात्मध्यान परायणः ।
मम पूजां यः करोति प्रत्यहं शुद्धभक्तितः ॥34॥

तस्य वश्यं कुमारीणां पूजनं भोजनं रवेः ।
तेजोरूपं विधोश्चाग्नेः सर्वभावैः प्रकाशते ॥35॥
तत्पूजनात्तदालापाद्भोजनादपि तच्छुभात् ।
मम प्रीतिर्भवेत्साक्षाद्देवता गुप्तसंस्थिता ॥36॥
बालभैरवदेवस्य कामिनी वदकस्य च ।
पुत्रस्य सर्वलोकैस्तु पूजितस्य महौजसः ॥37॥
पूजाभिर्विविधैर्द्रव्यैः कुमारी देवपूजिता ।
कुमारी देवता प्रोक्ता सर्वतो जगदीश्वरी ॥38॥
पूजार्थं सर्वलोकस्य समानीय सुरेश्वरीम् ।
पूजयन्ति महादेवीं गुप्तभावनिवासिनीम् ॥39॥
सदा भोजन वाछाढ्या मान्या संतुष्टहासिनी ।
वृथा न रौति सा देवी कुमारी देवनायिका ॥40॥
सरस्वतीस्वरूपा सा पूज्यते सर्वनायकैः ।
शिवभक्तैर्विष्णुभक्तैस्तथान्यदेवपूजिताः ॥41॥
सर्वलोकैः पूजिता सा चावश्यं पूज्यते बुधैः ।
पूजया लभते पुत्रान्पूजया लभते श्रियम् ॥42॥
पूजया धनमाप्नोति पूजया लभते महीम् ।
पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महौजसम् ॥43॥
महाविद्या प्रसीदन्ति सर्वे देवा न संशयः ।
कालभैरवब्रह्मेन्द्रब्राह्मणा ब्रह्मवेदिन ॥44॥
रूद्रश्च देववर्गाश्च वैष्णवा ब्रह्मरूपिणः ।
अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिताः ॥45॥
अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा ।
नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः ॥46॥
उपसर्गस्थिता येये तेते तुष्टा न संशयः ।
यद्यहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा ॥47॥
कुमारीपूजनं कृत्वा त्रलौक्यं वशमानयेत् ।
महाक्रान्तिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदम् ॥48॥
तत्तन्मन्त्रसमुल्लेखात्क्षणात्पुण्यायुतं लभेत् ।
मन्त्रेण पुटितं कृत्वा जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥49॥

कुमारीपूजा से वीर करोड़ गुना फल प्राप्त करता है। यदि कुलपण्डित फूलों से भरी अञ्जलि कुमारी को देता है तो स्वर्णमय करोड़ों मेरुपर्वतों के समान कुमारी को दान देने का फल तत्काल प्राप्त कर लेता है। जिसने एक कुमारी को भोजन करा दिया, उसने त्रैलोक्य को भोजन करा दिया। समस्त कर्मों के फल की प्राप्ति के लिए मनुष्य कुमारी-पूजन करे। पार्वतीजी कहती हैं कि, आत्मा के ध्यान में लगा हुआ आनन्दपूर्वक शुद्ध भक्ति के साथ प्रतिदिन जो व्यक्ति मेरी पूजा करता है कुमारियों का पूजन और भोजन उसके वश में है। उसके लिए सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का तेज अपने सभी भावों से प्रकाशित होता है। कुमारी के पूजन से, उससे बातचीत करने से, उसे भोजन कराने से, उसका शुभकार्य करने से मेरी प्रसन्नता होती है। कुमारी में साक्षात् देवता गुप्त रूप से स्थित हैं। समस्त लोकों द्वारा पूजित, कामिनीवदक, महाबलवान् पुत्र बालभैरवदेव की पूजा के विविध द्रव्यों से कुमारी देवपूतिता हैं। कुमारी देवता कही गयी हैं। वह समस्त संसार की जगदीश्वरी हैं। समस्त लोकों की पूजा के लिए कुमारी को लाकर उसमें गुप्त रूप से निवास करने वाली महादेवी सन्तुष्टहासिनी सुरेश्वरी देवी की पूजा सदा भोजनादि से करनी चाहिये। देवनायिका देवी कुमारी व्यर्थ नहीं रोती। शिवभक्त, विष्णुभक्त, समस्तनायक तथा अन्य देवों से सरस्वती रूपी कुमारी पूजी जाती हैं। वह समस्त लोकों से पूजी जाती हैं, इसलिए बुद्धिमानों का कर्त्तव्य है कि वे उसकी पूजा करें। मनुष्य कुमारीपूजा से पुत्रों को और लक्ष्मी को पाता है। कुमारी की पूजा से मनुष्य धन पाता है और भूमि पाता है। कुमारी की पूजा से मनुष्य धन और बलवती विद्या को पाता है। कुमारी पूजन से महाविद्या तथा सभी देव प्रसन्न होते हैं इसमें संशय नहीं है। कुमारी पूजन से कालभैरव, ब्रह्मा, वेदज्ञानी, ब्राह्मण, रुद्र, देववर्ग, ब्रह्मरूपी वैष्णव, द्विभुज अवतार, मन्त्रों से सुशोभित वैष्णव, अन्य दिक्पाल, चराचर गुरु तथा नाना विद्याश्रित कूटशाली सभी दानव, और उपसर्गस्थित जो-जो लोग हैं वे सब प्रसन्न हो जाते हैं इसमें संशय नहीं है। जबकि शुद्धरूप मैं स्वयं इससे प्रसन्न हो जाती हूँ। तब अन्य लोक में रहने वाले देवताओं की क्या कथा है ? कुमारी का पूजन करके मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है। इससे शीघ्र ही सबको पुण्यफल देने वाली भारी क्रान्ति होती है। इस मन्त्र के लिखने से क्षण में ही दश हजार गुना पुण्यफल मनुष्य को प्राप्त होता है। मन्त्र को सम्पुटित करके जप करने से मनुष्य सभी सिद्धियों का स्वामी हो जाता है।

यद्यत्प्रकारमुद्दिश्य वदामि सुरसुन्दरि ।
तत्तत्कार्यमवश्यं च भिन्नबुद्धिं न कारयेत् ॥50॥

हे सुन्दरी ! मैं जो-जो पूजा के प्रकार तुम्हें बताता हूँ, उन सबको तुम्हें अवश्य करना चाहिये । इसमें भेद बुद्धि कभी नहीं करना चाहिये ।

बृहन्नीलतन्त्रे –

महाभयातिदुर्भिक्षाद्युत्पातास्तु कलेश्वरि ।
दुःखस्वप्नभयमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥51॥
कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवन्ति हि ।
नित्यं क्रमेण देवशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥52॥
ध्नन्ति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान् ।
ग्रहा रोगाः क्षयं यान्ति भूतवेतालपन्नगाः ॥53॥

वृहन्नील तन्त्र में कहा गया है कि, हे कुलेश्वरि, महाभय, दुर्भिक्ष आदि उत्पात, दुःस्वप्न, मृत्यु तथा जो अन्य भारी उपद्रव होते हैं, वे सब कुमारीपूजन करने से अपना प्रभाव नहीं दिखला पाते । हे देवेशि ! क्रम से विधिपूर्वक नित्य ही कुमारीपूजन करना चाहिए । कुमारीपूजन करने वाले महोत्कट शत्रुओं और विघ्नों को नष्ट कर देते हैं । ग्रह, रोग, भूत, बैताल भी इससे नष्ट हो जाते हैं ।

तन्त्रान्तरेऽपि –

श्रृणु नाथ कुलार्थं मे कुमारीपूजने मनुम् ।
महाविद्यामहामन्त्रं सिद्धमन्त्रं न संशयः ॥54॥
एतन्मन्त्रप्रभावेण जीवन्मुक्तो भवेत्सुधीः ।
अन्ते देवीपदं याति सत्यमानन्दभैरव ॥55॥
ऐहिका सुखसम्पत्तिर्मधुमत्याः प्रसादतः ।
अवश्यं प्राप्नुयान्मर्त्यो विश्रामं कुरु शङ्कर ॥56॥
वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् ।
श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥57॥
भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः ।

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है – हे नाथ ! कुल के लिये कुमारीपूजन के लिए मैं महाविद्या महामन्त्र बतला रही हूँ जो कि सिद्ध मन्त्र है । इसमें संशय नहीं है । इस मन्त्र के प्रभाव से मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है । हे अनान्दभैरव !

अन्त में वह देवी के धाम को प्राप्त हो जाता है । यह सत्य है । मधुमती कुमारी के प्रभाव से ऐहिक सुख सम्पत्ति मनुष्य अवश्य प्राप्त करता है । हे शङ्कर ! अब तुम विश्राम करो । वाग्भव से वपुःक्षोभ, मायाबीज से गुणाष्टक की प्राप्ति, श्रीबीज से श्रीलाभ, मायाबीज. से शत्रु का नाश और भैरवबीज से देवताओं के साथ खेचरत्व प्राप्त होता है ।

कुमारिका ह्यहं नाथ सदा त्वं हि कुमारकः ॥58॥
शतमष्टोत्तरं वापि एकां वा परिपूजयेत् ।
पूजिताः परिपूज्यन्ते ह्याविघ्नन्त्यवमानिताः ॥59॥
कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता ।

हे नाथ ! मैं तो सदा कुमारी हूँ और आप सदा सुन्दर हैं । एक सौ आठ या एक कुमारी की पूजा करनी चाहिए । कुमारियाँ पूजा प्राप्त करके कल्याण करती हैं और अपमानित होने पर विघ्न उपस्थित करती हैं । कुमारी योगिनी हैं, कुमारी साक्षात् पर देवता हैं ।

असुरा दुष्टनागाश्च येये दुष्टग्रहा अपि ॥60॥
भूतवेतालगन्धर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः ।
या चान्या देवतास्सर्वा भूर्भुवस्वश्च भैरवाः ॥61॥
पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥62॥
सन्तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत् ।
विधियुक्तां कुमारीन्तु भोजयेच्चैव भैरव ॥63॥
पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चन्दनं शुभम् ।
भक्तिभावेन सम्पूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥64॥

असुर, भूत, बैताल, गन्धर्व, डाकिनी, यक्ष, राक्षस, अन्य सभी देवता, भूः भुवः स्वः, भैवर, पृथिव्यादि सभी सचराचर ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव सभी उससे सन्तुष्ट हो जाते हैं । हे भैरव ! विधिपूर्वक कुमारी को भोजन करना और भक्तिभाव से पूजा करके पाद्य, अर्घ्य, धूप, कुंकुम तथा शुभ चन्दन आदि कुमारियों को देना चाहिये ।

इति कुमारीपटलं समाप्तम्

कुमारीकवच

अथातः संप्रवक्ष्यामि कुमारीकवचं शुभम् ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम महापातकनाशनम् ॥1॥
पठनाद्धारणाल्लोका महासिद्धाः प्रभाकरः ।
शक्रो देवाधिपः श्रीमान्देवगुरुर्बृहस्पतिः ॥2॥
सम्यक्तेजोमयो वह्निर्धर्मराजो भयानकः ।
वरुणो देवपूज्यो हि जलानामधिपस्स्वयम् ॥3॥
सर्वहर्ता महावायुः कुमारः कुञ्जरेश्वरः ।
धनाधिपः प्रियश्शम्भोस्सर्वे देवा दिगीश्वराः ॥4॥
स एकः प्रभुरेकात्मा सर्वेशो निर्मलोदयः ।
एतत्कवचपाठेन सर्वे भूपा धनाधिपः ॥5॥

अब मैं यहाँ शुभ कुमारी कवच बताऊँगी । यह तीनों लोकों में मङ्गल करने वाला है और पापों का नाश करने वाला है । इसके पठन तथा धारण से लोग महासिद्ध हो जाते हैं । देवाधिदेव इन्द्र, देवगुरु वृहस्पति, तेजोमय अग्नि, भयानक धर्मराज, देवपूज्य जल के स्वामी वरुण, सर्वहर्त्ता वायु, कुमार, गणेश, कुबेर, शिव के प्रिय सभी देव, दिक्पाल, निर्मल सर्वेश्वर ये सभी और सब राजा भी इस कवच के पाठ से धन के स्वामी हो गये ।

प्रणवो मे शिरः पातु माया सन्ध्यात्मिका सती ।
ललाटोर्ध्वं महामाया पातु मे श्रीसरस्वती ॥6॥
कामाख्या बटुकेशानी त्रिमूर्तिर्भालमेव तु ।
चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम ॥7॥
पातु मां सूर्य्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वय मम ।
कर्णयुग्मं कामबीजस्वरूपामा तपस्विनी ॥8॥
रसनाग्र तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम ।
तमावस्था कामरूपा दन्ताग्र कुब्जिका मम ॥9॥
देवी प्राणरूपा सा पातु नित्यं शिरो मम ।
ओष्ठाधरौ शक्तिबीजत्मिका स्वाहास्वरूपिणी ॥10॥
गलदेश महारौद्री पातु मे चापराजिता ।
क्षौं बीजं मे सदा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता ॥11॥

हृदयं षोडशी विद्या पातु षोडशसुस्वरा।
द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मीः प्रधानिका।।12।।
सर्वमन्त्रस्वरूपा मे चोदरं पीठनायिका।
पार्श्वयुग्मं तथा पातु हृद्देवी वाग्भवात्मिका।।13।।
कैशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी।
जंघायुग्मं जयन्ती मे योगिनी कुल्लुकावृता।।14।।
सर्वाङ्गमम्बिका देवी पातु मन्त्रार्थगामिनी।
केशाग्रं कमला देवी नासाग्रं नरमोहिनी।।15।।
चुबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा।
हृदयं ललिता देवी पृष्ठं पर्वतवासिनी।।16।।
त्रिशक्तिः षोडशी देवी लिंगं गुह्यं सदावतु।
श्मशाने चाम्बिका देवी गङ्गा गर्भे च भैरवी।।17।।
शून्यागारं पञ्चमुद्रा मन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी।
चतुष्पथे सदा पातु मामेव वज्रधारिणी।।18।।
शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता।
पातु मामेव लिंगे च ईश्वरी शक्तिरूपिणी।।19।।
वने पातु महाबाला महारण्ये रणप्रिया।
महाजले तडागे च शत्रुमध्ये सरस्वती।।20।।
महाकाशपथे पृथ्वी पातु मां शीतला सदा।
रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी।।21।।
अर्द्धनारीश्वरी पातु मम पादतलं मही।
नवलक्षमहाविद्या कुमारीरूपधारिणी।।22।।
कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला।
पातु मां वरदा वाणी बहुकेश्वरकामिनी।।23।।
इति ते कथितं नाथ• कवचं परमाद्भुतम्।
कुमार्याः कुलदायिन्याः पञ्चतत्त्वार्थपारगम्।।24।।
यो जपेत्पञ्चतत्त्वेन स्त्रोत्रेण कवचेन च।
आकाशगामिनी सिद्धिर्भवेत्तस्य न संशयः।।25।।
वज्रदेहो भवेत्क्षिप्रं कवचस्य प्रसादतः।
सर्वसिद्धीश्वरो योगी ज्ञानी भवति यः पठेत्।।26।।

विवादे व्यवहारे च संग्रामे कुलमण्डले ।
महापथे श्मशाने च योगसिद्ध्युद्भवेषु च ॥27॥
पठित्वा फलमाप्नोति सत्यंसत्यं कुलेश्वर ।
वशीकरणमेतद्धि सर्वत्र जयदं शुभम् ॥28॥
पुण्यव्रती पठेन्नित्यं यतिः श्रीमान्भवेद्ध्रुवम् ।
सिद्धविद्याकुमारी च ददाति सिद्धिमुत्तमाम् ॥29॥
पठेद्यः शृणुयाद्वापि स भवेत्कल्पपादपः ।
भक्तिं मुक्तिं तुष्टिपुष्टी राजलक्ष्मीं सुसम्पदम् ॥30॥
प्राप्नोति साधकश्रेष्ठो धारयित्वा भवेज्जयी ।
असाध्यं साधयेद्विद्वान्पठित्वा कवचं शुभम् ॥31॥
कुलीनानां महासौख्यं धर्मार्थकाममोक्षदम् ।
योगिनां दिवसे नित्यं कुमारीं पूजयेन्निशि ॥32॥
उपचारविशेषेण त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।
पललेनाशनेनापि मत्स्येन मुद्रया सह ॥33॥
नानाभक्ष्येण भोज्येन गन्धद्रव्येण साधकः ।
माल्येन स्वर्णरजतालङ्कारेण सुचेलकैः ॥34॥
पूजयित्वा जपित्वा च तर्पयित्वा वराननाम् ।
यज्ञदानतपस्याभिः प्रयोगेण महेश्वर ॥35॥
स्तुत्वा कुमारीकवचं यः पठेदेव भावतः ।
तस्य सिद्धिर्भवेत्क्षिप्रं राजराजेश्वरो भवेत् ॥36॥
वाञ्छाफलमवाप्नोति यद्यन्मनसि वर्त्तते ।
भूर्जपत्रे लिखित्वा यः कवचं धारयेद्यदि ॥37॥
शनिमङ्गलवारे च नवम्यामष्टमीदिने ।
चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कृष्णपक्षे विशेषतः ॥38॥
लिखित्वा धारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखो भवेत् ।
महापातकयुक्तोपि मुक्तः स्यात्सर्व पातकैः ॥39॥
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वकल्याणमालभेत् ।
बहुपुत्रान्विता कान्ता सर्वसम्पत्तिसंयुक्ता ॥40॥
तथैव पुरुषश्रेष्ठो दक्षिणे धारयेद्भुजे ।
इहैव दिव्यदेहः स्यात्पञ्चाननसमप्रभः ॥41॥

शिवलोके परं याति वायुवेगो निरामयः ।
सूर्यमण्डलमाभेद्य परं मोक्षमवाप्नुयात् ॥42॥

हे नाथ ! मैंने यह कुलदायिनी कुमारी पञ्चतत्वार्थपारग परम अद्भुत कवच आपको बताया । जो मनुष्य पञ्चतत्व के स्तोत्र और कवच के साथ जप करता है, उसे आकाश में उड़ने की सिद्धि प्राप्त होती है । इसमें कोई संशय नहीं है । कवच के प्रसाद से वह वज्रदेह हो जाता है । जो इसका पाठ करता है, वह सर्वसिद्धियों का स्वामी, योगी और ज्ञानी हो जाता है । विवाद में, व्यवहार में, संग्राम में, कुलमण्डल में, महापथ में, श्मशान में, योगसिद्धियों के उद्भव में फल प्राप्त करता है । हे कुलेश्वर ! मैं यह सत्य कहती हूँ । यह वशीकरण है, और सर्वत्र जय प्रदान करने वाला है । पुण्य व्रत करता हुआ जो इन्द्रियविजयी इसका नित्य पाठ करता है, वह निश्चय ही लक्ष्मीवान् होता है । सिद्धविद्या कुमारी उत्तम सिद्धि को देती है । जो साधक इसे पढ़ता या सुनता है । वह कल्पवृक्ष हो जाता है । वह भुक्ति, मुक्ति, तुष्टि, पुष्टि, राजलक्ष्मी तथा उत्तम सम्पत्ति प्राप्त करता है और जो इसे धारण करता है, वह विजयी हो जाता है । इस शुभ कवच को पढ़कर बुद्धिमान् साधक असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर लेता है । कुलीन योगियों को धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष देने वाला महासुख प्राप्त होता है । दिन में, रात में नित्य कुमारी की पूजा करनी चाहिए । विशेष उपचार से साधक तीनों लोकों को वश में कर सकता है । साधक यदि माँस, मछली के साथ नाना प्रकार के भक्ष्य भोज्य और गन्ध द्रव्य, माला, सोने-चाँदी के अलङ्कार तथा वस्त्रों के साथ कुमारी का पूजन तथा तर्पण करके यज्ञ, दान तथा तपस्यापूर्वक स्तुति करके कुमारी कवच को भावसहित पढ़ता है तो उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह राजराजेश्वर बन जाता है । भोजपत्र पर लिखकर जो साधक कवच को धारण करता है, उसके मन में जो इष्ट है वह सब पूर्ण हो जाता है । शनिवार, मङ्गलवार, नवमी, अष्टमी के दिन, चतुर्दशी, पौर्णमासी विशेष रूप से कृष्ण पक्ष में भोजपत्र पर लिखकर उत्तराभिमुख होकर जो विद्वान् साधक धारण करता है वह महापातकी हो तो भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है । स्त्री बाएँ हाथ में धारण करके समस्त कल्याणों को प्राप्त करती है । वह बहुत पुत्रों वाली तथा समस्त सम्पत्तियों से युक्त होती है । उसी प्रकार पुरुष भी दाहिने हाथ में धारण करे तो वह इसी संसार में दिव्य देहवाला रोगरहित होकर ब्रह्मा के समान हो जाता है

और वायुवेग से शिवलोक में जाता है। वह सूर्यमण्डल का भेदन करके परम मोक्ष को प्राप्त करता है।

लोकानामतिसौख्यदं भयहरं श्रीपादभक्तिप्रदं मोक्षार्थं कवचं शुभं प्रपठतामानन्दसिन्धूद्भवम्। पन्थानं कलिकालघोरकलुषध्वंसैकहेतुं जयं ये लोकाः प्रपठन्ति धर्ममतुलं मोक्षं व्रजन्ति क्षणात् ॥43॥

अत्यन्त सुख देने वाला, भय को हरण करने वाला, श्री देवी के चरणों में भक्ति प्रदान करने वाला, मोक्ष के लिए समुद्र से उत्पन्न कलिकाल में घोर पाप के नाश का कारण स्वरूप इस शुभ कवच का जप और पाठ जो करते हैं वे ही असीम धर्म और क्षण में मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

इति रुद्रयामले उत्तरतन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्य्युपचर्य्याविन्यासे कुमारीकवचोल्लासे सिद्धमन्त्रप्रकरणे भावनिर्णयकुमारीकवचं समाप्तम्।

कुमारीस्तोत्र

भैरव उवाच –

देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं विद्यां वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मत्रियागामिनीम्। चण्डोद्वेगनिकृन्तनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां मूलाम्भोरुहवासिनीं शशिमुखीं सम्पूजयन्ति श्रियम् ॥1॥ भाव्यां देवगणैः शिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्थिभिर्बालिकां सन्ध्यां नित्यगुणोदयां द्विजगण-श्रेष्ठोदयांशारुहाम्। शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं भद्रां विशालाननां गायत्रीं गणमातरं दिनपतिं कृष्णां च वृद्धां भजे ॥2॥ बालां बालकपूजितां गुणयुतां विद्यादतां मोक्षदां धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नरवरां वाग्वादिनीं चण्डिकाम्। स्वाधिष्ठानहरप्रियां प्रियकरीं वेदान्तविद्याप्रदां नित्यं मोक्षहिताय योगवपुषां चैतन्यरूपां भजे ॥3॥ नानारत्नसमूहनिर्मितगृहे पूज्यां सुरैर्बालिकां वन्दे नन्दनकानने मनसि सिद्धान्तैकबीजानने। अर्थं देहि निरर्थकाय वपुषे हित्वा कुमारीं कलां मह्यं मातृकुमारिके च त्रिविधा मूर्त्या च तेजोमयी ॥4॥ हालाहालकरालिकां कुलपथोल्लासैः कराब्जोद्वहां नासामोदकरालिनीं हि भजतां कामातिरिक्तप्रदाम्। बालोऽहं बटुकेश्वरस्य चरणाम्भोजाश्रितोऽहं सदा हि त्वां बालकुमारिके शिरसि शुक्लाम्भोरुहे सम्भजे ॥5॥ सूर्याह्लादवलाकिनीं कलिमहापापार्दितापापहां तेजोगां भुवि सूर्य्यगां भयहरां तेजोमयीं कालिकाम्। वन्दे हृत्कमले सदा रविदले बालेन्द्रविद्यां सतीं

साक्षात्सिद्धिकरों कुमारि विमले त्वामाद्यरूपेश्वरीम् ॥6॥ नित्यं श्रीकमलामिनीं कुलवर्तीं कौलामुनाममम्बिकां नानायोगविलासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम् । वेदान्तार्थविशेषदेशवसनभाषाविशेषस्थितां वन्दे पर्वतराज-राजतनयां कालप्रिये त्वामहम् ॥7॥ कौमारीं कुलमालिनीं रिपुगण-क्षोभाग्निसन्दायिनीं रक्ताभानयनां शुभां परममार्गां मुक्तिसंज्ञाप्रदाम् । भार्यां भोगवतीं पतिं त्रिभुवनेष्वामोदञ्चाननां पञ्चास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्वादिहारां भजे ॥8॥ चन्द्रास्यां चरणद्वयां भुजमहाशोभाविनोदीं नदीं मोहादिक्षयकारिणीं वरकरां श्रीकुब्जिकां सुन्दरीम् । ये नित्यं परिपूजयन्ति सहसा राजेन्द्रचूड़ामणिं सम्पत्तिं धनमायुषं त्रिजगतां व्याप्येश्वरत्वं जगुः ॥9॥ योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसन्दर्भया शोभासागरगामिनं सुरतरुं वांछाफलोद्दीपनम् । लोकानामघनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया धर्मप्राणसदैवतं प्रणमतां कल्पद्रुमं भावये ॥10॥ विद्यान्तामपराजितां मदनगामामोदमत्ताननां हृत्पद्मस्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम्। ये ये पुण्यधियो भजन्ति परमानन्दाब्धिमध्ये मुदा सर्वाच्छादिततेजसाऽभयकरीं मोक्षाय सत्कीर्तये ॥11॥ रुद्राणीं प्रणमामि पद्मवदनां कोट्यर्कतेजोमयीं नानाललंकृत-भूषणां कुलभुजामानन्दसन्दायिनीम् । श्री मायां कमलान्वितां हृदिगतां सन्तानबीजक्रियां वन्दे वाग्भवरूपिणीं कुलवधू हूंकारबीजोद्भवाम् ॥12॥ नमामि वरभैरवीं क्षितितलाघकालानलां मृणालकुसुमारुणां भुवनदोष-संशोधिनीम् । जगद्भयहरां परां हरति या च योगेश्वरी ममापदमहर्निशं सकलभोगदां तामहम् ॥13॥ साम्राज्यं प्रददाति या भगवती विद्या महालक्षणा साक्षादष्टसमृद्धिदा भुवि महालक्ष्मीः कुलक्षोभहा । स्वाधिष्ठानसुपङ्कजे विवसितां विष्भोरनन्तश्रियं वन्दे राजपदप्रदां शुभकरीं कौलेश्वरीं सर्वदा ॥14॥ पीठानामधिपाधिपामसुरहां विद्यां शुभां नायिकां सर्वालङ्करणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां वारुणीम् । वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामानन्दरूपेश्वरीम् ॥15॥ क्षेत्रज्ञां महविह्वलां कुलवर्तीं सिद्धप्रियां प्रेयसीं शम्भोः श्रीबटुकेश्वरस्य महतामानन्दसञ्चारिणीम् । साक्षादात्मपरीद्गमां निजमनः क्षोभापहां शाकिनीं वाक्यार्थपकटामहं रजतभां वन्दे महाभैरवीम् ॥16॥ सुपूर्णविधुवन्मुखीं कमलमध्यसम्भाविनीं शिरोदशशते दलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम् । प्रणामफलदायिनीं सकलराजवश्यां गुणां नमामि

परमाम्बिकां विषयपाशसंहारिणीम् ॥17॥ साक्षादहं त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां सन्ध्यादिदेविकललः कुलपण्डितेन्द्राम् । तन्नो भजे सुरवरे वरकालिके त्वां सिद्धानले प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या । भक्तिं धनं जयपदं यदि देहि दास्यं तस्मिन्महामधुमतीलघुगेहभार्य्याम् ॥18॥

एतत्स्तोत्रप्रसादेन कवितावाक्पतिर्भवेत् ।
महासिद्धीश्वरो दिव्यो वीरभावपरायणः ॥19॥
सर्वत्र जयमाप्नोति स हि स्याद्धरवल्लभः ।
वाचामीशो भवेत्क्षिप्रं कामरूपी भवेन्नरः ॥20॥
पशुरेव महावीरो दिव्यो भवति निश्चितम् ।
क्रमशोप्यष्टसिद्धिः स्याद्वाग्मी भवति निश्चितम् ॥21॥
सर्वविद्याः प्रसीदन्ति तुष्टास्सर्वदिगीश्वराः ।
वह्निः शीतलतां याति जलस्तम्भं स कारयेत् ॥22॥
धनवान्पुत्रवान्राजा इहलोके भवेन्नरः ।
स सञ्चरति वैकुण्ठे कैलासे शिवसन्निधौ ॥23॥
मुक्त एव महादेव यो नित्यं सर्वदा पठेत् ।
महाविद्यापदाम्भोजं स हि पश्यति निश्चितम् ॥24॥

इस स्तोत्र के प्रसाद से साधक कविता और वाणी का स्वामी हो जाता है । वीरभावपरायण होकर वह दिव्य महासिद्धियों का स्वामी बन जाता है । वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है और शिवजी का प्यारा हो जाता है । वह वाणी का स्वामी तथा इच्छानुसार रूप धारण करने वाला हो जाता है । वह पशु निश्चित रूप से महावीर हो जाता है । क्रमशः वह वाग्मी हो जाता है तथा निश्चित रूप से आठों सिद्धियों को प्राप्त करता है । उसपर समस्त विद्याएँ प्रसन्न हो जाती हैं तथा समस्त दिक्पाल तुष्ट हो जाते हैं । उसके सामने अग्नि शीतल हो जाती है तथा वह जल का स्तम्भन कर देता है । वह इस संसार में धनवान्, पुत्रवान् तथा राजा होता है । वह कैलास पर्वत पर बैकुण्ठ में शिव के निकट विचरण करता है । जो नित्य इसका पाठ करता है वह मुक्त होकर स्वयं महादेव बन जाता है । महाविद्या के चरणकमल को वह निश्चित रूप से देखता है ।

इति कुमारीस्तोत्रं समाप्तम्

कुमारीसहस्रनामस्तोत्र

आनन्दभैरव उवाच –

विनियोग : अस्याः श्रीकुमार्याः सहस्रनामस्तोत्रस्य वटुकभैरव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः कुमारी देवता सर्वमन्त्रसिद्धिसमृद्ध्ये विनियोगः ।

ॐ कुमारी कौशिकी काली कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कनकाभा काञ्चनाभा कमला कालकामिनी ॥1॥
कपालिनी कालरूपा कौमारी कुलवालिका ।
कान्ता कुमारकान्ता च कारणा करिगामिनी ॥2॥
कन्धकान्ता कौलकान्ता कृतकर्मफलप्रदा ।
कार्याकार्यप्रवक्त्री च कंसहन्त्री कुरुक्षया ॥3॥
कृष्णकान्ता कालरात्रिः कर्णेषुधारशीकरा ।
कामहा कपिला काला कालिका कुरुकामिनी ॥4॥
कुरुक्षेत्रप्रिया कोला कुन्ती कामातुरातुरा ।
कलङ्कभक्षा कैकेयी काकपुच्छध्वजा कला ॥5॥
कमला कामलक्ष्मीश्च कमलाननकामिनी ।
कामधेनुस्वरूपा च कामहा कामवर्द्धिनी ॥6॥
कामदा कामपूज्या च कामातीता कलावती ।
कौमारी कारणाढ्या च कैशोरी कुशलाकुला ॥7॥
कुम्बग्रीवा कृष्णनिभा काम राजप्रिया कृतिः ।
कङ्कणालङ्कृता कङ्का केवला काकिनी करा ॥8॥
किरातिनी काकभक्षा करालवदना कुशा ।
केशिनी केशिहा केशा केशीष्टा च कविप्रिया ॥9॥
कविनाथस्वरूपा च कटुवाणी कटुस्थिता ।
कोटरा कोटराक्षी च करनाटकवासिनी ॥10॥
कटकस्था काष्ठसंस्था कन्दर्पा केतकीप्रिया ।
केलिप्रिया कम्बलस्था कालदैत्यविनाशिनी ॥11॥
केतकीपुष्पशोभाढ्या कर्पूरपूर्णजिह्विका ।
कर्पूरकरका काला कैलासगिरवासिनी ॥12॥
कुशासनस्था कादम्बा कुञ्जरेशी कुलानना ।
सर्वा खड्गधरा खड्गाखिलहाखिलवृद्धिदा ॥13॥

खञ्जना खररूपा च खाराम्लतिक्तमध्यगा।
खेलना खेटककरा खरवाक्या खरोत्कटा ॥14॥
खद्योतचञ्चला खेला खद्योता खगवाहिनी।
खेटकस्था खला खस्था खेचरी खेचरप्रिया ॥15॥
खेचरा खचरप्रेमा खलाढ्या खचरानना।
खेचरेशी खरोग्रा च खेचरप्रियभाषिणी ॥16॥
खर्जूरासवसंवर्ता खर्जूरफलभोगिनी।
खातमध्यस्थिता खाता खाताम्बुपरिपूजिनी ॥17॥
खातिः खातजलानन्दा खुलना खञ्जनागतिः।
खल्वा खरतरा खारी खारोद्वेगनिकृन्तनी ॥18॥
गगनस्था च गीता च गम्भीरनादिनी गया।
गङ्गा गभीरा गौरी च गगनाथप्रिया गतिः ॥19॥
गुरुभक्ता ग्लानिहीना गेहिनी गोपिनी गिरा।
गोगणस्था गाणपत्या गिरिजा गिरिपूजिता ॥20॥
गिरिकान्ता गणस्था च गिरिकन्या गणेश्वरी।
गाधिराजसुता ग्रीवा गुर्वी गुरुश्च शाङ्करी ॥21॥
गन्धर्वयामिनीगीता गायत्री गुणदा गुणा।
गुग्गलस्था गुरोः पूज्या गीतानन्दप्रकाशिनी ॥22॥
गयासुरप्रिया गेहा गवाक्षजालमध्यगा।
गुरुकन्या गुरोः पत्नी गहना गुरुनादिनी ॥23॥
गुल्फवायुस्थिता गुल्फगर्दभा गर्दभप्रिया।
गुह्या गुह्यगणस्था च गरिमा गैरिका गुदा ॥24॥
गुदोर्द्धस्था च गलिता गणिका गोलका गणा।
गान्धर्वी गाननगरी गन्धर्वगणपूजिता ॥25॥
घोरनादा घोरमुखी घोरा धर्मनिवारिणी।
धनदा धनवर्णा च धनवाहनवाहना ॥26॥
घर्घरध्वनिचपला घोटा घटपटी घटी।
घटिता घटना घोणा घनरूपा घनेश्वरी ॥27॥
घुष्यातीता घर्घरा च घोराननविमोहिनी।
घोरनेत्रा घनरुचा घोरभैरवकन्यका ॥28॥

घाता घातकरा घात्या घ्राणा घ्राणगवासिनी ।
घोरान्धकारसंस्था च घसना घस्वरा घरा ॥29॥
घोटकस्था घोटका च घोटकेश्वरवाहना ।
घननीलमणिश्यामा घर्घरेश्वरकामिनी ॥30॥
ङ्कारकूटसम्पन्ना ङ्कारचक्रगामिनी ।
ङ्कारी ङसशा चैव ङीयनीता ङ्कारिणी ॥31॥
चन्द्रमण्डलमध्यस्था चतुरा चारुहासिनी ।
चारुचन्द्रमुखी चैव चलाङ्गसुगतिप्रिया ॥32॥
चञ्चला चपला चण्डी चेकिताना चरुस्थिता ।
चलिता चालना चार्वी चारुभ्रमरनादिनी ॥33॥
चोरहा चन्द्रनिलया चान्द्री चक्रपुरस्थिता ।
चक्रकीला चक्ररूपा चक्रस्था चक्रसिद्धिदा ॥34॥
चक्रिणी चक्रहस्ता च चक्रनाथकुलप्रिया ।
चक्राभेद्या चक्रकुला चक्रमण्डलशोभिता ॥35॥
चक्रेश्वरप्रिया चैला चैलाजिनकुशोत्तरा ।
चतुर्वेदस्थिता चण्डा चन्द्रकोटिसुशीतला ॥36॥
चतुर्गुणा चन्द्रवर्णा चातुरी चतुरप्रिया ।
चक्षुष्या चक्षुर्वसतिश्चलका चलनप्रिया ॥37॥
चार्वंगी चन्द्रनिलया चलदम्बुजलोचना ।
चर्वरीशा चारुमुखी चारुदन्ता चरस्थिता ॥38॥
चषकस्थासवा चेता चेतःस्था चैत्रपूजिता ।
चाक्षुषी चन्द्रमालिनी चन्द्रहासमणिप्रभा ॥39॥
छत्रस्था छत्ररूपा च छत्रच्छायावनस्थिता ।
छलज्ञा छेश्वरा छाया छायाछिन्नशवा छला ॥40॥
छत्राचरणशोभाढ्या छत्रिणां छत्रधारिणी ।
छिन्नातीता छिन्न मस्ता छिन्नकेशा छलोद्भवा ॥41॥
छलहा छलदा छाला छिन्ना छन्नजनप्रिया ।
छलाछला छम्भवती छम्भसम्बनिवासिनी ॥42॥
छद्मगन्धा छदा छन्ना छद्मकेशा छकारिका ।
छागलारक्तभक्षा च छागलामोदरक्तपा ॥43॥

छगलण्डेशकन्या च छगलण्डकुमारिका ।
छविका छुरिकाकारा छुरिकारिविनाशिनी ॥44॥
छिन्ननासा छिन्नहासा छाललोला छलोदरी ।
छलोद्वेगा छागरीजमाला छागवरप्रदा ॥45॥
जटिला जठरश्रीदा जरा यज्ञप्रिया जया ।
यन्त्रस्था जीवजा जीवा जयदा जीवयोगदा ॥46॥
जयिनी जमलस्था जामलोद्भवनायिका ।
जामलप्रियकन्या च जामलेशी जवप्रिया ॥47॥
जवाकोटिसमप्रख्या जपापुष्पप्रिया जना ।
जलस्था जागरिमया जरातीता जलस्थिता ॥48॥
जीवहा जीवकन्या च जनार्द्दनकुमारिका ।
जातुका जलपूज्या च जगन्नाथादिकामिनी ॥49॥
जीर्णाङ्गी जीर्णहीना च जीमूतात्यन्तशोभिता ।
जामदा जमदा जृम्भा जृम्भणान्तादिधारिणी ॥50॥
जयिनी जारजप्रीता जगदानन्दवर्द्धिनी ।
यमलार्जुनदर्पघ्नी यमलार्जुनभञ्जिनी ॥51॥
जय त्रिजगदानन्दा जामलोल्लाससिद्धिदा ।
जयमाला जापसिद्धिर्जपयज्ञप्रकाशिनी ॥52॥
जाम्बुवती जाम्बुवतः कन्यका जलजा जया ।
जवहन्त्री जगद्बुद्धिर्जगत्कर्त्री जगद्गतिः ॥53॥
जीवनी जीविनी जाया जगन्माता जनेश्वरी ।
झझना झङ्कमध्यस्था झणत्कारस्वरूपिणी ॥54॥
झणत्झणद्वह्निरूपा झनना झल्लरीश्वरी ।
झटिताक्षा झरा झंझा झर्झराधररकन्यका ॥55॥
झणत्कारी झना झन्ता झकारमालया वृता ।
झङ्कारी झर्झरी झिल्ली झल्लेश्वरनिवासिनी ॥56॥
ञकारी ञकिराती च ञकारबीजर्मालिनी ।
ञनमोऽन्ता ञकारान्ता ञलारपरमेश्वरी ॥57॥
ञान्तबीजपुत्रकरा ञेकनेत्रैककामिनी ।
ञकनेत्रा ञस्वरूपा ञजहा ञहरीतकी ॥58॥

टुण्टुनी टङ्कहस्ता च टान्तवर्गा टलावती।
टपला टालवालाख्या टङ्कारध्वनिरूपिणी ॥59॥
टलाती टाक्षरातीता टित्कारादिकुमारिका।
टाङ्कास्त्रधारिणी टाना टामोटार्णलभाषिणी ॥60॥
टङ्कारीविधना टाका टका टकविमोहिनी।
टङ्कार धरनामा हाटिवी खेचरनादिनी ॥61॥
ठठङ्कारी ठाठरूपा ठकारबीज कारणा।
डमरुप्रियावाद्या च डामरस्था डरीजिका ॥62॥
डान्तवर्गा डमरुका डरस्था गोरड़ामरा।
डगरार्द्धा डलातीता डदारुकेश्वरी डुता ॥63॥
ढार्द्धनारीश्वरा ढामा ढक्कारी ढलना ढला।
ढकस्था ढेश्वरसुता ढेमनाभावढोनना ॥64॥
णोमाकान्तेश्वरी णान्तवर्गस्था णतुनावती।
णनोमालङ्ककल्याणी णाक्षवी णाक्षबीजिका ॥65॥
तुलसीतन्तुसूक्ष्माख्या तारल्या तैलगन्धिका।
तपस्या तापससुता तारिणी तरुणी तला ॥66॥
तन्त्रस्था तारकब्रह्मस्वरूपा तन्तुमध्यगा।
तालभक्षा त्रिधामूर्तिस्तारका तैलभक्षिका ॥67॥
तारोभ्राता तमाला च तकारा तिन्तिडी प्रिया।
तपस्या तालसन्दर्भा तर्जयन्ती कुमारिका ॥68॥
तोकाचारा तलोद्वेगा तक्षका तक्षकप्रिया।
तक्षकालंकृता तोषा तावद्रूपा तलप्रिया ॥69॥
तलास्त्रधारिणी तपा तपसां फलदायिनी।
तल्वल्वप्रहरालीता तलारिगणनाशिनी ॥70॥
तुला तौली तोलका च तलस्था तलपालिका।
तरुणा तप्तबुद्धिस्था तप्ताप्रधारिणी तपा ॥71॥
तन्त्रप्रकाशकरणी तन्त्रार्थदायिनी तथा।
तुषारकिरणाङ्गी च चतुर्धावासवप्रभा ॥72॥
तैलमार्गाभिसूता च तन्त्रसिद्धिफलप्रदा।
ताम्रपर्णा ताम्रकेशा ताम्रपात्रप्रिया तमा ॥73॥

तमोगुणप्रिया तोला तक्षकारिनिवारिणी ।
तोषयुक्ता तमायाची तमषोढेश्वरप्रिया ॥74॥
तुलना तुल्यरुचिरा तुल्यबुद्धिस्त्रिधामतिः ।
तक्षभक्षा तालसिद्धिस्त्रस्तस्था त्रस्तगामिनी ॥75॥
तलया तैलभा ताली तन्त्रगोपनतत्परा ।
तन्त्रमन्त्रप्रकाशा च त्रसरेणुस्वरूपिणी ॥76॥
त्रिंशदर्शप्रिया तुष्टा तुष्टिस्तुष्ट जनप्रिया ।
थाकारकूटदण्डीशाथदण्डीशप्रियाथवा ॥77॥
थकाराक्षररूढाङ्गी थान्तवर्गार्थकारिका ।
थान्ता थमीश्वरी थाका थकारबीजमालिनी ॥78॥
दक्षदामप्रिया दोषा दोषजालवनाश्रिता ।
दशादशनघोरा च देवी दासप्रिया दया ॥79॥
दैत्यहन्त्री परा दैत्या दैत्यानां मर्द्दिनी दिशा ।
दन्ता दान्तप्रिया दामा दामन्ता दीर्घकेशिका ॥80॥
दशना रक्तवर्णा च दरीगृहनिवासिनी ।
देवमाता दुर्लभा च दीर्घाङ्गी दासकन्यका ॥81॥
दशनश्रीदीर्घनेत्रा दीर्घनासा च दोषहा ।
दमयन्ती दलस्था च द्वेषहन्त्री दशास्थिरा ॥82॥
देशेषिका दिशिगता दशनास्त्रविनाशिनी ।
दारिद्र्यहा दरिद्रस्था दरिद्रधनदायिनी ॥83॥
दन्तुरा देशभाषा च देशस्था देशनायिका ।
द्वेषरूपा द्वेषहन्त्री द्वेषारिगणमोहिनी ॥84॥
दामोदरस्थाननादा दलानां वलदायिनी ।
दिग्दर्शनस्थानदर्शदर्शनप्रियवादिनी ॥85॥
दामोदरप्रिया दान्ता दामोदरकलेवरा ।
द्रविणी द्राविणी दाशा दक्षकन्या ढला दृढा ॥86॥
दृढासना दासशक्तिर्द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिनी ।
दधिप्रिया दधिस्था च दधिमङ्गलकारिणी ॥87॥
दर्पहा दर्पदा दर्पा दर्भपुण्यप्रिया दधिः ।
दर्भस्था द्रुपदसुता द्रौपदी द्रुपदप्रिया ॥88॥

धर्मचिन्ता धनाध्यक्षा धनेश्वरवरप्रदा ।
धनहा धनदा धन्वी धनुर्हस्ता धनुःप्रिया ॥89॥
धरणिर्वीर्य्यरूपा च धनस्था धनमोहिनी ।
धीरा धीरप्रियाधारा धराधरणतत्परा ॥90॥
धान्यदा धान्यबीजा च धर्माधर्मस्वरूपिणी ।
धाराधरस्था धन्या च धर्मपुञ्जनिवासिनी ॥91॥
धनाढ्यप्रियकन्या च धन्यलोकैश्च सेविता ।
धर्मार्थकाममोक्षाङ्गी धर्मार्थकाममोक्षदा ॥92॥
धराधरा धुरीणा च धवला धवलामुखी ।
धरा च धामरूपा च ध्रुवा ध्रौव्या ध्रुवप्रिया ॥93॥
धनेशी धारणाख्या च धर्मनिन्दाविनाशिनी ।
धमतेजोमयी धर्म्या धैर्याग्रगर्भमोहिनी ॥94॥
धारणा धौतवसना धत्तूरफलभोगिनी ।
नारायणी नरेन्द्रस्था नारायणकलेवरा ॥95॥
नरनारायणप्रीता धर्मनिन्दाविमोहिता ।
नित्या नापितकन्या च नयनस्था नरप्रिया ॥96॥
नाम्नी नामप्रिया नारा नारायणसुता नरा ।
नवीननायकप्रीता नव्या नवफलप्रिया ॥97॥
नवीनकुसुमप्रीता नवीनानां ध्वजानुता ।
नारी निम्नस्थिता निन्दा नन्दिनी नन्दकारिका ॥98॥
नवपुष्पमहाप्रीता नवपुष्पसुगन्धिका ।
नन्दनस्था नन्दकन्या नन्दमोक्षप्रदायिनी ॥99॥
नमिता नमभेदा च नाम्नार्तवनमोहिनी ।
नवबुद्धिप्रियानेका नाकस्था नागकन्यका ॥100॥
निन्दाहीना नवोल्लासा नाकस्थानप्रदायिनी ।
निम्बचक्षुःस्थिता निम्बा नानक्षेक्षनिवासिनी ॥101॥
नाश्यातीता नीलवर्णा नीलवर्णा सरस्वती ।
नभस्था नायकप्रीता नायकप्रियकामिनी ॥102॥
नैववर्णा निराहारा निरीहाणां रजःप्रिया ।
निम्ननाभिप्रभाकारा नरेन्द्रहस्तपूजिता ॥103॥

नलस्थिता नलप्रीता नलराजकुमारिका ।
परश्वरी परानन्दा परापरविभेदिका ॥104॥
परमा परचक्रस्था पार्वती पर्वतप्रिया ।
पारमेशी पर्व नानापुष्पमाल्यप्रिया परा ॥105॥
परा प्रिया प्रीतिदात्री प्रीता प्रथमकामिनी ।
प्रथमा प्रथमप्रीता पुष्पगन्धप्रिया परा ॥106॥
पैष्टीपानरता पीना पीनस्तनसुशोभना ।
परमानरता पुंसां पाशहस्ता पशुप्रिया ॥107॥
पललानन्दरसिका पलालधूमरूपिणी ।
पलाशपुष्पसङ्काशा पलाशपुष्पमालिनी ॥108॥
प्रेमभूता पद्ममुखी पद्मरागसुमानिनी ।
पद्ममाला पापहरा पतिप्रेमविलासिनी ॥109॥
पञ्चानमनोहारी पञ्चवक्त्रप्रकाशिनी ।
फलमूलाशना फाली फलदा फाल्गुनप्रिया ॥110॥
फलनाथप्रिया फल्वी फल्वकृन्या फलोन्मुखी ।
फेत्कारीतन्त्रमुख्या च फेत्कारगणपूजिता ॥111॥
फेरवी फेरवसुता फलोभोगोद्भवा फला ।
फलप्रिया फलासक्ता फाल्गुनानन्ददायिनी ॥112॥
फालभोगोत्तरा फेला फुल्लाम्भोजनिवासिनी ।
वासुदेवग्रहस्था च वासवी वीरपूजिता ॥113॥
विषभक्षा बुधसुधा ब्लुङ्कारी ब्लुवरप्रदा ।
बृही बृहस्पतिर्वाचा वाचस्पतिवरप्रदा ॥114॥
वेदाचारी वेद्यपरा वसुवक्त्रस्थिता विभा ।
बोधज्ञा वौषडाख्या च वंशीवदनपूजिता ॥115॥
वज्रकान्ता वक्रगतिर्बदरीवंशवर्द्धिनी ।
भारती भवरश्रीदा भवपत्नी भवात्मजा ॥116॥
भवानी भाविनी भीमा भिषक् भाष्यातुरिस्थिता ।
भूर्भूवःस्वःस्वरूपा च भूशार्ता भेकनादिनी ॥117॥
भीतिर्भङ्गप्रिया भङ्गा भङ्गहा भङ्गहारिणी ।
भर्ता भगवती भाग्या भगीरथनमस्कृता ॥118॥

भगमाला भूतनाथेश्वरी भार्गवपूजिता ।
भृगुवंशा भीतिहरा भूमिर्भुजगहारिणी ॥119॥
भालचन्द्रा भल्वबाला भवभूतिविभूतिदा ।
भवरस्था मत्तगतिर्मदमत्ता मदप्रिया ॥120॥
मदिराष्टादशभूजा मदिरामत्तगामिनी ।
मदिरासिद्धिदा मध्या मदान्तगतिसिद्धिदा ॥121॥
मीनभक्षा मीनरूपा मुद्रा मुद्गप्रिया गतिः ।
मूशला मुक्तिदा मूर्ता मूकीकरणतत्परा ॥122॥
मूषार्ता मृगतुष्णा च मेषभक्षणतत्परा ।
मैथुनानन्दसिद्धिश्च मैथुनानलसिद्धिदा ॥123॥
महालक्ष्मीर्भैरवी च महेन्द्रपीठनायिका ।
मनःस्था माधवी मुख्या महादेवमनोरमा ॥124॥
यशोदा याचना यास्या यमराजप्रियायमा ।
यशोराशिविभूषाङ्गी यतिप्रेमकलावती ॥125॥
रमणी रामपत्नी च रिपुहा रीतिमध्यगा ।
रुद्राणी रूपदा रूपा रूपसुन्दरधारिणी ॥126॥
रेतःस्था रेतसः प्रीता रेतःस्थाननिवासिनी ।
रैन्द्रा देवतासुतारेदा रिपुवर्गान्तकप्रिया ॥127॥
रोमावलीन्द्रजननी रोमकूपजगत्पतिः ।
रौप्यवर्णा रौद्रवर्णा रौप्यालङ्कारभूषणा ॥128॥
रङ्गणा रङ्गरागस्था रणवह्निकुलेश्वरी ।
लक्ष्मीर्लाङ्गललीला च लाङ्गली कुलकामिनी ॥129॥
लिपिरूपा लीढपादा लतातन्तुस्वरूपिणी ।
लिम्पती लेलिहा लोला लोमराप्रियसिद्धिदा ॥130॥
लौकिकी लोकसिद्धिर्हि लङ्कानाथकुमारिका ।
लक्षण लक्ष्मीहीना च लप्रिया लार्णमध्यगा ॥131॥
विवसा वसनावेशा विस्वत्कुलकन्यका ।
वातस्था वातरूपा च वेत्रमध्यनिवासिनी ॥132॥
श्मशानभूमिमध्यस्था श्मशानसाधनप्रिया ।
शवस्था परसिद्धार्था शववक्षसि शोभिता ॥133॥

शरणागतपाल्या च शिवकन्या शिवप्रिया ।
षट्चक्र भेदिनी षोढान्यासजालदृढानना ॥134॥
सन्ध्या सरस्वती सुन्द्या सूर्यगा शारदा सती ।
हरिप्रिया हरा हाला लावण्यस्था क्षमा क्षुधा ॥135॥
क्षेत्रज्ञा सिद्धिदात्री च अम्बिका अपराजिता ।
आद्या इन्द्रप्रिया ईशा उमा ऊढा ऋतुप्रिया ॥136॥
सुतुण्डा स्वरबीजान्ता हरिवेशादिसिद्धिदा ।
एकादशीव्रतस्था च ह्यैन्द्री ह्यौषधिसिद्धिदा ॥137॥
औपकारी अंशरूपा अस्त्रबीजप्रकाशिनी ।
इत्येतत्कामुकीनाथ कुमारीणांसुमङ्गलम् ॥138॥
त्रैलोक्यफलदं नित्यमष्टोत्तरसहस्त्रकम् ।
महास्तोत्रं धर्मसारं धनधान्य सुतप्रदम् ॥139॥
सर्वविद्याफलोल्लासं भक्तिमान् यः पठेत्सुधीः ।
स सर्वदा दिवा रात्रौ सम्भवेन्मुक्तिमार्गगः ॥140॥
सर्वत्र जयमाप्नोति वीराणां वल्लभो भवेत् ।
सर्वदेववशं याति वशीभूताश्च मानवाः ॥141॥
ब्रह्माण्डे ये च शंसन्ति ते तुष्टा नात्र संशयः ।
ये वसन्ति च भूलोके देवतुल्यपराक्रमाः ॥142॥
ते सर्वे भृत्यतुल्याश्च सत्यंसत्यं कुलेश्वर ।
अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति होमेन यजनेन च ॥143॥
जाप्येन कवचाद्येन महास्तोत्रार्थपाठतः ।
विना यज्ञैर्विना दानैर्विना जप्यैर्लभेत्फलम् ॥144॥
यः पठेत्स्तोत्रकं नाम चाष्टोत्तरसहस्त्रकम् ।
तस्य शान्तिर्भवेत्क्षिप्रं कन्यास्तोत्रं पठेत्ततः ॥145॥
वारत्रयप्रपाठेन राजानं वशमानयेत् ।
एकवारं पठेन्मन्त्री धर्मकामार्थमोक्षभाक् ॥146॥
त्रिदिनं प्रपठेद्विद्वान्यदि पुत्रं समिच्छति ।
वारत्रयक्रमेणैव वारैकक्रमतोऽपि वा ॥147॥
पठित्वा धनरत्नानामधिपः सर्ववित्तमः ।
त्रिजगन्मोहयेन्मन्त्री वत्सरार्द्धप्रपाठतः ॥148॥

वत्सरं व्याप्य यदि वा भक्तिभावेन यः पठेत् ।
चिरजीवी खेचरत्वं प्राप्य योगी भवेन्नरः ॥149॥
महाहवस्थितं वर्णं पश्यति स्थिरमानसः ।
महिलामण्डले स्थित्वा शक्तियुक्तः पठेत्सुधीः ॥150॥
स भवेत्साधकश्रेष्ठः क्षीरी कल्पद्रुमो भवेत् ।
सर्वदा यः पठेन्नाथ भावोद्गतकलेवरः ॥151॥
दर्शनात्स्तम्भनं कर्तुं क्षमो भवति साधकः ।
जलादिस्तम्भने शक्तो वह्निस्तम्भादिसिद्धिभाक् ॥152॥
वायुवेगी महावाग्मी वेदज्ञो भवति ध्रुवम् ।
कविनाथो महाविद्यो बन्धकः पण्डितो भवेत् ॥153॥
सर्वदेशाधिपो भूत्वा देवपुत्रः स्वयं भवेत् ।
कान्तिश्रियं यशो बुद्धिं प्राप्नोति बलवान् पतिः ॥154॥
अष्टसिद्धियुतो नाथ यः पठेदर्थसिद्धये ।
उटजेऽरण्यमध्ये च पर्वते घोरकानने ॥155॥
वने वा प्रेततभूमौ च शरोपरि महारणे ।
ग्रामभङ्गे गृहे वाऽपि शून्यागारे नदीतटे ॥156॥
गङ्गागर्भे महापीठे योनिपीठे गुरोर्गृहे ।
धर्मक्षेत्रे देवगृहे कन्यागारे कुलालये ॥157॥
प्रान्तरे गोष्ठमध्ये वा राजादिभयहीनके ।
निर्भयादिस्वदेशेषु शिवलिङ्गालयेऽथवा ॥158॥
भूगर्ते चैकलिङ्गे वा ग्राम्यदेशे शिवाकुले ।
अश्वत्थमूले बिल्वे वा कुलवृक्षसमीपतः ॥159॥
अन्येषु सिद्धिदेशेषु कुलरूपश्च साधकः ।
दिव्यो वा वीरभावस्थो पृष्ट्वा कन्याः कुलाकुलौ ॥160॥
कुलद्रव्यैश्च विविधैः सिद्धिद्रव्यैश्च साधकः ।
मांसीरसेन जुहुयान्मदाक्तकरसेन च ॥161॥
हुतशेषं कुलद्रव्यं ताभ्यो दद्यात्सुसिद्धये ।
तासामुच्छिष्टमानीय जुहुयाद्वक्त्रपङ्कजे ॥162॥
घृणालाज्जाविनिर्मुक्तः साधकः स्थिरमानसः ।
पिबेन्मांसरसं मन्त्रीं सदानन्दो महाबली ॥163॥

महामांसाष्टकं ताभ्यो मदिराकुम्भपूरितम्।
तारमायारमावह्निजायामन्त्रं पठनत्सुधीः ॥164॥
नैवेद्यविधिदानेन पठित्वा स्तोत्रमङ्गलम्।
स्वयं प्रसादं भुक्त्वा हि सर्वविद्याधिपो भवेत् ॥165॥
सूकरस्योष्ठमांसेन पीनमीनेन मुद्रया।
महाशवघटेनापि दत्त्वा पठति यो नरः ॥166॥
ध्रुव स सर्वगामी स्याद्विना होमेन पूजया।
रुद्ररूपी भवेन्नित्यं महाकालात्मको भवेत् ॥167॥
सर्वपुण्यफलं नाथ कुलात्प्राप्नोति साधकः।
क्षीराब्धि रत्नकोशेशो विपद्गामी च योगिराट् ॥168॥
भक्त्या नाथ दयासिन्धुर्निष्कामत्वं लभेद् ध्रुवम्।
महाशत्रुपातेन च महाशत्रुभये तथा ॥169॥
वारैकपाठमात्रेण शत्रूणां वधमानयेत्।
शत्रून् संहरते क्षिप्रमन्धकारं यथा रविः ॥170॥
उच्चाटने मारणे च भवेद् घोरतरे नये।
पठनाद्धारणान्मर्त्यो देवा वा राक्षसादयः ॥171॥
प्राप्नुवन्त्यञ्जसा शान्ति कुमारीनामपाठतः।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामकरे तथा ॥172॥
धृत्वा पुत्रादिसम्पत्तिं लभते नात्र संशयः।
न पूजा न जपः स्नानं पुरश्चर्या विधिश्च न ॥173॥
अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति सहस्रनामपाठतः।
सर्वयज्ञफलं नाथ प्राप्नोति साधकः क्षणात् ॥174॥
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं योनिमुद्रास्वरूपकम्।
कोटिवर्षशतेनापि फलं वक्तुं न शक्यते ॥175॥
ममाज्ञया मोक्षमुपैति साधको गजान्तकं नाथ सहस्रनाम।
पठेन्मनुष्यो यदि भक्तिभावतस्तदादि सर्वत्र फलोदयं लभेत् ॥176॥

जो भक्तिमान् सुधी साधक समस्त विद्याओं का फल देने वाले, समस्त धर्मों के सार, धन, धान्य और पुत्रों के दाता, तीनों लोकों के फल को देने वाले, अष्टोत्तर सहस्रनाम कुमारीमहास्तोत्र का नित्य पाठ करता है वह दिन-रात सभी समयों में मुक्तिमार्ग का पथिक हो जाता है। सर्वत्र जय को प्राप्त करता है तथा

वीरों का प्रिय हो जाता है । समस्त देवों के वश में हो जाता है और सभी मनुष्य उसके वश में हो जाते हैं । हे कुलेश्वर ! ब्राह्माण्ड में जो शासन करते हैं वे उससे सन्तुष्ट रहते हैं । जो भूलोक में देवों के समान पराक्रम वाले रहते हैं, वे सब उसके दास तुल्य हो जाते हैं । साधक कवचादि महास्तोत्र के जप, पाठ, होम और यज्ञ से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त करता है । इसके पाठ से मनुष्य विना यज्ञ, दान और जप के अकस्मात सिद्धि को प्राप्त करता है । जो अष्टोत्तर सहस्रनाम स्तोत्र को पढ़ता है उसे शीघ्र शान्ति प्राप्त होती है । इसके बाद उसे कन्यास्तोत्र पढ़ना चाहिये । तीन बार के पाठ से साधक राजा को वश में ला सकता है । एक बार पढ़ने से साधक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पाने वाला हो जाता है । विद्वान् साधक यदि पुत्र चाहता है तो उसे तीन दिन तक पाठ करना चाहिए । यह पाठ वारत्रय के क्रम से या वारैकक्रम से हो सकता है । सब कुछ जानने वाला साधक इस स्तोत्र का पाठ करके धन-रत्नों का स्वामी हो जाता है । छः महीने के पाठ से साधक तीनों लोकों को मोहित कर लेता है । जो भक्तिभाव के साथ एक वर्ष तक इसका पाठ करता है वह चिरंजीवी योगी होकर आकाश में उड़ने वाला हो जाता है । स्थिरचित्त वाला साधक महायुद्ध के वर्ण को देखता है । महिलाओं के बीच बैट कर सुधी साधक शक्तियुक्त होकर यदि इस स्तोत्र का पाठ करे तो वह क्षीरी कल्पद्रुम के समान हो जाता है । हे नाथ ! जो भावनापूर्वक सदा इसका पाठ करता है वह साधक दर्शनमात्र से स्तम्भन करने में समर्थ होता है । जलादि के स्तम्भन में वह समर्थ होता है और अग्नि के स्तम्भन की सिद्धि भी उसे प्राप्त हो जाती है । वह वाग्मी, वायु के समान शक्तिशाली तथा वेदज्ञ निश्चित रूप से हो जाता है । जो साधक इसे अपने अङ्ग में बाँध लेता है वह कवियों का स्वामी, महाविद्वान् और पण्डित हो जाता है । वह सम्पूर्ण देशों का स्वामी होकर स्वयं देवपुत्र हो जाता है । वह बलवानों का स्वामी होकर कान्ति, श्री, यश तथा बुद्धि को प्राप्त करता है । हे नाथ ! जो धन की सिद्धि के लिए इसका पाठ करता है, वह आठों सिद्धियों से युक्त हो जाता है । कुटी में, वन में, पर्वत में, घोर जंगल में, वन में, प्रेतभूमि में, युद्धभूमि में, बाणों पर, उजड़े गाँव या घर में, सूने घर में या नदी के तट पर, गङ्गा के गर्भ में, महापीठ में, योनिपीठ में या गुरु के घर में, धर्मक्षेत्र में, देवगृह में, कन्यागार में, कुलालय में, सुनसान मार्ग में, गोशाला में, राजादि के भय से रहित स्थान

में, भयरहित अपने देश में, शिवालय में, भूगर्त में या एकलिङ्ग ग्राम में, अथवा शृंगालों से व्याप्त ग्राम्य देश में, अश्वत्थ वृक्ष के नीचे, बेल के नीचे या कुल वृक्ष के नीचे तथा अन्य सिद्धि-देशों में कुलरूप दिव्य या वीर भाव में स्थित साधक को कुल-अकुल तथा कन्याओं से अनुज्ञा लेकर कुलद्रव्यों तथा अनेक प्रकार के सिद्धिद्रव्यों के साथ जटामांसी के रस से या मदात्तक के रस से होम करना चाहिए। सिद्धि के लिए हवन का शेष कुलद्रव्य कन्याओं को देना चाहिए। उनका जूठा लाकर अपने मुख में हवन करना चाहिये। साधक घृणा और लज्जा से रहित, स्थिरचित्त होकर आनन्दित और महाबली होकर मांसरस पान करे। तार, माया, रमा और वह्निजाया के मन्त्रबीजों को पढ़ता हुआ सुधी साधक नैवेद्य-विधिदान से स्तोत्रमङ्गल को पढ़कर उन कन्याओं की मदिरा से भरे घड़े सहित महामांसाष्टक दे। तत्पश्चात् स्वयं प्रसाद खाकर साधक समस्त विद्याओं का स्वामी हो जाता है। सूअर के थूथुन का मांस, मोटी मछली का मांस, मुद्रा तथा महाशवघट भी देकर जो इसका पाठ करता है वह निश्चित रूप से होम और पूजा के बिना सर्वत्र कान्तिवाला हो जाता है। वह रुद्ररूप महाकाल के समान हो जाता है। हे नाथ ! साधक कुल से सब पुण्यफल प्राप्त कर लेता है। हे नाथ ! भक्ति से साधक क्षीराब्धि के रत्नों का स्वामी, आकाशगामी, योगिराज तथा दया का सागर होकर निश्चित रूप से निष्कामत्व को प्राप्त करता है। महाशत्रु-पातन में तथा महाशत्रुभय में एक बार पाठ से ही शत्रुओं का बध कर देता है। वह शत्रुओं का शीघ्र ही उसी प्रकार संहार कर देता है जिस प्रकार सूर्य अन्धकार को दूर कर देता है। उच्चाटन, मारण तथा अत्यन्त कठिन व्यवहार में, इसके पाठ या इसके धारण करने से मनुष्य, देव या राक्षस आदि शीघ्र ही शान्ति प्राप्त करते हैं। पुरुष दाहिने हाथ में तथा स्त्री बायें हाथ में बाँधकर पुत्रादि सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। इसमें न तो पूजा, न जप, न स्नान, न विधिपूर्वक पुरश्चरण करने की आवश्यकता पड़ती है बल्कि कुमारी सहस्रनाम के पाठ से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त होती है। हे नाथ ! समस्त यज्ञों का फल साधक क्षण में प्राप्त करता है। मन्त्र का अर्थ, मन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा, योनिमुद्रा का स्वरूप, अरबों वर्षों में भी कहना सम्भव नहीं है। मेरी आज्ञा से साधक मोक्ष को प्राप्त करता है। हे नाथ ! जो मनुष्य इस सिंहरूपी कुमारी सहस्रनाम का पाठ भक्तिभाव से करता है वह सर्वत्र फल की सिद्धि प्राप्त करता है।

मोक्षं सत्फलभोगिनां स्तववरं सारं परानन्ददं ये नित्यं हि मुदा पठन्ति सफलं सार्थं च चिन्ताकुलाः। तेषां वै प्रभवेद्धि कीर्तिकमला श्रीरामतुल्यो जयी कंदर्पायुततुल्य रूपगुणवान् क्रोधे तु रुद्रोपमः ॥177॥

सत्कर्मों का फल भोगने वालों के लिए मोक्षदायक, परमानन्द और साररूप इस श्रेष्ठ स्तोत्र को जो चिन्ताकुल मनुष्य अर्थसहित प्रसन्नता से नित्य पढ़ते हैं, उनकी कीर्ति और लक्ष्मी बढ़ती है, वे श्रीराम के समान जयी और अयुत कन्दर्प तुल्य रूप-गुण वाले होकर क्रोध में रुद्र के समान हो जाते हैं।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने
कुमारसहस्त्रनामस्तोत्रं समाप्तम्

कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्र

श्रृणु नाथ प्रवक्ष्यामि कुमारीतर्पणादिकम्।
यासां तर्पणमात्रेण कुलसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥1॥

हे नाथ ! आप सुनें, मैं आपको कुमारी तर्पणादिक बताऊँगी जिनके तर्पणमात्र से निश्चित रूप से कुलसिद्धि होती है।

कुलबालां मूलपद्मस्थिताङ्कामविहारिणीम्।
शतधा मूलमन्त्रेण तर्पयामि सुतुष्टये ॥2॥
मूलपङ्कजयोगाङ्गीं कुमारी श्रीसरस्वतीम्।
तर्पयामि कुलद्रव्यैस्तव संतोषहेतवे ॥3॥
चारुमूलाधारपद्मे षड्दलान्तः प्रकाशिनीम्।
श्रीबीजेन तर्पयामि भोगमोक्षाय केवलम् ॥4॥
स्वधिष्ठानकुलोल्लासविष्णुसंकेतगामिनीम्।
कालिकां निजबीजेन तर्पयामि कुलामृतैः ॥5॥
स्वाधिष्ठानाख्यपद्मस्थां महातेजोमयीं शिवाम्।
सूर्याणां शीर्षमधुना तर्पयामि कुलेश्वरीम् ॥6॥
मणिपूराब्जमध्येषु मनोहरकलेवरम्।
उमादेवीं तर्पयामि मायाबीजेन पार्वतीम् ॥7॥
मणिपूरांभोजमध्ये त्रैलोक्यपरिपूजिताम्।
मानिनीं मलचित्तस्य सद्बुद्ध्यै तर्पयाम्यहम् ॥8॥

मणिपूरस्थितां रौद्रीं परमानन्दवर्द्धिनीम् ।
आकाशगामिनीं देवीं कुब्जिकां तर्पयाम्यहम् ॥9॥
तर्पयामि महादेवीं मन्त्रसाधनतत्पराम् ।
योगिनीं कालसन्दर्भा तर्पयामि कुलाननाम् ॥10॥
शक्तिमन्त्रप्रदां रौद्रीं लोलजिह्वासमाकुलाम् ।
अपराजितां महादेवीं तर्पयामि कुलेश्वरीम् ॥11॥
महाकौलप्रियां सिद्धां रुद्रलोकसुखप्रदाम् ।
रुद्राणीं रुद्रकिरणां तर्पयामि मधुप्रियाम् ॥12॥
षोडश स्वरसंसिद्धिं महारौरवनाशिनीम् ।
महामद्यपानचित्तां भैरवीं प्रणमाम्यहम् ॥13॥
त्रैलोक्यवरदां देवीं श्रीबीजमालया वृताम् ।
महालक्ष्मीं भवैश्वर्यां तर्पयाम्यहमम्बिके ॥14॥
लोकानां हितकर्त्री च हिताहितजनप्रियाम् ।
तर्पयामि रमाबीजपीठाद्यां पीठनायिकाम् ॥15॥
जयन्ती वेदवेदाङ्गमातरं सूर्यमातरम् ।
तर्पयामी सुधाभिश्च क्षेत्रज्ञां मायया वृताम् ॥16॥
तर्पयामि कुलानन्द पारगां षरमाननाम् ।
तर्पयाम्यम्बिकां देवीं मायालक्ष्मीं हृदि स्थिताम् ॥17॥
सर्वासां चरणद्वयाम्बुजतलं चैतन्य विद्यावतां ।
सौख्यार्थं शुभषोडशस्वरयुतां श्रीषोडशीं मङ्गलाम् ।
आनन्दार्णवपद्मरागखचिते सिंहासने शोभितां ।
त्वां नित्यं परितर्पयामि सकले श्वेताब्जमध्यासने ॥18॥
ये नित्यं सुप्रतिष्ठितं च सकलस्तोत्राङ्गसंतर्पणं
विद्यादाननिदानमोक्षपरमं मायामयं यान्ति ते ।
नो सन्ति क्षिति मण्डलेश्वरि गणास्सर्वे त्रिपत्कारका
राजानं वशयन्ति योगसकलं नित्या भवन्ति क्षणात् ॥19॥

जो साधक नित्य सुप्रतिष्ठित समस्त स्तोत्राङ्गसन्तर्पक, विद्यादान के कारण, दूसरे मायामय मोक्षस्वरूप इस तर्पण स्तोत्र को प्राप्त करते हैं उनके लिए भूमण्डलेश्वरी महाकाली के गण विपत्ति या हानि पहुँचाने वाले नहीं होते । वे समस्त साधनों से सम्पन्न राजाओं को भी क्षण में वश में कर लेते हैं ।

तर्पणात्मकमोक्षाख्यं पठते यदि मानुषः ।
अष्टैश्वर्ययुतो भूत्वा वत्सरान्मां प्रपश्यति ॥20॥
महायोगी भवेन्नाथ मासादभ्यासतः प्रभो ।
त्रैलोक्यं क्षोभयेत्क्षिप्रं वाञ्छाफलमवाप्नुयात् ॥21॥
यः पठेदेकभावेन स तर्पणफलं लभेत् ।
पूजाफलमवाप्नोति कुमारीस्तोत्रपाठतः ॥22॥
यो न कुर्यात्कुमार्यर्चा स्तोत्रं च नित्यमङ्गलम् ।
स भवेत्पशुकल्पोऽत्र मृत्युस्तस्य पदेपदे ॥23॥

जो मनुष्य तर्पणात्मक मोक्षाख्य इस स्तोत्र को पढ़ता है वह आठों ऐश्वर्य से युक्त होकर एक वर्ष के बाद मुझे देखता है । हे नाथ ! एक मास के बाद वह महायोगी हो जाता है । वह शीघ्र तीनों लोकों को कँपा देता है तथा इच्छानुसार फल प्राप्त करता है । जो एक भाव से इस तर्पणस्तोत्र का पाठ करता है वह तर्पण का फल प्राप्त करता है । वह कुमारी स्तोत्र के पाठ से पूजा का फल प्राप्त करता है । जो कुमारी की पूजा नहीं करता, स्तोत्र और नित्यमङ्गल पाठ नहीं करता वह इस संसार में पशु के समान होता है तथा उसे पद-पद पर मृत्यु का सामना करना पड़ता है ।

इति रुद्रयामले उत्तरखण्डे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्यपचर्याविन्यासे सिद्धमन्त्रप्रकरणे दिव्यभावनिर्णये भैरवीसम्वादे कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं समाप्तम्

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

1. मन्त्र महोदधि (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 500/-
2. हिन्दी मन्त्र महार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)
   मूल्य : देवी खण्ड 600/- मूल्य : देवता खण्ड 550/- मूल्य : मिश्र खण्ड 250/-
3. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 300/-
4. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः)
   पण्डित सरयू प्रसादेन संगृहीतः मूल्य : 150/-
5. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 75/-
6. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 100/-
7. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 200/-
8. डामर तंत्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 100/-
9. डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
10. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
11. कुमारीतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 100/-
12. अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) मूल्य : 100/-
13. भूत डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
14. शाक्तानन्दतरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 200/-
15. गणेशसहस्रनाम स्त्रोत्रम् मूल्य : 50/-
16. सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) मूल्य : 50/-
17. श्यामारहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 250/-
18. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) तीन खण्डों में
    पूर्वार्द्ध मूल्य : 400/- उत्तरार्द्ध प्रथम मूल्य : 300/- उत्तरार्द्ध द्वितीय मूल्य : 300/-
19. श्री नीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 150/-
20. मन्त्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 100/-
21. भूत डामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र मूल्य : 100/-
22. योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 75/-
23. शिव स्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य : 75/-
24. वृहत् तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) दो खण्डों में प्रथम खण्ड मूल्य : 500/-
    द्वितीय खण्ड मूल्य : 600/-
25. बङ्गसेन संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 750/-
26. नारद पंचरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 400/-
27. कङ्कालमालिनी तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 100/-
28. कुब्जिका तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य 100/-
29. मुण्डमाला तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 200/-
30. Mantra Mahodhadhi (Text in Nagari Script & Text in Roman with English Translation) Price : Vol. I Rs. 1000/- Price : Vol. II 1000/-
31. Encyclopedia of Yoga Rs. 600/-
32. Encyclopedia of Indian Erotices Rs. 250/-
33. Dictionaries of Trantrasastra Rs. 150/-

हमारे प्रमुख प्रकाशन

1. मन्त्रमहोदधिः (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 500/-
2. मन्त्रमहोदधि (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) — भाग -1 मूल्य 1000/- भाग -2 मूल्य 1000/-
3. हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — देवी [illegible]00/-, देवता 550/-, मिश्र मूल्य 250/-
4. श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) — पूर्वार्द्धम् 400/- उत्तरा० प्रथम 300/- उत्तरा० द्वितीय मूल्य 300/-
5. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) — मूल्य 300/-
6. नारदपञ्चरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 400/-
7. मंत्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
8. श्यामा रहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 250/-
9. बृहत तन्त्रसार (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) [illegible] कृत — भाग-1 [illegible] भाग-2 600/-
10. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रह) — मूल्य 150/-
11. श्रीनीलतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 150/-
12. भूतडामर महातन्त्रम् (पाताल खण्ड) मूलमात्र — मूल्य 100/-
13. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) — मूल्य 75/-
14. शाक्तानंद तरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 200/-
15. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) — मूल्य 100/-
16. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) — मूल्य 200/-
17. डामर तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) — मूल्य 100/-
18. डामर मन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 75/-
19. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 75/-
20. कामरत्नतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 200/-
21. अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) — मूल्य 100/-
22. वङ्गसेन संहिता (मूल हिन्दी अनुवाद एवं परिशिष्ट सहित) — मूल्य 750/-
23. हारीत संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 300/-
24. भूतडामर तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 75/-
25. योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 75/-
26. कुब्जिका तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
27. मुण्डमाला तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 200/-
28. धनदारतिप्रिया तन्त्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 10/-
29. कुमारी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
30. गुप्तसाधन तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
31. माया तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
32. कङ्काल मालिनी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 100/-
33. Enyclopedia of Yoga — Rs. 750/-
34. Enyclopedia of Indian Erotices — Rs. 250/-
35. Dictionaries of Tantrasastra — Rs. 150/-
36. गणेशसहस्रनाम स्तोत्रम् — मूल्य 50/-
37. सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) — मूल्य 50/-
38. आगम तत्वविलास (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — शीघ्र
39. सौभाग्यलक्ष्मी तन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) — मूल्य 150/-

40. सम्पूर्ण स्कन्द पुराण (हिन्दी में प्रथम बार प्रकाशित होने जा रहा है।) (मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित) — शीघ्र